Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113068

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1970.
57
1913

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मुखपत्रिका

96

सम्पादक

गिरिजाकुमार घोष

भाग १ } आश्विन, संवत् १९७० { अङ्क १

विषयसूची

पृष्ठ

१—सम्पादकीय विनय १

२—सभा समितियों पर प्राचीन ऋषियों की उक्ति ३

३—हिन्दी साहित्य में चित्रकला सिखाने की पुस्तकें ६

४—प्रयाग का विज्ञान-परिषद् और उसकी कार्य्य-प्रणाली ९

५—विविध—

नागरी लिपि में परिवर्तन की आवश्यकता—प्रारम्भिक शिक्षा—अँगरेज़ी में भिन्न भिन्न विषयों के पत्र—हिन्दी के सामयिक साहित्य में संयुक्त शक्ति की आवश्यकता—बंगाल में मुसलमानों का मातृभाषा बंगला से प्रेम १२

६—पुस्तक-प्राप्ति-स्वीकार १६

७—सम्मेलन की रिपोर्ट १९

वार्षिक मूल्य १)] १९१३ ई० [एक संख्या =)

साहित्य सम्मेलन कार्य्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों और कार्य्यों को सुलभ करने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालत के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसीके लिए उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मुखपत्रिका

सम्पादक

गिरिजाकुमार घोष

भाग १ } कार्तिक और मार्गशीर्ष संवत् १९७० { अङ्क २-३

विषयसूची

पृष्ठ

१—हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा देने के उपाय ३२
२—हिन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति के उपाय ३४
३—हिन्दी भाषियों के लिये कुछ सोचने का मसाला ३६
४—ग्राम्य कविता ३८
५—गङ्गाभरण ४०
६—हिन्दी भाषा में वैद्यक का एक ग्रन्थ... ... ... ४२
७—हिन्दी परीक्षा की नियमावली ४६
८—भागलपुर में हिन्दी-साहित्य प्रदर्शनी ५१
९—संयुक्त प्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा ५५
१०—पुस्तक प्राप्तिस्वीकार ६२
११—सम्मेलन की स्थायी समिति का अधिवेशन ६५
१२—विविध ७१

वार्षिक मूल्य १)] १९१३ ई० [एक संख्या =)

साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर प्रचार करना और देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य प्रेमियों से इसीके लिए उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113068

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की

मुखपत्रिका

113068

सम्पादक-गिरिजाकुमार घोष

भाग १ } पौष और माघ संवत् १९७० { अङ्क ४-५

विषय सूची

	पृष्ठ
१—भागलपुर में हि० सा० सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन ...	७७
२—हिन्दी संसार	११४

वार्षिक मूल्य १)] १९१४ ई० [एक संख्या =)

साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करने तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसीके लिए उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की

मुखपत्रिका

भाग १ } फाल्गुण संवत् १९७० { अङ्क ६

विषय सूची

	पृष्ठ
१—सम्मेलन का वार्षिक वृत्तान्त (१९१२-१३) ...	११७
२—चतुर्थ सम्मेलन (भागलपुर) में नियत की हुई वर्ण-विचार समिति की रिपोर्ट।	१३५
३—हिन्दी भाषा में बिदेशी शब्द	१३६
४—प्रचार का कार्य।	१४२
५—हिन्दी संसार	१४७
६—प्रेषित पत्र।	१४७
७—पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन-सूचना ...	१५८

वार्षिक मूल्य १)] १९१४ ई० [एक संख्या =)

साहित्य-सम्मेलन कार्य्यालय से बा० नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों और कार्यों के सुलभ करने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन और उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जनसमूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालतों के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्रसंपादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्नकरना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिए हिन्दी की उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना, और साहित्य-प्रेमियों से इसीके लिए उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग १ } आश्विन, शुक्ला १०मी, संवत् १९७० { अङ्क १

सम्पादकीय विनय

सब विघ्नों के नाश करनेवाले पार्वतीनन्दन जी को प्रणाम करके मैं अपना कार्य आरम्भ करता हूं।

आज विजयादशमी की महाशुभ तिथि है। दशों दिशाओं में श्री रामचन्द्र जी के विजयोत्सव का हर्षनाद गूंज रहा है। ऐसे आनन्दमय अवसर पर मुझे हिन्दी साहित्य के सेवक सज्जनों के चरण-प्रान्त में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। सो आइए, हिन्दी भाषा के विद्वानो, पत्र पत्रिकाओं के सम्पादकगण, लेखक और पाठक-सम्प्रदाय, तथा हिन्दी साहित्य के साधारण असाधारण सभी प्रकार के रसिको, मेरा सादर प्रणाम स्वीकार कीजिए। आज के दिन की मैत्री अटूट होती है। उससे मंगल फल की प्राप्ति होती है। सब सज्जनवर्ग मिलकर आशीर्वाद दीजिए, हिन्दी भाषा के इस तुच्छ सेवक की महातुच्छ परन्तु हृदय के अति गहरे स्तर में सन्निविष्ट निर्झर से टपकती हुई भक्तिधारा हिन्दी भाषा के ज्योतिमान सिंहासन पर बैठी हुई भगवती सरस्वती के चरणारविन्द धोने के लिए उपयुक्त हो।

जिस इच्छामय के इच्छारूपी चक्र के आठो पहर घूमते रहने से दिन भर के अन्त में सूर्यदेव की रंगबिरंगी किरणों से रंगा हुआ जगत् निशाकाल के गहरे अँधेरे में डूब जाता है; फिर उस घन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोर अन्धकार के हटते न हटते उदयाचल की चोटी पर बैठे हुए परमज्योति परमात्मा की ज्योति-स्वरूप सूर्य महाराज की चहुं ओर फैलाई हुई कोमल और लाल लाल किरणों की माला धीरे धीरे सोते हुए संसार को जगा देती है ; उसी इच्छामय की इच्छा से साहित्य-संसार में विविध-ज्ञान-मंडित विद्वज्जनों से सुशोभित हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-वाटिका की हरियाली देख पड़ी है और उसी इच्छामय की इच्छा से इस वाटिका में घास कांटा छीलने के लिए मेरे समान क्षीण-शरीर कलारहित अनाड़ी माली के हाथ में सम्मेलन-पत्रिका रूपी खुर्पी का सौंपा जाना भी जान पड़ता है।

जब मैं देखता हूं कि उसी इच्छामय की इच्छा से अब ऐसा शुभ समय आ पहुंचा है कि साहित्यसुधा का स्वाद पाकर प्यासे रसिकजनों की सुधापिपासा शान्त ही नहीं होती, उत्तरोत्तर साहित्य-सागर मन्थन करके सुधा-धारा बहाने की चेष्टा हो रही है, तब मेरा हृदय भी उत्साह से, उमंग से, प्रेम से फूल कर विह्वल हो जाता है। शरीर में शक्ति नहीं, मस्तिष्क में बल नहीं, लेखनी में प्रवाह नहीं, तब भी पीयूष-प्रेमियों के उत्साह से उत्साहित होकर मैं भी अपनी पुष्पाञ्जली लेकर विद्वन्मडली के सम्मुख उपस्थित होता हूं। मेरा यह प्रेमोपहार स्वीकृत हो तो मैं अपने को बड़भागी समझूंगा।

अभी आरम्भ में इस पत्रिका के सम्पादन तथा सञ्चालन में बड़ी बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, बहुत सी त्रुटियां देख पड़ेंगी; इससे, निस्सन्देह इसका कार्य अभी सर्वरुचिकर नहीं हो सकेगा। परन्तु विद्वन्मण्डली की सहानुभूति और सहायता बनी रही, तो मेरी सेवा की न्यूनता धीरे धीरे पूर्ण हो ही जायगी।

मेरे ऊपर इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व लाद दिया गया है। परन्तु यह सम्भव नहीं कि मैं अपनी राममड़ैया में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेला बैठा हुआ इस भारी दायित्व को पूरा कर सकूं। इस पत्रिका से सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाना, इसे लोकप्रिय बना कर इसके प्रचार में सहायता करना अकेले मेरे हाथ में नहीं; यह कार्य हिन्दी भाषा के प्रेमीमात्र का है। जब तक सब ओर से शक्ति संचार नहीं होगा, यह पत्रिका अशक्त रह जावेगी। दानवदल के नाश करने के लिए देवगणों ने मिलकर अपनी अपनी शक्ति प्रदान करके आद्याशक्ति की रचना की थी। उसी प्रकार सम्मेलन-पत्रिका को भी अपने विचारों का केन्द्र मानकर हिन्दी भाषा की उन्नति और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देशों की पूर्त्ति करना प्रत्येक हिन्दी रसिक का धर्म है।

सभा समितियों पर प्राचीन ऋषियों की उक्ति

दिनाजपुर, बंगाल में, कुछ दिन हुए उत्तर-वङ्ग-साहित्य-सम्मिलनी सभा का अधिवेशन हो गया है। उस सभा के सभापति माननीय श्रीयुत आशुतोष चौधुरी, एम. ए., महाशय ने जो अभिभाषण पढ़ा था, हिन्दी-साहित्य के सेवकों को भी उससे बहुत कुछ लाभ हो सकता है। इस लिए उस अभिभाषण का कुछ थोड़ा सा अंश यहां पर प्रकाशित किया जाता है।

माननीय और मनस्वी चौधुरी महाशय ने अति गम्भीरता से वैदिक ऋषिगणों की गायी हुई स्तोत्रावली का पाठ करके अपना अभिभाषण आरम्भ किया था। आपने कहा—"प्राचीन ऋषियों ने सभासमिति को प्रजापति की दुहिता के नाम से आख्यात किया है। यह सभा उनके स्तुतिछन्द के सम्पूर्ण योग्य है। यद्यपि मैं उनके उच्चारण करने की योग्यता नहीं रखता, परन्तु आज परिषद् की कृपा से सभापति के पद पर नियत किया गया हूं, इसीसे उस द्युतिमती भाषा में आप लोगों का आशीर्वाद मांगने का अधिकार मुझको है।

सभा च समितिश्च अवताम् प्रजापते दुहितरौ सम्विदाने।
चेना संगच्छ उपमा स शिक्षात् चारुवदानि पितर सङ्गतेषु॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधाते सभानाम् नरिष्टा नाम वै असि ।
ये ते के च सभासदस्ते ते मम सन्तु सवाचसः ॥

एषामहं समासिनां वर्चो विज्ञानमादते ।
अस्या सर्व्वस्याः संसदो मामइन्द्र भगिनं कृनु ॥

यद्वो मनाः परागतं यद्वद्धं इह वेहवा ।
तद्वावर्त्तयामास ययिवो रमतां मनः ॥

यह सभा मुझ पर सुप्रसन्न होवे। मैं यहां पर उपस्थित पितृगणों के आशीर्वाद से वर्त्तमान सभास्थल में चारुवादी हो सकूं।

इस सभा का अर्थ मैं जानता हूं। इसका दूसरा नाम अच्चुएणा है। सभासद्लोग मेरे सहवाची होवें।

मुझे उनके तेज और ज्ञान का गौरव प्राप्त होवे।
इस संसर्ग का सौभाग्य मुझको मिल सके।

यदि इस सभा में किसी का मन परागत हुआ हो, वा इधर उधर आवद्ध हो, तो वह इस ठौर पर आवर्त्तित होकर मेरे मन में अनुरक्त हो जावे।"

इन श्लोकों से प्राचीन ऋषियों का मत जाना जाता है। सभापति महाशय ने इसके आगे जो कुछ कहा उसका बहुत संक्षेप मात्र यहां पर उद्धृत किया जाता है। आपने कहा—

"जिस देवभाषा में मैंने आप सबको अभिभाषण किया, मैं जानता हूं उसमें मेरा अधिकार नहीं है। वह ज्योतिर्मयी भाषा आदि-कवियों के हृदय की भाषा है, उसमें हर किसीका अधिकार नहीं है। अधिकार रहते हुए भी हम लोग अधिकार-भ्रष्ट हैं। हमने कैसे पहिले अधिकार की रक्षा की है? अपना घर छोड़ कर हम लोगों ने कूड़े करकट की ढेर पर डेरा जमाया है। हमने उच्छृङ्खल जीवन का अवलम्बन किया है, धर्म का बन्धन तोड़ डाला है, समाज-बन्धन की अवज्ञा की है; हमारे प्राणों के बंधन ढीले पड़ गये हैं। हृदयों में अनार्य-भाव भर गये हैं, जिह्वा के आगे अनार्य भाषा स्थित हो गयी है। बस्ती में गृहस्थ नहीं रहे, देवमन्दिर में जागते देवता नहीं रहे, अपना घर छोड़ हम लोग पराये द्वार पर उपयाचक बने हैं। फिर हमारा कैसा अधिकार? निर्मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय निर्वाक है, फिर भी हम बहुवाची हैं, अतः सत्य की ओर से लक्ष्यशून्य हैं। जो आत्मा पहिले निर्भय थी, अब लोभ से कलुषित हो सुवर्ण-मार्ग पर चलने लगी है। उस पर पैर अवश्य फिसलेंगे। अपने घर में अँधेरा भरा है, परन्तु दूसरों के घर हम मशाल जलाने चले हैं।" * * * * इसीभांति भूमिका की अवतारणा करते हुए सभापति महाशय ने वैदिक ऋषिगणों की सत्यपूता वाणी की महिमा कीर्तन की है—

"इसी सत्य के तेजोबल से उन लोगों की भाषा तेजोमयी थी। जिस दिन हमारे हृदय से यह बल आवेगा, उस दिन हमारी कविता भी ओजस्विनी होगी। साहित्य की जड़ में सत्य और साहस का रहना अत्यावश्यक है। यह बल कैसे आवे? धर्म के पथ को न थामने से, सामाजिक ग्रन्थि को दृढ़ न करने से, असत्य की उपेक्षा करना न जानने से, इस शक्ति का सञ्चार कभी न होगा। * * * * भाग्य का दोष हम नहीं देते। बालकत्व के अन्त होते न होते हम पिता बन जाते हैं, शिक्षा असम्पूर्ण रहते ही हम शिक्षक बन जाते हैं। मात्रा की अशुद्धि मिटते न मिटते हम लेखक बन जाते हैं। साध्यातीत का साधन हानिकारक ही होता है, उससे अमङ्गल छोड़ मङ्गल नहीं हो सकता। जो बात अपने वश के भीतर है, उसीसे शक्ति का परिचय मिल सकता है। जितना हम अपने अधिकार से बाहर जाने की चेष्टा करेंगे, उतना हम अधम से भी अधम बनने लगेंगे। * * * ऋत्विकगण ही आहुति देने की योग्यता रखते हैं; आहुति के भेद से देव या दानव यज्ञक्षेत्र पर अधिकार पा जाते हैं। †

"आदि कवि ही आर्यावर्त्त में आदि पुरोहित, गुरु, शिक्षक थे; उस स्थान का आज कौन अधिकारी बन सकता है? हमने अपनी ही धुन में, अपना अपना धर्म गढ़ लेना सीखा है * * कोठरी के भीतर अँधेरे कोने में बैठ कर जगत् के अन्धकार का अनुभव करना सहज है, परन्तु द्वार खोलकर खड़े न होने से जगत् का विस्तीर्ण उजियाला नहीं देख पड़ता। * * *

---

† हिन्दी भाषा की यही दशा है—सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वाधीनचेता के हाथ की लेखनी ज्वालामुखी हो जाती है। देवीतमा सरस्वती सूर्यालोक से आवृत हैं, अतीन्द्रिय दृष्टि के बिना स्थूल दृष्टि से नहीं देख पड़तीं। * * * यह दृष्टि तपस्या से मिलती है। * * * मिथ्या की पूजा कन्धेपर लाद कर समाज नहीं गढ़ा जा सकता। * * * सत्य ही जीवन की नींव है, सत्य ही मानवहृदय का साहस है। धर्म कहो, काव्य कहो, सब सत्य ही पर अवलम्बित हैं। समाज में आँखमिचौनी खेलने खेलते मन जराग्रस्त हो गया है। मुंह से कहने को कुछ कहते हैं, करने को उसकी शक्ति नहीं, ऐसी जिस जाति की प्रकृति है उसकी कौनसी आशा फलवती होगी ? वक्ता वक्तृता देते समय वीर बनते हैं, घर में घुस कर उन्हें भीगी बिल्ली का स्वरूप धरना पड़ता है। धर्माचार्य हिन्दू अपने घर में अत्याचार करने से नहीं घबराते। * * * गाली गलौज करने के लिए हम बड़े दृढ़ हैं * * * प्रायः सभी अनाचारी हैं, समझाना चाहते हैं कि हम बड़े आचारी हैं। * * * मिथ्या के हाट में मूर्त्ति का बेचना मोल लेना सम्भव है, वहां देवी नहीं मिलती। * * *

"मातृभाषा का आदर बिना जाने, अपने समाज का आदर करना बिना सीखे, मिथ्या के भीतर सत्य का रूप बिना देखे, साहित्य सीखना वृथा है। अपनी माता के रहते उससे द्रोह कर दूसरे घर की गृहिणी को मां मत कहो। अपनी माता को विदेशी जामे जोड़े मत पहिराओ। * * *" इत्यादि।

हिन्दी साहित्य में चित्रकला सिखाने की पुस्तकें

चित्रकला पर पुस्तक प्रणयन के लिए आधारस्वरूप अंगरेज़ी भाषा की "दी मिनियेचर पेन्टिंग ऐंड पेनटर्स आव पर्शिया ऐंड टर्की फ्राम दी ८ टू दी १८ सेंचुरी"—लेखक एफ़. आर. मार्टिन—का नाम लिया जा सकता है। पुस्तक की दो जिल्दें हैं। इसमें २७१ प्लेट हैं। बहुत से चित्र रंगीन हैं। परंतु मूल्य है—कितना ?—घबराइए मत—कुल ३००) रुपये।

दी स्टडी ईयरबुक आव डेकोरेटिव आर्ट—१९१३। इस नाम को एक पुस्तक अंगरेज़ी भाषा में प्रति वर्ष चित्रविद्या के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हुआ करती है। सन् १९१३ के लिए भी तैयार होकर प्रकाशित हो गयी है। इसमें ४०० चित्र हैं। अंगरेज़ी स्थपति-कला, अर्थात् गृह-निर्म्माण कला का अंश बहुत ही पुष्ट और रोचक है। बड़े बड़े चित्रकारों और कलाकुशल विद्वानों की करतूतों के नमूने इस पुस्तक में भरे हुए हैं। एक महाशय ने उद्यान वाटिकाओं में ललितकला की छटा प्रकाश करने के उपायों पर एक बहुत अच्छा लेख लिखा है। हमारे देशी कलाप्रेमी धनी लोग ऐसी पुस्तकों की सहायता से भारतीय स्थपतिकला पर अच्छे ग्रन्थ लिखवा सकते हैं। कोई धन खर्च करनेवाला हो तो हिन्दी भाषा में चित्रकला की विविधशाखाओं पर निबन्ध लिखनेवाले इस समय मिल सकते हैं।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यालय में "श्यामपट्ट चित्रकारी और स्वरूपशिक्षा" नाम की चित्रकला सिखानेवाली हिन्दी भाषा की एकमात्र पुस्तक वर्त्तमान है। इस पुस्तक के रचयिता हैं एक बंगाली सज्जन—श्रीयुत शैलजाकुमार घोष। यद्यपि यह पुस्तक नार्मल स्कूलों और ट्रेनिङ्ग क्लासों के विद्यार्थियों को सरकारी नियमावली के अनुसार ड्राइङ्ग सिखाने के उद्देश्य से लिखी गयी है, परन्तु इसका क्रम ऐसा है कि साधारण चित्रविद्या के शिक्षार्थी भी इससे अपना काम बहुत कुछ निकाल सकते हैं। इस पुस्तक में बतलाये हुए क्रम पर कार्य करने ही से चित्रकला के सीखने में बहुत कुछ जानकारी आ सकती है। इस पुस्तक में स्वरूपों को पहिले मट्टी से बनाना बतलाया गया है। फिर उन्हीं स्वरूपों के चित्र श्यामपट्ट या काले तख्ते पर खींचने की विधि, फिर उन्हींको काग़ज़ पर उतारने की विधि बतलायी गयी है। इसी तरह से क्रम क्रम से पानी के रंग का कार्य सिखा कर तेल के रंग के चित्र खींचने तक के इङ्गित दिये गये हैं। कुल ८० पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में इस विशद विषय का ब्योरा संक्षेप रीति से बहुत ही अच्छी परिपाटी से बताया गया है। पुस्तक भर में काम सिखाने के चित्र भरे हैं और अन्त में (पूर्वोक्ति ८० पृष्ठों के उपरान्त) २५ पृष्ठों में २५ प्लेट चित्रों ही चित्रों के हैं। हिन्दी भाषा में इतना भी होना अभी बड़े सौभाग्य की बात है। यदि चित्रकला से रुचि बढ़ती जाय, और सब लोग लेखक का उत्साह बढ़ा सकें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सम्भव है कि इस पुस्तक से भी अधिकतर उपयोगी पुस्तकें इन्हीं लेखक महाशय की चतुर लेखनी से हिन्दी के भंडार को सुशोभित कर सकेंगी। इस पुस्तक की शैली देखकर जान पड़ता है, हिन्दी के लिए "गुण न हिरानो, गुणग्राहक हिरानो है।" इस परमोपयोगी पुस्तक का मूल्य कुल ॥।) है। महसूल -)

अन्य भाषाओं की कुछ उपयोगी पुस्तकें

अंग्रेज़ी में कैसी कैसी ऐतिहासिक पुस्तकें निकला करती हैं, इस समय हाल ही में प्रकाशित दो एक पुस्तकों के नाम से ज्ञात हो सकता है। "दी हिस्टरी आव इंगलिश पेट्रियाटिज़्म"- अंग्रेज़ी देशहितैषिता का इतिहास--२ खंडों में—मूल्य २१॥।=); "चेन्जिङ्ग रशिया"—परिवर्त्तनशील रूस—मूल्य६॥-); "दी लाइफ़ आव एरेजिमेन्टल आफ़िसर"—एक सेना-विभाग के नायक की जीवनी—मूल्य ६=); "नेल्सन इन इंगलैंड"—नेल्सन सेनापति की कथाएं—मूल्य ६) हिन्दी के पाठक इन पुस्तकों का मूल्य ही सुनकर घबरा जांयगे। नांच रंग में, खेल तमाशे में, रुपये बिगाड़ देना इन लोगों के लिए कोई बड़ी बात नहीं। परन्तु ऐसी पुस्तकों को पढ़ना, उनसे सहायता लेकर हिन्दी भाषा में देशदेशान्तर के इतिहास लिखवाना और छपवाना, तब उनको मोल लेकर पढ़ना पढ़ाना,—यह बातें असम्भव सी जान पड़ती हैं। ऐसी पुस्तकों के लाभ को लोग स्वप्न में भी नहीं सोचते होंगे।

"दी स्टोरी आव दी नेशन्स" नाम की एक पुस्तकमाला अंगरेज़ी में मिलती है। इस माला की पुस्तकों से देश-विदेश की जातियों की कथा ज्ञात होती है। उत्साही प्रकाशक इन पुस्तकों की सहायता से हिन्दी भाषा का भी उपकार कर सकते हैं। अंगरेज़ी में प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ३॥।) है। रोम, यहूदी जाति, जर्मनी, कार्थेज, सिकन्दर का साम्राज्य, प्राचीन मिश्र, आदिम ब्रिटेन, रूस, यूनान, जापान, दक्षिण अफ्रिका, भारतवर्ष, चीन, स्काटलैंड, वेल्स, आयरलैंड, पोप का अधिकार, मध्यकाल का भारत—यानी मुसलमान अधिकार, बौद्धयुग का भारत, बल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान देश, इत्यादि प्रायः जगत् भर के सभी देशों की कथाएं इस माला में सम्बद्ध हैं।

"दी पेगैन ट्रैब्स् आव बोर्नियो"—बोर्नियो द्वीप की आदिम जातियां—दो जिल्दों में—मूल्य ३६॥।) यह एक बहुत ही अद्भुत अंगरेज़ी पुस्तक है। इसमें बोर्नियो द्वीप की जंगली जातियों के रूप, रंग, रीति, नीति, रहन, सहन, बुद्धि, सामर्थ्य, आदि की कथाएं भरी हैं। २०० बड़े बड़े चार रंग में छपे कोलोटाइप के चित्र और १०० साधारण चित्रों से यह पुस्तक सुशोभित है। इन चित्रों के देखने से नयन चकित हो जाते हैं। विवरण के पढ़ने से जगदीश्वर की लीला के चमत्कार का अनुभव होने लगता है। भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में, प्रत्येक कोने में, कितनी आर्य अनार्य जातियां बसा करती हैं, क्या उनकी सचित्र कथाएं हिन्दी-साहित्य में अरुचिकर होंगी ? कौन इस कार्य को करेगा ?

प्रयागका विज्ञान-परिषद् और उसकी कार्य्यप्रणाली

देशी भाषाओं के अभ्युदय और उन्नति का विचार आज साधारणतः सभी भारतीय-भाषा-भाषियों के हृदय में प्रस्फुरित हो रहा है। गत वङ्ग-साहित्य-सम्मेलन में भारत-विद्वद्रत्न डाकृर प्रफुल्लचन्द्र राय की जो वक्तृता हुई थी, जहां तक विज्ञान का सम्बन्ध है, यदि हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि के विषय में भी उसे* ही दुहराया जाय तो वह असंगत न होगी। भारतवासियों की तो क्या कहना है, सर थियोडोर मारिसन प्रभृति राजनीतिक भी देशी भाषाओं में शिक्षा देना अधिक लाभकारी समझते हैं। ऐसी दशा में भाषा-भांडार के अपूर्ण विभाग की पूर्त्ति शीघ्र ही करना प्रत्येक भारतवासी का धर्म्म है और ऐसे अवसर पर विज्ञान-परिषद् जैसी सर्वोपयोगी संस्था की स्थापना देशी भाषाओं के लिए अत्यन्त शुभसूचक है।

---

* इस वक्तृता का भावार्थ गत जून की 'सरस्वती' में भी प्रकाशित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान-परिषद् ने यद्यपि सम्प्रति हिन्दी-उर्दू की ही सेवा अपने हाथ में ली है, तथापि उसका उद्देश्य समस्त देशी भाषाओं में विज्ञान का प्रचार है और ज्यों ज्यों सर्व-साधारण से इस परिषद् को प्रोत्साहन मिलता जायगा, त्यों त्यों इसकी सङ्कुचित सीमाका विकास होता जायगा और क्रमशः बम्बई, बङ्गाल आदि में भी इसकी शाखाएं वा स्वतंत्र संस्थाएं स्थापित होकर बँगला मराठी गुजराती आदि में भी काम होने लगेगा। इस परिषद् को काम करनेवालों की बड़ी आवश्यकता है। अभी जो थोड़े से काम करनेवाले सदस्य हुए हैं उनसे ही इस बृहत्कार्य्य का सम्पादन नहीं हो सकता। इसमें सब ही साहित्य-सेवियों को यथाशक्ति योग देना उचित है। ऐसा कोई न समझे कि हम तो विज्ञान के रहस्यों से अनभिज्ञ हैं, हम क्या कर सकेंगे? विज्ञान-परिषद् के सदस्यों ने नियमानुसार कार्य्य-कारिणी समिति की रचना करके उसे विषयानुसार छः वर्गों में विभक्त कर दिया है—(१) रसायन-विज्ञान जिसमें भूगर्भ, खनिजादि विद्याएं सम्मिलित हैं, (२) भौतिक-विज्ञान जिसमें गणित-शास्त्र भी सम्मिलित है, (३) जीव-विज्ञान, (४) सम्पत्ति-शास्त्र, ऐतिहासिक-विज्ञान, पुरातत्व, राज-नीति आदि, (५) भाषा-विज्ञान तथा (६) परिभाषा-वर्ग। इनमें पहले पांच वर्ग अपने अपने विषय में अपने सदस्यों का काम निश्चित करते हैं, प्रत्येक वर्ग के सदस्य मिल कर वा पत्र द्वारा परस्पर सहायता करते हैं, वर्ग के अधिवेशनों में परिभाषा पर विचार होता है और परिभाषा की सूची बना कर परिभाषा-वर्ग को दी जाती है, तो परिभाषा-वर्ग प्रत्येक शब्द की परिभाषा पर विचार करके अपना निर्णय प्रकाश करता है। साधारण साहित्यानुरागियों की आलोचना से भी इस काम में सहायता मिलने की बहुत कुछ आशा है, इसी विचार से ऐसी सूची को प्रकाशित करने का भी प्रबन्ध हो रहा है। अब साहित्य-सेवी इस बात पर विचार कर सकते हैं कि इन वर्गों की सहकारिता से यह असम्भव नहीं है कि विज्ञान से अनभिज्ञ होने पर भी वे कुछ उपयोगी काम कर सकें। यथा, वे चाहें तो लोगों की रुचि को उत्तेजित करने के लिए सामयिक पत्रों में ऐसे ऐसे लेख दे सकेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सबकी समझ में आते हुए भी अत्यन्त रोचक तथापि पूरे वैज्ञानिक होंगे। इस कार्य्य में Science Siftings और Harmsworth Popular Science प्रभृति अंग्रेज़ी सामयिक पत्रों से सहायता मिल सकती है। कम से कम हम यह जान सकते हैं कि हम को कैसा आदर्श अपने सामने रखना चाहिए, तथा कैसे लेख रोचक एवं शिक्षाप्रद भी होंगे। अभी ऐसे लेख लिखना बहुतों को कठिन अवश्य प्रतीत होगा, किन्तु थोड़े ही प्रयत्न से यह कठिनाई दूर हो जायगी। ऐसे लेखों के साथ यथासम्भव चित्रों का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

साहित्य के इस अङ्ग की पूर्त्ति का ही काम ऐसा बड़ा, ऐसा कठिन है कि इसमें अन्य क्षेत्र में काम करनेवालों को भी सहायता देनी होगी। फिर भी हमारे सामने इतना बड़ा काम पड़ा हुआ है कि आवश्यक पाठोपयोगी एवं मुख्य मुख्य प्रमाणरुप ग्रन्थों के लेखन और प्रकाशन में ही बीसों वर्ष लग जायंगे और अभी सर्वसाधारण को मनोरञ्जन के साथ ही साथ वैज्ञानिक शिक्षा देनेवाले ग्रन्थों को प्रकाशित करने की अपेक्षा सामयिक पत्रों में ऐसे लेख देना अथवा किसी विशेष वैज्ञानिक पत्रिका द्वारा ही उन्हें प्रकाशित करना सुगम होगा।

विस्तार-भय से अधिक नहीं लिख सकता, किन्तु काम करने वालों को यह अवश्य ध्यान में रहे कि विज्ञान वर्त्तमान शास्त्र है, नित्य नये आविष्कार होते रहते हैं, नित्य नये सिद्धान्त बनते हैं एवं पुराने सिद्धान्त खंडित हो जाते हैं; इससे जितने ग्रन्थ लिखे जावें अभी सब ऐसे होने चाहिएं कि उनमें सर्वसम्मत पुष्ट सिद्धान्तों के प्रतिपादन को तो लेखक गौण विषय समझें, किन्तु जिस मानसिक तथा वास्तविक क्रिया से, जिस परीक्षा की रीति से, वैज्ञानिक खोज करते करते किसी सत्य घटना को हस्तामलकवत् जान जाते हैं, किसी सिद्धान्त की सत्यता प्रतिपादित हो जाती है, उस क्रिया वा रीतिकी शिक्षा को प्रधान विषय समझें और लिखते समय उसका ही विशेष ध्यान रक्खें, क्योंकि मस्तिष्क में किसी विषय का सारा हाल भर लेने से वास्तविक लाभ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वास्तविक लाभ उस रीति की सच्ची शिक्षा में है जिससे युरोप वा अमेरिका में नित्य नये आविष्कार हुआ करते हैं। *

म्योर सेंट्रल कालेज, प्रयाग

रामदास गौड़, एम. ए.
(सहकारी मन्त्री, विज्ञान-परिषद।)

विविध

बहुत से विद्वानों की सम्मति है कि नागरी लिपि को भारतवर्ष के सब प्रान्तों में उपयोगी बनाने के लिए कुछ परिवर्त्तन स्वीकार करना चाहिए। नागरी लिपि को सर्वोपयोगी बनाने के लिए किन किन बातों की आवश्यकता है, इस विषय पर विचार करने के लिए परिडत गोविन्दनारायण मिश्र, लाला अयोध्याप्रसाद, परिडत श्रीकृष्ण जोशी, लाला छोटेलाल 'वार्हस्पत्य,' बाबू यशोदानन्दन अखौरी, बाबू श्रीशचन्द्र वसु, परिडत रुद्रपट्टम् शामशास्त्री, बी. ए., और बाबू श्यामसुन्दर दास से एक समिति स्थापित करने की प्रार्थना की गयी है। यह समिति वर्णविचार-समिति के नाम से विख्यात होगी। इन विद्वानों के विचार और सिद्धान्तों का फल सम्मेलन में विचार किया जानेवाला है।

संयुक्त प्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा के अधिकतर प्रचार के सम्बन्ध में विचार करने के लिए नैनीताल में एक कमेटी बैठी है। उक्त कमेटी की सेवा में साहित्य-सम्मेलन की ओर से एक निवेदन-पत्र भेजा गया है जिसमें हिन्दी भाषा ही के द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा देने की उपयोगिता और आवश्यकता दिखायी गयी है। इस आवेदन-पत्र में कहा गया है कि यदि इंगलैंड या जर्मनी में उन देशों की भाषा अंगरेज़ी या जर्मनी को त्यागकर हिब्रू या अरबी शब्दों से भरी किसी भाषा में, और हिब्रू या अरबी ही अक्षरों द्वारा वहां के बालकों को शिक्षा दी जावे तो कैसा फल मिलेगा? इस भांति संयुक्त-प्रान्त में जब अधिकांश बालकों की मातृभाषा हिन्दी ही है, तब शिक्षा भी हिन्दी ही में होनी चाहिए।

---

* हिन्दी साहित्य के सभी प्रेमी विज्ञानपरिषद् के सदस्य बन सकते हैं। इसके लिए केवल २) वार्षिक व्यय करना पड़ता है। नियमावली परिषद् के मन्त्री से मांगने पर मिल सकती है। —सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी भांति बहुत सी अच्छी अच्छी दलीलें इस आवेदन में रक्खी गयी हैं।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से इस मुखपत्रिका का प्रकाशित होना हिन्दी साहित्य के लिए कहीं कहीं नयी बात समझी जा सकती है। परन्तु अँगरेज़ी साहित्य में कितने भिन्न भिन्न अद्भुत विषयों पर पत्र और पत्रिकाएं निकलती हैं, इसका ज्ञान हिन्दी के प्रेमिओं में से बहुत ही कम सज्जनों को होगा। अंगरेज़ी साहित्य में वर्त्तमान वर्ष—१९१३ ई०—में जितने पत्र निकल रहे हैं उनकी सूची देखने से, सम्भव है, कुछ शिक्षा मिलेगी—

विज्ञापन देनेवाला पत्र	१	गृहप्रबन्ध	३७
वायुयान-सम्बन्धी	३	नाट्य	८
अफ्रिका देश-विषयक	२	शिक्षा	१६
खेती बारी पर	१५	बिजुली	११
मछली के शिकार पर	१	इञ्जीनीयरिङ्ग	१४
जीवजगत्	१०	फैशन और वेश भूषा	२१
पुरातत्त्व	६	औपन्यासिक	१०२
गृहनिर्माण-कला	७	तथा (छोटी कहानियोंवाली)	२००
सेनाविभाग	१०	महाजनी	८
कलाकौशल	१४	पुष्पचर्चा	४
साधारण (लेखादिक)	१३६	उद्यान-विद्या	१६
ज्योतिष	२	बालिकाओं के पत्र	४
मोटर-कार	१५	दस्तकारी	२
जीवनचरित्र	८	इतिहास	१७
बिल्ली	१	हँसी दिल्लगी	२४
कुत्ते	२	भाषा-सम्बन्धी	२
चिड़िये	३	क़ानून	४
मुर्गी	५	पुस्तकालय	३
कबूतर	३	गाना बजाना	१२
अन्धे	१	खानि सम्बन्धी	६
ग्रन्थ-प्रकाश	८	जहाज़ों के विषय में	३
उद्भिद्शास्त्र	१	राजनीति	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों के पत्र	१४	पहेलियां	१
बालविनोद	२५	धर्म	५०
गृहनिर्माण, बढ़ई और लोहारों की कला	६	विज्ञान	२२
		खेलकूद	२६
व्यापार	५	स्त्रियों के पत्र	२७

इत्यादि, इत्यादि ।

यह सूची सम्पूर्ण नहीं है। अँगरेज़ी साहित्य में क्या हो रहा है केवल उसीका दिग्दर्शन-मात्र कराना यहां पर हमारा उद्देश्य है। लगभग सांसारिक सभी विषयों पर अलग अलग पत्र पत्रिकाएं छपती हैं। उनमें से अधिकांश सचित्र हैं, और अधिकांशों की संख्या एक दो हज़ार नहीं-लाखों हैं। क्या हमारी छोटी सी सम्मेलन-पत्रिका के ५००० ग्राहक भी हो जाना असम्भव है?

जहां देखिए वहीं आजकल जल-बुद्बुदों की नाईं मासिक पत्र पत्रिकाओं के जन्म लेने के समाचार सुने जाते हैं। एक समय था जब अकेली "सरस्वती" ही मासिक साहित्य का अखाड़ा दखल किये हुए खड़ी थी, परन्तु उस समय अकेली होने पर भी कठिनाई से—बहुत परिश्रम और उद्योगों से-उसके प्राणों की रक्षा हुई थी। आजकल जहां देखो तहां एक न एक मासिक पत्र या पत्रिका हिन्दी-साहित्य के आकाश में टिमटिमाया करती है। प्रकाश—उज्वल प्रकाश—किसीमें नहीं। एकमात्र "सरस्वती" को छोड़ दूसरी एक भी सामयिक पुस्तक का संचालन उचित रीति से नहीं होता। जहां देखो तहां अल्पज्ञ लोग सम्पादक वा सञ्चालक का कार्य करने को कूद पड़ते हैं। उनको परिणाम में अपनी मर्यादा भंग होने का भय नहीं रहता। हिन्दी में अभी काम करनेवालों की कमी है। पढ़नेवालों की संख्या कुछ काल पहिले से इस समय बढ़ जाने पर भी अभी तक सन्तोषप्रद नहीं है। हमारी अल्पबुद्धि में इतने ठौरों से इतनी छोटी छोटी पूजीवाली प्रभाहीन पत्रिकाओं का निकलना अच्छा नहीं। अभी इसका समय नहीं आया। समय आवेगा, १०-१५ वर्ष बाद। इस समय अपनी अपनी खंजरी अपना अपना राग से साहित्य को हानि पहुंच रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितने पत्र हैं उनकी पूंजी तो बहुधा होती ही नहीं। "सरस्वती" की बुनियाद में तीन हज़ार रुपये गड़ गये थे, तीन हज़ार रुपये की हानि सहकर तब कहीं "सरस्वती" की जड़ पक्की हुई थी। परन्तु दूसरे मासिक पत्रों के संचालक हज़ार पांच सौ की पूंजी लेकर भी कार्य आरम्भ नहीं करते। इसीसे वे जैसी चाहिए वैसी उन्नति नहीं दिखा सकते। शीघ्र ही उनको अपना उद्यम छोड़ देना पड़ता है। शीघ्र ही उनका उत्साह भंग हो जाता है। एक तो इतने धन का नाश, ऊपर से उत्साह की हानि। लेखकों को तो कभी एक पैसा नहीं मिलता। तिस पर भी पत्रों के सम्पादक भिक्षुकों की भांति लेखकों के द्वारपर चुटकी के लिए चिल्लाया करते हैं। इसका फल यह होता है कि लेखक-गण भी चुटकी ही देकर अपना पिंड छुड़ाते हैं। प्रभावशाली लेख लिखने का समय उनको कम मिलता है। पाठक और ग्राहकगण भी सब पत्रों के लिए पूरा धन नहीं ख़र्च सकते। ग्राहकों का दल सब पत्रों में बट जाने से पेट एक पत्र का भी नहीं भरता। सब प्रकार से धन की और शक्ति की हानि ही हो रही है। यदि सब पत्रों के संचालक मिलकर, अपनी शक्ति इकट्ठी कर के, काम कर सकें, और बहुत से निस्सार या अल्पसार पत्रों के स्थान में एक या दो बलवीर्यशाली प्रभावान् उत्कृष्ट पत्रों का प्रकाश हुआ करे तो इस समय कार्य अधिक अच्छा हो सकेगा। नहीं तो धन के लोभी स्वार्थी भिखमंगे बन कर मातृ-भाषा के सेवक की पवित्र पदवी को प्राप्त करना सम्भव नहीं है। क्या मेरा प्रस्ताव कार्य में परिणत होना असम्भव है?

मनस्वी श्रीयुत सारदाचरण मित्र, एम. ए., बी. एल., महाशय ने एक स्थान पर बंगाल के साहित्य के सम्बन्ध में कहा है—"शिक्षा का विस्तार हो रहा है। लिखना पढ़ना जानते हैं, ऐसे लोगों की संख्या दिन दिन बढ़ती जाती है। इसी शिक्षा-विस्तार के फल से हमारे (बंगाली) मुसलमान भाई भी बंगला पढ़ना सीख रहे हैं; बहुतेरे मुसलमान परिशुद्ध बंगला में उत्कृष्ट पुस्तक लिख रहे हैं। बङ्गभाषा में समाचारपत्र और सामयिक पत्र परिचालन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मुसलमानों में बहुत से योग्य मनुष्य देख पड़ते हैं। विशुद्ध ओजस्वी भाषा में वक्तृता करके सुननेवालों को तृप्त और मोहित कर सकते हैं, ऐसे बहुत से मुसलमान वक्ताओं को मैं जानता हूं। कुछ दिन पहिले ऐसा नहीं था। तब वे लोग उर्दू, फ़ारसी, अरबी भाषाओं को ही मुसलमान की शिक्षणीय भाषा जानते थे; परन्तु इन लोगों ने अपना भ्रम समझ लिया है; अब इन लोगों ने मातृभाषा बंगला भाषा ही का प्रधानतः सहारा लिया है। वङ्गभाषा को अब इन लोगों में से भक्तिनिष्ठ शक्तिशाली सुलेखकों का एक दल मिल गया है। हिज़ हाईनेस् आग़ाख़ां-प्रमुख मुसलमान नेतागण आजकल नये उद्यम से भारतीय मुसलमानों में फिर उर्दू, फ़ारसी और अरबी भाषा में शिक्षा विस्तार के लिए सविशेष यत्न कर रहे हैं। लोग हिन्दुओं की हिन्दी, बंगला इत्यादि भाषाओं के विरोधी हैं। परन्तु सौभाग्य से हमारे प्रान्त (बंगाल) में यह दशा नहीं है। यहां के मुसलमान भद्रसमाज ने देशीय मातृ-भाषा सीखने की उपकारिता समझ कर अपने समाज के सभी स्तरों में मातृभाषा सीखने का प्रबन्ध किया है और बंगला साहित्य की उन्नति के लिए हमारे साथ मिल गये हैं। पूर्वकाल में भी हमारे इस प्रान्त में मुसलमानों को वङ्गभाषा का विद्वेष नहीं था। जब इस देश में मुसलमान शासनकर्त्ता दिल्ली से स्वाधीन होकर देश शासन करने लगे, उसी मुसलमान-अभ्युदय के समय ही में मुसलमान कविगण वङ्गभाषा में राधाकृष्ण-लीला-विषयिणी पदावलियां की रचना कर गये हैं। मुसलमान कवियों के बहुत से बंगला सत्काव्य हमारे प्राचीन साहित्य में आविष्कृत हुए हैं।

पुस्तक-प्राप्ति-स्वीकार

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कार्यालय में जो पुस्तकें आज तक ग्रन्थकारों और प्रकाशक महोदयों ने भेजने की कृपा की है, उसकी सूची धन्यवाद सहित यहां पर प्रकाशित की जाती है। आज तक कुल ४७० पुस्तकें इस पुस्तकालय में आयी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या नाम पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	मूल्य
१-मनोहर सच्ची कहानियाँ	चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा	लाला रामनारायण लाल, बुकसेलर, कटरा, प्रयाग	॥)
२-हिन्दी आख्योपन्यास १ खं०	,,	,,	॥)
३- ,, २ खं०	,,	,,	॥)
४-श्रीमद्भागवद्संग्रह	,,	,,	॥)
५-रामायणसंग्रह	,,	,,	॥)
६-संक्षिप्त मनुस्मृति	,,	,,	॥)
७-उपदेशरत्नमाला	,,	,,	।)
८-संक्षिप्त विष्णुपुराण	,,	,,	।)
९-संक्षिप्त पराशरस्मृति	,,	,,	।)
१०-आश्चर्य सप्तदशी	,,	,,	।)
११-ग्रीस और रोम की दन्तकथाएं	,,	,,	।)
१२-संक्षिप्त मार्कण्डेय पुराण	,,	,,	।)
१३-हिन्दी महाभारत खंड १	,,	,,	॥)
१४- ,, ,, २	,,	,,	॥)
१५-भारतीय उपाख्यानमाला	,,	,,	॥)
१६- ,, खंड २	,,	,,	॥)
१७-सरल पत्रबोध	,,	,,	।)
१८-वारन हेस्टिङ्ग्स	,,	पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी दारागंज, प्रयाग	१)
१९-बालोपहार	पं० बिहारीलाल चौबे	,,	-)
२०-पत्रबोध	,,	एन. एन. वर्मन, बांकीपुर	=)
२१-रामावतार	,,	,,	।)
२२-अनुभूत चिकित्सासागर पूर्वार्द्ध	पं० गङ्गाप्रसाद दाधीच त्रिपाठी	जंगी चबूतरा, अजमेर	३)
२३- ,, उत्तरार्द्ध	,,	,,	३)
२४-गृहप्रबन्ध शास्त्र	पं० जनार्दन जोशी बी. ए. डि० कलेक्टर	अभ्युदय प्रेस, प्रयाग	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५-श्यामपट्ट चित्रकारी और स्वरूपशिक्षा-(चित्रकला)	श्री शैलजाकुमार घोष	श्रीगिरिजा कुमार घोष, कटरा, प्रयाग	॥।)
२६-छोटी बहू-(उपन्यास-स्त्रीपाठ्य)	श्रीगिरिजाकुमार घोष	गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग	॥।)
२७-राधारानी (,,)	,,	,,	=)॥
२८-प्रेकटिकल हिन्दी-इंगलिश डिक्शनरी (कोष)	चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्म्मा	ला० रामनारायण लाल, बुकसेलर, प्रयाग	१)
२९-नेपोलियन बोनापार्ट (इतिहास)	महात्मा मुंशीराम	सद्धर्मप्रचारक प्रेस, दिल्ली	१॥)
३०-संसारचक्र (उपन्यास)	पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी	९७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता	१)
३१-विचित्र विचरण ,,	,,	,,	१।)
३२-भारत की वर्तमान दशा	,,	,,	।=)
३३-तूफान (उपन्यास)	,,	,,	-)
३४-स्वदेशी आन्दोलन	,,	,,	=)
३५-गद्यमाला	,,	,,	॥=)
३६ भगवद्गीता भाषाटीका	पं० तुलसीराम स्वामी	स्वामीप्रेस मेरठ	॥=)
३७-न्यायदर्शन	,,	,,	॥)
३८-सांख्यदर्शन	,,	,,	१)
३९-योगदर्शन	,,	,,	॥)
४०-मनुस्मृति	,,	,,	१॥)
४१-चारो व्याख्यान	,,	,,	।)
४२-संस्कृत व्याख्यान	,,	,,	-)॥
४३-पिण्डपितृयज्ञ	,,	,,	।)
४४-सन्ध्या-भाषाटीका	,,	,,	)॥
४५-चाणक्यनीतिसार	,,	,,	-)
४६-श्वेताश्वतरोपनिषद्	,,	,,	॥)

[क्रमशः—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

स्थायी-प्रबन्ध-कारिणी समिति के मन्त्री की रिपोर्ट

सम्मेलन का उच्च स्थान

माननीय सभापति महोदय और हिन्दीप्रेमी सज्जनो !

गतवर्ष प्रयाग में पहले वर्ष का विवरण आप लोगों के सम्मुख उपस्थित करते समय मैंने यह निवेदन किया था कि हमारे देश की संस्थाओं में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का बहुत उच्च स्थान है। यह दो कारणों से है। एक तो इसके उद्देश सार्वजनिक हैं, हमारे देश भारतवर्ष भर का कल्याण उसका लक्ष्य है, भारतवर्ष भर को एक भाषा के प्रेम-सूत्र में बांध उसमें वास्तविक जातीयता का भाव उत्पन्न करना उसका कर्त्तव्य है। दूसरे उसकी कार्य्यप्रणाली में भी आरम्भ ही से इस बात पर ध्यान रक्खा गया है कि केवल वर्ष में एक बार मिलकर दो एक दिन प्रभावशाली वक्तृताओं द्वारा लोगों को उत्साहित करने और प्रस्तावों को स्वीकार करने में ही कार्य की समाप्ति न होनी चाहिए, वरन् लगातार वर्ष भर अपने उद्देशों की पूर्त्ति के लिए यथासाध्य उद्योग में प्रवृत्त रहना चाहिए।

सम्मेलन के कार्य के दो मार्ग

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के दो कर्त्तव्य हैं-एक तो हिन्दी साहित्य की वृद्धि का उपाय करना और दूसरा हिन्दीभाषा और नागरीलिपि को देश भर में सर्वव्यापी बनाने का उद्योग करना। इनमें से पहला काम तो इस प्रकार का है जो वास्तव में विशेषकर व्यक्तियों के करने का है। साहित्य की रचना और साहित्य के भण्डार की पूर्त्ति सदा प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा होती है। सभाएं प्रतिभा नहीं उत्पन्न करा सकतीं। वे अवश्य व्यक्तियों को पुस्तकें लिखने में सहायता दे सकती और उत्तेजित कर सकती हैं ; किन्तु वास्तव में गम्भीर साहित्य की पूर्त्ति व्यक्तियों पर ही निर्भर रहती है। हिन्दी में इस समय बहुत से सज्जन और कई एक सभाएं भी इस काम को कर रही हैं। इसमें सन्देह नहीं कि अभी हिन्दी साहित्य में बहुत कमी है और इस बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आवश्यकता है कि उन विषयों पर—जिन पर हिन्दी में पुस्तकें अभी नहीं हैं अथवा हैं किन्तु साधारण हैं—अच्छी पुस्तकें लिखने के लिए लेखकगण उत्तेजित किये जांय। गत वर्ष द्वितीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी और पण्डित रामावतार शर्म्मा ने इस विषय की ओर सम्मेलन का ध्यान आकर्षित करते हुए यह प्रस्ताव किया था कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में भाग लेने-वाले सज्जनों में से कुछ लोग एक एक विषय अपने लिए चुन लें और उन पर जहां तक हो सके एक एक पुस्तक लिखकर आगामी सम्मेलन में उपस्थित करें। इस रीति से हिन्दी के भण्डार में बहुत सी अच्छी पुस्तकें आ सकती हैं और यह कलङ्क मिट सकता है कि हिन्दी साहित्य में बहुत विषयों पर पुस्तकें हैं ही नहीं। मैंने द्वितीय-सम्मेलन के कार्य्य-विवरण के दूसरे भाग की भूमिका में हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान इस प्रस्ताव की ओर आकर्षित किया है और यहां भी आपका ध्यान इस विषय की ओर दिलाता हूं और आशा करता हूं कि इस सम्मेलन में यहां आये हुए सज्जनों में से कुछ अवश्य इसके लिए तैयार हो जांयगे कि अपने लिए विषय निर्वाचित करें और उन पर पुस्तकें लिख कर आगामी सम्मेलन में उपस्थित करें। इसके साथ ही मेरा स्वयं विचार आरम्भ से यह हो रहा है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को कुछ वर्षों के लिए अपना मुख्य उद्देश दूसरा—अर्थात् हिन्दी-भाषा और नागरी-लिपि का प्रचार—रखना चाहिए। इसका विशेष कारण यह है कि इस काम में समूहशक्ति का विशेष उपयोग है और व्यक्तियों तथा छोटी सभाओं को इस काम को अलग अलग करने में विशेष कठिनता का सामना करना पड़ता है, अतः वे निराश होकर इसको छोड़ देते हैं। किसी विषय पर पुस्तक तो प्रत्येक योग्यता रखने-वाला व्यक्ति लिख सकता है, छोटी सभाएं भी अपने सभासदों द्वारा पुस्तकें लिखवा सकती हैं, किन्तु किसी विशेष प्रान्त में नागरी-लिपि अथवा हिन्दी-भाषा का प्रवेश कैसे हो, किन किन साधनों से उसमें सहायता की जाय, सरकारी अधिकारियों पर अथवा सर्वसाधारण पर किस प्रकार से प्रभाव डाला जाय, इन बातों के सम्बन्ध में कार्य्य करने के लिए समूहशक्ति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११३०६४

आवश्यकता है और वह शक्ति इस समय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में होनी चाहिए, क्योंकि यह हिन्दी-प्रेमियों तथा हिन्दी सभाओं की शक्तियों का केन्द्र है इसी बात की ओर ध्यान देकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्थायी होने के बाद ही से मैंने इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया है। यदि हमको भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में हिन्दी का प्रचार करना और हिन्दी को भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा बनाना अभीष्ट है, तो यह आवश्यक है कि प्रत्येक प्रान्त में अलग अलग स्थिति के अनुसार हम नागरी प्रचार के साधनों को उठावें।

संयुक्त-प्रान्त की अदालतों में नागरी-प्रचार

मैं समझता हूं कि इस बात को स्वीकार करने में किसीको आपत्ति न होगी कि संयुक्तप्रान्त ही हिन्दी भाषा का केन्द्रस्थान है। यह भी आप पर विदित है कि संयुक्तप्रान्त ही फ़ारसी लिपि और उर्दू भाषा का भी केन्द्रस्थान है। यद्यपि संयुक्तप्रान्त में हिन्दी लिखने और पढ़नेवालों की संख्या उर्दू बोलनेवालों से लगभग ११॥ गुना अधिक है, तथापि अङ्गरेज़ी गवर्नमेन्ट के आरम्भ से ही यहां अदालतों का काम फ़ारसी-मिश्रित जटिल भाषा में हो रहा है। मैंने गत वर्ष इस विषय के सम्बन्ध में विशेष रीति से आपका ध्यान आकर्षित किया था और यह दिखलाया था कि अदालतों में हिन्दी के प्रचार के लिए यत्न करने की कितनी आवश्यकता है, क्योंकि अदालती भाषा का सर्वसाधारण पर बहुत प्रभाव पड़ता है और साहित्य की उन्नति या अवनति सर्वसाधारण के झुकाव पर ही निर्भर है। इसी कारण से संयुक्तप्रान्त की अदालतों में हिन्दी के प्रवेश का यत्न करना आरम्भ ही से हम लोगों के कर्त्तव्यों में से एक मुख्य कर्त्तव्य रहा है। संयुक्त प्रान्त में हिन्दी के पक्षवालों को अदालत में हिन्दी में काम करने की आज्ञा सन् १९०० में मिली थी। उस समय से लेकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के संगठन के समय तक, अर्थात् अक्तूबर सन् १९१० तक अदालतों में हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में प्रायः कुछ भी विशेष काम नहीं हुआ। एक आध स्थानों में कुछ लोगों ने हिन्दी में कुछ अर्ज़ियां इत्यादि दाख़िल कीं, किन्तु चारों ओर फ़ारसी लिपि में काम करनेवालों से घिरे रहने के कारण और कोई नियमबद्ध सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न होने के कारण जो कुछ काम हुआ वह नहीं के बराबर था। मैंने गत वर्ष निवेदन किया था कि सम्मेलन के कार्य्य के प्रथम ही वर्ष में सम्मेलन के यत्न से जितने कागज़ हिन्दी के अदालतों में दाख़िल हुए वे यद्यपि बहुत कम थे तो भी उतने नौ वर्षों में दाख़िल नहीं हुए थे। पिछले वर्ष मैंने बताया था कि सम्मेलन के प्रयत्न से प्रयाग, फ़तेहपुर और हाथरस में हिन्दी का काम आरम्भ हुआ था और सम्मेलन की जानकारी में इन स्थानों में कुल २१३२ कागज दाख़िल हुए थे। आपको यह सुन कर हर्ष होगा कि इस वर्ष, जिसका विवरण मैं आपके सम्मुख उपस्थित कर रहा हूं, पिछले तीन स्थानों के अतिरिक्त इन पांच और नये स्थानों पर काम हुआ—कानपुर, जौनपुर, फ़ैज़ाबाद, लखीमपुर जिला खीरी, और ज्ञानपुर (बनारस राज्य)। अर्थात् जहां पिछले वर्ष में तीन स्थानों में काम हुआ था, वहां इस वर्ष आठ स्थानों में काम हुआ। कुल कागज़ जो सम्मेलन को जानकारी में इन स्थानों पर दाख़िल हुए उनकी संख्या ६२८३ थी। इसके अतिरिक्त वकालतनामा, इज़राय डिगरी आदि के कई हज़ार हिन्दी में छपे फ़ार्म भिन्न भिन्न स्थानों में भेजे गये, जो अवश्य ही दाख़िल हुए होंगे। इससे आप यह अनुमान कर सकते हैं कि सम्मेलन के द्वारा अदालतों में नागरी प्रचार का काम बराबर बढ़ रहा है और मुझे आशा है कि बराबर काम में लगे रहने से हिन्दी का अदालतों में अच्छी तरह प्रवेश हो जायगा। किन्तु काम अभी बहुत करना है और इसके लिए बहुत परिश्रम की, धन की और संगठन की आवश्यकता है।

सम्बद्ध सभाएं

गत वर्ष जो नियमावली सम्मेलन में स्वीकृत हुई थी उसमें हिन्दी और नागरी प्रचार का उद्देश रखनेवाली सभाओं का सम्मेलन से सम्बद्ध कराने का एक नियम रक्खा गया था। उस नियम के अनुसार इस वर्ष निम्नलिखित सभाओं का सम्मेलन से सम्बन्ध हुआ—

नागरीप्रचारिणी सभा, ब्यावर; नागरीप्रचारिणी सभा, काशी; नागरीप्रचारिणी सभा, गोरखपुर; नागरीप्रचारिणी सभा, बुलन्दशहर; नागरीप्रचारिणी सभा, अमृतसर; हिन्दी-साहित्य परिषद्, कलकत्ता; नागरीप्रचारिणी सभा, आगरा; नागरीप्रवर्द्धिनी सभा, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पुस्तकालय

आपको स्मरण होगा कि गत वर्ष द्वितीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का १२ वां मन्तव्य यह हुआ था कि "यह सम्मेलन अपने कार्य्यालय में हिन्दी की सामयिक अवस्था और उन्नति का विवरण रखने के लिए प्रस्तुत है। अतएव सम्मेलन सब हिन्दी के लेखकों और प्रकाशकों से प्रार्थना करता है कि वे अपनी पुस्तकों की एक एक प्रति सम्मेलन-कार्य्यालय में बिना-मूल्य भेजने की कृपा करें। इस काम में सहायता देने के लिए सम्मेलन हिन्दी-पत्र-सञ्चालकों से भी प्रार्थना करता है कि वे अपने अपने पत्रों की एक एक प्रति बराबर विनामूल्य सम्मेलन-कार्य्यालय में भेजने की कृपा करते रहें।" इस मन्तव्य के अनुसार विशेष उद्योग करने से अब तक कुल ४३४ पुस्तकें सम्मेलन-कार्यालय में आयी हैं, जिनका ब्योरा इस प्रकार है—

पुस्तकदाताओं के नाम	संख्या
बाबू चिन्तामणि घोष, अध्यक्ष, इन्डियन प्रेस, प्रयाग ...	६७
पं० बाबूराम शर्म्मा, इटावा	७६
भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता ...	३८
पं० कृष्णाकान्त मालवीय, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग ...	२०
बाबू रामनारायण लाल, बुकसेलर, कटरा, प्रयाग ...	१८
पं० तुलसीराम स्वामी, मेरठ ...	१५
बाबू गोपालराम, गहमर ...	१५
पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा	१४
पं० विहारीलाल चौबे, काशी ...	१४
बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, प्रयाग ...	१३
बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, काशी ...	१२
पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, दारागंज, प्रयाग ...	१०
पं० श्रीधर पाठक, प्रयाग ...	८
प० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, कलकत्ता	६
पं० देवीदत्त द्विवेदी, प्रयाग ...	५
पं० बालकृष्ण भट्ट, प्रयाग ...	५
लाला भगवानदीन, काशी ...	५
पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी, प्रयाग ...	४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरीप्रवर्द्धिनी सभा, प्रयाग (ह० पं० लक्ष्मीनारायण नागर, मन्त्री) ४
पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी, अजमेर ... ४
पं० हरिमङ्गल मिश्र, प्रयाग ... ४
व्यास तनसुखजी, व्यावर ... ४
श्री पूनमचन्द व्यास, व्यावर ... ४
पं० रामप्रसाद मिश्र ... ४
बा० गिरिजाकुमार घोष, प्रयाग ... ३
प्रकाश-बुक-डिपो, अजमेर ... ३
बा० महेशचरण सिंह ... ३
श्रीमीठालाल व्यास, व्यावर ... २
गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य, मथुरा ... २
हिन्दी-ग्रन्थ-प्रकाश मण्डली, औरैया, इटावा ... २
महात्मा मुंशीराम, गुरुकुल, कांगड़ी ... १
पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, अजमेर ... १
पं० रघुनाथप्रसाद मिश्र, शारदाभवन, इटावा ... १
अधिकारी जगन्नाथदास विशारद, भरतपुर ... १
बा० जयविजयनारायण सिंह, प्रयाग ... १
जैनमित्र कार्यालय, बम्बई ... १
बा० रामखेलावन, अहरौरा, ज़िला मिर्ज़ापुर ... १
बा० रामकिशोर गुप्त, झांसी ... १
बा० व्रजनन्दनसहाय, आरा ... १
बा० कालीचरण सिंह ... १
पं० देवीप्रसाद शर्म्मा, अहरौरा, ज़िला मिर्ज़ापुर ... १
बा० भगवानप्रसाद चौवे, बिहपुर, ज़िला भागलपुर ... १
स्वामी रामकृष्णानन्द गिरि, बाघाम्बरी, प्रयाग ... १
पं० बैजनाथ उपाध्याय, भेड़ीताल, ज़िला गोरखपुर ... १
पं० अखिलानन्द शर्म्मा ... १
लाला महानन्द जी, प्रयाग ... १
पं० गोविन्दनारायण मिश्र, कलकत्ता ... १

उपर्युक्त सब सज्जनों को अनेक धन्यवाद है। साथ ही खेद के साथ मुझे यह कहना पड़ता है कि पुस्तक-प्रकाशकों और लेखकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने जैसा चाहिए था वैसा ध्यान इस मन्तव्य की ओर नहीं दिया। यद्यपि यह मन्तव्य प्रकाशित कर दिया गया था और लेखकों तथा प्रकाशकों का ध्यान विशेष रूप से अलग अलग पत्र द्वारा इस ओर आकर्षित किया गया था, तो भी इस वर्ष जो नयी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनमें से बहुत थोड़ी पुस्तकें कार्य्यालय में आयीं। जिन पुस्तकों की संख्या का ऊपर उल्लेख किया गया है उनमें अधिकांश इस वर्ष से पहिले की प्रकाशित हैं।

उपर्युक्त मन्तव्य के अनुसार निम्नलिखित पत्र सम्मेलन-कार्य्यालय में आने लगे हैं—

भारतमित्र (साप्ताहिक), कलकत्ता।
श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार (साप्ताहिक), बम्बई।
सद्धर्म्मप्रचारक (साप्ताहिक), दिल्ली।
विहारबन्धु (साप्ताहिक), बांकीपुर।
जयाजीप्रताप (साप्ताहिक), लश्कर, ग्वालियर।
गृहलक्ष्मी (मासिक), प्रयाग।
अभ्युदय (अर्द्धसाप्ताहिक), प्रयाग।
मर्यादा (मासिक), प्रयाग।
सुधानिधि (मासिक), प्रयाग।
स्वदेशबान्धव (मासिक), आगरा।
राजपूत (पाक्षिक), आगरा।
भास्कर (मासिक), मेरठ।
रसिकमित्र (मासिक), कानपुर।
भारतोदय (मासिक), महाविद्यालय, ज्वालापुर।
क्षत्रियसमाचार (मासिक), पटना।
जैनहितैषी (मासिक), बम्बई।
साधु (मासिक), बड़ोदा।

इन पत्रों के स्वामियों और सम्पादकों को अनेक धन्यवाद है।

उपदेशक

प्रचार के काम के लिए इस वर्ष पण्डित जीवानन्द शर्म्मा काव्यतीर्थ सम्मेलन की ओर से वैतनिक उपदेशक नियत किये गये। सबसे पहले वे राजपूताना में प्रचार के लिए भेजे गये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि पहले ही सेठ दामोदरदास राठी से सम्मेलन ने इस बात का वादा किया था और आपको स्मरण होगा कि प्रथम सम्मेलन में ही राठीजी ने इसके लिए ३००) देने का वचन दिया था। पण्डित जीवानन्द शर्म्मा ने अपने राजपूताना-भ्रमण की जो रिपोर्ट दी है, वह इस प्रकार है—

राजपूताना में पं० जीवानन्द के कार्य का विवरण

श्रीः

श्रीयुत मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयागराज।

महाशय,

आपके आज्ञानुसार हिन्दी के प्रचार के लिए मैंने राजपूताने में ३ महीने १५ दिनों तक परिभ्रमण किया।

इस प्रचार में नागरी-प्रचारिणी सभा, ब्यावर, ने जो कुछ सहायता दी है उसके लिए न केवल मुझे ही अपि च सभी हिन्दी-भाषा-प्रेमियों को उचित है कि उसे धन्यवाद देवें, क्योंकि इसके सञ्चालकों की कर्म्म-कुशलता तथा उत्साह के सहारे ही मैं निर्विघ्न कार्य्य कर सका।

राजपूताना जैसा अज्ञान गह्वर में पड़ा हुआ है वैसा और प्रान्त कदाचित् ही होगा। इधर के कितने विद्या-दिग्गज हिन्दी के प्रचार से अपनी रोटी मारी जाना समझते हैं। उनकी धारणा है कि वैश्यों के पढ़ जाने से हमारे गुलछर्रे नहीं उड़ेंगे और हम उनको जिधर चाहेंगे उधर उनको नाक पकड़ कर नहीं ले जा सकेंगे। इसीलिए कई एक स्थानों में ऐसे लोग मुझसे भी भिड़ पड़े। परन्तु भगवान के निस्स्वार्थ भाव के बल से सदा मैं विजयी बना रहा।

इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिक झगड़े ने भी इधर खूब ज़ोर मारा है और आशा है कि यह दिन दिन ज़ोर पकड़ता ही जायगा जब तक भगवती विद्यादेवी की कृपा इस प्रान्त पर न होगी।

जहां जहां मुझे जैसी जैसी कठिनाइयां और सफलता प्राप्त हुई उसका पूर्ण विवरण नीचे देता हूं। आशा है कि आप इसको पढ़कर राजपूताने की साहित्य-गत दशा से अभिज्ञ हो जायंगे।

१—ब्यावर

आपके यहां से १२ अगस्त सन् १६१३ को विदा होकर मैं ब्यावर आया। इसका दूसरा नाम नवानगर है। उत्साह में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथार्थ में अपने नाम को सार्थक करता है। यहां की नागरी-प्रचारिणी सभा के उद्योग से मेरे छः व्याख्यान हिन्दी के सम्बन्ध में हुए। यहां पर केवल लोगों में हिन्दी का प्रेम दिलाया गया। बहुत धनी मानी लोग इससे पूर्ण सहानुभूति रखने लगे।

२—अजमेर

यहां यद्यपि एक मुन्नालाल-नागरी-प्रचारिणी सभा, तथा सनातन-धर्म्म (हिन्दी)-पुस्तकालय एवं जैन-पुस्तकालय था, तथापि इन संस्थाओं में साम्प्रदायिक झगड़े होने के कारण इनसे सार्वजनिक कार्य्य में विशेष उपकार होने की सम्भावना न देख कर मुझे एक नागरी-प्रचारिणी सभा अलग स्थापित करनी पड़ी। विना सार्वजनिक सभा हुए अदालत में हिन्दी के प्रचार के लिए चेष्टा करना व्यर्थ होता है।

यहां मेरे दो व्याख्यान हुए। मेरा अधिक समय सभा की सहायता करने के लिए लोगों से अनुरोध करने में व्यतीत हुआ। श्रीयुत गोविन्द रामचन्द्र जी खाण्डेकर सभापति, तथा बाबू गौरीशङ्करजी, बी० ए०, बैरिस्टर, ने सेक्रेटरी होना स्वीकार किया। आशा है सभा अच्छा काम करेगी।

३—नसीराबाद

यहां ६ व्याख्यान हुए—४ दिनों तक जैनमन्दिर में, १ दिन बाज़ार में और एक दिन आर्य्यसमाज के मन्दिर में। यहां भी एक नागरी-प्रचारिणी सभा और एक हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हुआ। हिन्दी पुस्तकालय के लिए एक वैष्णव वैश्य महाशय ने अपना एक दो मंज़िला मकान दे दिया।

४—केकड़ी

यहां के कार्य्य में सफलता होने से मुझे जितनी प्रसन्नता हुई उतनी प्रसन्नता मुंडवा (मारवाड़) छोड़कर कहीं नहीं हुई। इस मुट्ठी भर के स्थान में चतुर्थ दिन ही हिन्दी पुस्तकालय के लिए २५०) का चन्दा हो गया। सौ रुपये तत्काल वसूल हो गये। पांच सौ रुपये चन्दा कर देने का वचन दिया गया। जहां साप्ताहिक वा मासिकपत्र किस वस्तु का नाम है लोग यह भी नहीं जानते थे, वहाँ १८ पत्र मँगाने की तैयारी हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चन्दे में ब्राह्मण से लेकर खाती पर्य्यन्त सबोंने दिल खोलकर चन्दा दिया। आशा है, अब वहां पुस्तकें मँगायी गयी होंगी। जो लोग केवल रामायण पर ही अपना गुज़ारा करते थे, अब अनेक प्रकार की पुस्तकें पढ़ते होंगे।

५—पीपाड़ (मारवाड़)

यहां ब्यावर-नागरी-प्रचारिणी-सभा के मन्त्री श्रीमान् तनसुखराय जी व्यास मेरे साथ थे। इन्होंने यहां भी मेरे कार्य्य में बड़ी सहायता दी। यहां के सेठ रामरिख जी जैसे उत्साही सज्जन के सभापतित्व में बात की बात में ११ सौ रुपये के चन्दे से हिन्दी पुस्तकालय खुल गया। यद्यपि यहां मेरे व्याख्यान ९ दिनों तक होते रहे, पर और स्थानों के जैसा यहां परिश्रम नहीं करना पड़ा। उत्साही सेठ रामरिख जी के विद्या-प्रेम और वैद्यवर तनसुखराय जी की उचित सहायता से झटपट चन्दे का प्रबन्ध हो गया।

६—मूंडवा (मारवाड़)

यहां की दशा सबसे शोचनीय थी। सिवा जूआ और मादक द्रव्यों के सेवन के लोग यह भी नहीं सोचते थे कि विद्या भी कोई वस्तु है। सुनते हैं कि जोधपुर राज्य की ओर से एक स्कूल का प्रबन्ध हुआ है। इसमें एक २५) वेतन के अङ्गरेज़ी मास्टर और एक हिन्दी के पढ़ानेवाले अध्यापक नियुक्त किये गये थे। बेचारे दोनों अध्यापकों ने १ वर्ष तक स्कूल की बेञ्चें गिनीं, पर वहां के एक भी भले आदमी ने अपने लड़के पढ़ने को भेजने की कृपा नहीं की। अगत्या अङ्गरेज़ी मास्टर साहब को वहां से चला जाना पड़ा और हिन्दी मास्टर को मुड़िया अक्षर लड़कों को पढ़ाकर अपना निर्वाह करना पड़ा।

यहां ६ दिनों तक सड़क पर व्याख्यान देना पड़ा। बिछौना न होने के कारण लोग ज़मीन पर बैठते थे। ५वें दिन यहां के पञ्चों की जटा डोली। सबोंने चतुर्भुज जी के मन्दिर में शपथ ली और एक प्रतिज्ञापत्र लिख दिया कि हम ईश्वर को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करते हैं कि आज से अपने लड़कों को हिन्दी पढ़ाते हुए ऊंची शिक्षा दिलावेंगे। प्रतिज्ञापत्र पर सबोंने हस्ताक्षर कर दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—बीकानेर

राजपूताना की कीचड़ में यह स्थान कमल सा देख पड़ा। यहां विचित्र जागृति मालूम हुई। जिस विभाग की ओर आंख उठायी, उसी विभाग में जागृति की तीक्ष्ण ज्योति की तारा चमकती सी देख पड़ती थी। शारीरिक उन्नति के साथ साथ मानसिक उन्नति भी वहां बड़े वेग से ऊंचे चढ़ रही है।

इन सभी उन्नतियों के कारण दरबार श्री-जी हैं। आपके ही सुशासन से यह चमक देख पड़ती है। यहां मैं १६ दिनों तक था। १० व्याख्यान हुए। यहां के श्री जुबिली-नागरी-भण्डार को नवीन भवन बनाने के लिए १० हज़ार रुपये की आवश्यकता थी। परमेश्वर की कृपा से लोगों ने मेरे ऊपर दया की। आवश्यक धन का प्रबन्ध हो गया। सबसे प्रसन्नता की बात यह हुई कि एक मुसलमान भाई ने उत्साहित होकर भण्डार की सहायता के लिए रुपये दिये।

८—चूरू

४ दिनों तक मेरे व्याख्यान हुए। सनातन-धर्म-सभा और सर्वहितकारिणी सभा दोनों ने मुझे सहायता दी। अन्तिम दिन वहां के विद्याप्रेमी तहसीलदार साहब के सभापतित्व में ९०८) का चन्दा उक्त बीकानेर-भण्डार के लिए हुआ।

९—सरदारशहर

यहां रेल नहीं है। १८ कोस बैलगाड़ी वा ऊंट पर चूरू से जाना पड़ता है। दिन में बैलगाड़ी नहीं चलती, इसलिए रातोंरात चल कर मैं भोर में यहां पहुंचा। उसी दिन ४ बजे से व्याख्यान होना प्रारम्भ हुआ। यह शहर बड़ा धनाढ्य है। पर दुःख से कहना पड़ता है कि विद्या के विषय में यह शहर महा दरिद्र है। ५, ६ वर्षों से एक हिन्दी पाठशाला के लिए यहां के उत्साही सज्जन प्रयत्न कर रहे थे, पर किसीका ध्यान उधर नहीं जाता था। यहां ६ व्याख्यान मेरे हुए। ईश्वर सहायक हुए। लोगों की रुचि विद्या पर हुई। अन्तिम दिन एक हिन्दी पाठशाला के लिए १५०) का वार्षिक चन्दा हुआ। उतने ही की और प्रतिज्ञा भी हुई। अपने लड़कों को पढ़ाने के लिए लोग तत्पर हुए। सबसे यहां विशेषता यह हुई कि एक मुसलमान डाकूर ने १५) का चन्दा हिन्दी पाठशाला के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। वैश्यजाति के एक वकील साहब ने अपनी वकालत छोड़ कर जातीय-सेवा में जीवन बिताने की प्रतिज्ञा की। ओसवाल भाइयों ने गांव गांव में स्कूल खोलने का वचन दिया जो उनसे होना बहुत सम्भव है।

भरतपुर

मैं ब्यावर से चल कर २५ नवम्बर को भरतपुर पहुंचा।

थोड़े दिन हुए यहां पर एक हिन्दी-साहित्य-समिति स्थापित हुई है। दुःख का विषय है कि यहां के राज-कर्म्मचारी इस की सहायता करने पर सहमत नहीं होते थे। कतिपय हिन्दू ही इसके विरोधी खड़े हो गये थे। इसके मन्त्री साहब ने मुझे पत्र लिख कर बुलाया। यहां मेरे तीन व्याख्यान हुए। तीनों दिन कौन्सिल के मेम्बरगण सभापति रहे। अन्तिम दिन राज के रेविन्यु मेम्बर, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी के फ़ेलो, ख़ां बहादुर ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। आपने उस दिन हृदय खोल कर हिन्दी की प्रशंसा करते हुए हिन्दी ही का अपनी मातृभाषा बतायी। उन्होंने कहा कि हमारी मां बहू बेटियां हिन्दी ही बोलती, तथा आपस का पत्र व्यवहार हिन्दी के विकृत रूप कैथी में करती हैं। इसलिए हमारी मातृभाषा हिन्दी ही है, मैं हिन्दी की तन मन धन से सहायता करूंगा। तदनुसार आप समिति को १॥) मासिक चन्दा देकर समिति के मेम्बर बन गये। उस दिन से सभी पठित-समाज समिति से सहानुभूति रखने लगे।

भरतपुर से मैं २९ नवम्बर को चला और तीस को प्रयाग में पहुंचा।

जीवानन्द शर्म्मा
वैतनिक उपदेशक, हि०-सा०-सम्मेलन।

अन्य स्थानों में उपदेशक

राजपूताना से लौटने पर तृतीय सम्मेलन के लिए प्रतिनिधि भेजने के निमित्त सभाएं कराने के अभिप्राय से पण्डित जीवानन्द शर्म्मा कानपुर, मिर्ज़ापुर, काशी, आरा और गोरखपुर गये और इन स्थानों में व्याख्यान देकर लोगों को उत्साहित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिर्ज़ापुर में लाला वसन्तलाल जी ने वहां की अदालतों में हिन्दी प्रचार के निमित्त दो वर्ष तक २००) वार्षिक देने का वचन दिया।

हिन्दी-प्रचार-सम्बन्धी विशेष उल्लेखयोग्य बातें

देशी राज्यों में नागरी प्रचार के विषय में इस वर्ष बीकानेर, रीवाँ और छत्रपुर के नरेशों का विशेष कर सराहनीय कार्य्य हुआ है। इन तीनों राज्यों में नागरी का प्रचार अच्छी तरह हो रहा है और इसके लिए ये तीनों नरेश हिन्दी-प्रेमियों के धन्यवाद के पात्र हैं।

माहेश्वरी कान्फरेन्स ने अपनी जाति का सब व्यापारी कार्यों में हिन्दी के प्रचार की ओर ध्यान आकर्षित किया है; अतः उसके कार्य्यकर्त्तागण भी धन्यवाद के भागी हैं।

बम्बई में इस वर्ष मारवाड़ी सज्जनों के प्रयत्न से "मारवाड़ी कालिज" खुला है। आशा की जाती है कि उसके द्वारा बम्बई में हिन्दी का प्रचार होगा।

हिन्दी की हानि

जहां चारों ओर बराबर हिन्दी की उन्नति हो रही है और इस वर्ष भी हिन्दी का कार्य्य कई अंशों में अच्छा हुआ है, वहां कालचक्र ने हमारी हानि भी की है और वास्तव में बहुत बड़ी हानि की है। इस वर्ष निम्नलिखित हिन्दी के सेवकों, सहायकों और प्रेमियों का देहान्त हो गया है—पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या, पण्डित सखाराम गणेश देउस्कर, पण्डित उमापति द्विवेदी उपनाम नकछेदीराम जी, पण्डित चन्द्रभूषण चतुर्वेदी साहित्य-व्याकरणाचार्य, बाबू साधुचरणजी, बाबू रत्नचन्द्रजी वकील, बाबू हरनामसिंह वर्म्मा, पण्डित भगवानदीन जी मिश्र, पण्डित बालगोविन्द तिवारी, सेठ रामनारायण राठी, माननीय वी० कृष्णस्वामी ऐयर। इन सब सज्जनों के संसार से उठ जाने से हिन्दी के काम में धक्का पहुंचा है, किन्तु इसमें मनुष्य का वश ही क्या। मैं इन सज्जनों के कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति प्रकट करता हूं और समस्त हिन्दी-प्रेमियों की ओर से प्रार्थना करता हूं कि इनकी आत्माओं को सद्गति प्राप्त हो।

आय-व्यय

इस वर्ष सम्मेलन-कार्यालय में जो आय और व्यय हुआ उसका ब्योरा इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय-व्यय का व्यौरा

ता० २४ सितम्बर १९११ से २० दिसम्बर १९१२ तक।

आय	व्यय
१७७५॥।=) पहिले वर्ष की बचत	३४०)॥। कार्य्यालय का खर्च
४११)॥= पैसा फंड	२१॥।-) वक़ालतनामा
५८॥।)॥= व्याज	७२५॥)॥। नागरीप्रचार
४५) सम्बन्ध कराने की फ़ीस	
३००) उपदेशक-सेठ दामोदर दास राठी से प्राप्त	३२॥।-) छपाई और कागज़
	३५॥=)॥। स्टाम्प और तार
२५९०॥≡)। कुल जोड़	२५॥-)॥। फुटकर
	६५=)॥ सामान
	॥)॥ पुस्तकालय
	२०४।=)॥ उपदेशक
	१४५१॥-)॥ कुल जोड़
	११३९-)॥। बचत
२५९०॥≡)। कुल जोड़	२५९०॥≡)। कुल जोड़

धन्यवाद

अन्त में मैं उन सब सज्जनों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अदालतों में हिन्दी प्रचार में अथवा उपदेशक के कार्य्य में या साहित्य-सम्मेलन के पुस्तकालय की पुस्तकों द्वारा सहायता की है। इनमें विशेष कर अपने मित्र प्रयागनिवासी पं० लक्ष्मीनारायण नागर और बाबू नवाबबहादुर, कानपुरनिवासी पं० महेशदत्त शुक्ल और हाथरसनिवासी पं० राधेश्याम शर्म्मा को उनके कचहरी के काम के लिए, सेठ दामोदरदास राठी और नागरी-प्रचारिणी सभा, ब्यावर, को राजपूताना के कार्य्य में सहायता देने के लिए और बाबू चिन्तामणि घोष, अध्यक्ष, इन्डियन प्रेस, बाबू रामनारायण लाल, बुकसेलर, कटरा, प्रयाग, मनेजर भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता तथा अभ्युदय प्रेस, प्रयाग, को अपनी प्रायः सब हिन्दी पुस्तकें भेट करने के लिए धन्यवाद देता हूं।

पुरुषोत्तमदास टण्डन

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग १ } कार्तिक और मार्गशीर्ष संवत् १९७० { अङ्क २-३

हिन्दी भाषा में उच्च शिक्षा देने के उपाय

आजकल चिन्ताशील विद्वान लोगों की बहुधा यह राय है कि मातृभाषा की सहायता से सभी विषयों में, और युनिवर्सिटी की ऊंची से ऊंची कक्षाओं में भी, शिक्षा देनी चाहिए। आजकल अंगरेज़ी की सहायता से छात्रगण एम. ए., बी. ए., आदि उच्च शिक्षा पाते हैं। चेष्टा ऐसी होनी चाहिए कि आगे चलकर यही शिक्षा, जहां जहां हिन्दी का प्रचार है, उन प्रान्ता में हिन्दी द्वारा ही दी जाया करे। हिन्दी के आधार से विज्ञान, साहित्य, भूगोल, गणित आदि सभी पाठ्य विषयों की शिक्षा बहुत अच्छी रीति से और आजकल की बराबरी में बहुत ही थोड़े व्यय से और थोड़े समय में दी जा सकती है। विदेशी भाषा में विषयों की शिक्षा लेने में छात्रों को जितनी कठिनाइयां पड़ती हैं, उनके समझने में जितना परिश्रम करना पड़ता है, और जितना समय लग जाता है, अपनी मातृभाषा में सरल और आधुनिक रीति से शिक्षा मिलने पर वे सब दोष दूर हो जायंगे। छात्रगण थोड़े समय में अधिक विषयों की जानकारी पा सकेंगे। साथ ही अंगरेज़ी साहित्य की शिक्षा भी जारी रहेगी। उसको कुछ भी हानि न पहुंचेगी। कांगड़ी के गुरुकुल में कुछ कुछ इसी ढंग से कार्य्य हो रहा है। अब इस प्रणाली को अधिकतर कार्य्यकारिणी बनाने का भार हमारी हिन्दू यूनिवर्सिटी को भी लेना चाहिए, और जहां तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भव हो, गवर्नमेन्ट को भी इसी प्रणाली का अनुसरण करना चाहिए।

हिन्दी-भाषा के आधार से उच्चशिक्षा देने के लिए इस समय निस्सन्देह कई भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। इसके लिए हिन्दी साहित्य को कुछ काल ही के भीतर—बहुत ही शीघ्र—परिपुष्ट और सर्वतोमुख बना लेना उचित है। इस उद्देश की पूर्ति के लिए कुछ लेखक, अनुवादक और अध्यापकों से साहित्य-सेवा के लिए सांसारिक दूसरे सब झगड़े छोड़ कर जीवन व्यतीत करवाना उचित है। कुछ अनुभवी अन्य-प्रान्तवासी सज्जनों की सम्मति है कि साहित्य-संसार में एक ऐसी नीति का प्रचार कर उन लोगों को यथोचित धन की मासिक सहायता देने का प्रबन्ध होना चाहिए। इस पुण्यकार्य का श्रीगणेश करने के लिए हम हिन्दू धनकुबेरों से आवेदन करते हैं। शिक्षा प्रचार के लिए बम्बई के रायचन्द्र प्रेमचन्द जी के दान ने उनका नाम संसार में अमर बना दिया है। बङ्गाल के भी कई महात्माओं ने शिक्षा विस्तार की इच्छा से बहुत धन दे डाले हैं और उस धन से कार्य्य भी अच्छा हो रहा है। अभी श्रीयुत रासविहारी घोष महाशय के दान की बात सब लोगों की स्मृति में ताज़ी बनी हुई है। प्रयाग में कायस्थ-पाठशाला स्थापन करने के लिए मुन्शी कालीप्रसाद जी ने अपनी सारी कमाई दे डाली है। परन्तु हमारी प्रस्तावित प्रणाली के प्रचार के लिए धन दान करने का यश और पुण्य यदि हिन्दी माता के सुपूत अपने ऊपर ले सकें तो अकेले युक्तप्रान्त में ही नहीं, सारे भारतवर्ष में, सारे संसार में, उनका नाम रह जावेगा और एक बहुत ही बड़े महत्व का कार्य बन जावेगा। इस प्रणाली पर मातृभाषा द्वारा शिक्षा दिये जाने पर हिन्दी-भाषाभाषी बहुत थोड़े समय में अच्छी शिक्षा पाकर भारतमाता की सेवा कर सकेंगे।

हिन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति के उपाय

हिन्दी-भाषा की सहायता से शिक्षा प्रचार करने के लिए जिस उपाय के प्रयोग की आवश्यकता हम ऊपर दिखा चुके हैं, उसी प्रकार साहित्य की सच्ची उन्नति करने के लिए ग्रन्थकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्रदाय के स्वत्वों की रक्षा के लिए भी एक नई संस्था की नींव डाल देने का समय आ पहुंचा है। इस समय हिन्दी पुस्तकों के छापने और सस्ते दामों पर बेचने के लिए एक उपयोगी पुस्तक-प्रकाशक कार्य्यालय की आवश्यकता है। इस समय जो लोग पुस्तक-प्रकाशक हैं, प्रायः वे व्यवसाय के लिए काम करते हैं, वे प्रतिभा का आदर करना नहीं जानते। वे अधिकतर गोल गोल चक्राकार चमकीले ठन ठन बोलनेवाले देवता के उपासक हैं। इसीलिए ग्रन्थरचना की योग्यता रखनेवाले बहुत से विद्वानों को दूसरे उपायों से जीविका ढूंढ़ने की चेष्टा करनी पड़ती है। इससे अब उचित है कि अन्यत्र वर्णित संरक्षण-नीति का उपयोग ग्रन्थ-कार-सम्प्रदाय की रक्षा के लिए भी किया जावे। इस कार्य का होना उतना कठिन नहीं है। एक लाख या प्रारम्भ में पचास हज़ार रुपये की पूंजी से हिन्दी-ग्रन्थ-प्रकाशक-संस्था के नाम से यह उद्योग करना चाहिए। हिन्दी-साहित्य के सभी सेवक इस संस्था में भाग ले सकते हैं। सब लोग मिलकर पांच पांच रुपये का एक एक अंश अपनाकर अनायास पूंजी का धन इकट्ठा कर सकते हैं। पांच रुपया इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए एक ही बार उधार की भांति दे डालना साधारण आय के गृहस्थों के लिए भी असम्भव नहीं है। बड़े लोगों की तो बात ही न्यारी है। वे लोग एक साथ दस, बीस, या सौ, दो सौ अंश भी ले सकते हैं। इस प्रकार बटोरे हुए धन से पहिले आजकल की नवीन रीति पर एक छापाखाना स्थापित किया जावे जहां उत्तमरूप में पुस्तकें छापी जा सकें और उनके जिल्द भी बांधे जा सकें। इसी मुद्रणालय के अधिकारी को पुस्तकों के प्रचार आदि का भी उद्योग करना होगा। और सस्ते दामों पर पुस्तकें भली प्रकार बेंची जा सकती हैं। पुस्तकों की बिक्री से जो आय होगी उसमें से मण्डली पहिले अपनी लागत निकाल लिया करे। तब प्रत्येक पुस्तक के जीवनकाल तक, बराबर, उसके लाभ में से आधा भाग प्रतिमास ग्रन्थकार को दिया जावे। बाकी आधे में से आधा कार्यालय की उत्तरोत्तर भविष्य उन्नति के लिए रख छोड़ा जावे, और लाभ का चौथाई अंश पूंजी का धन उधार देनेवालों को उनके अंशों के अनुसार लौटा दिया जावे। इस रीति से कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में प्रत्येक सहायक का धन उनके पास लौट आवेगा, और हिन्दी संसार में एक सच्चा धर्मानुष्ठान स्थापित हो सकेगा।

हिन्दी भाषियों के लिए कुछ सोचने का मसाला।

वङ्ग-भाषा में "गृहस्थ" नाम की एक मासिक पुस्तक है। उसकी एक संख्या में बंगालियों को, देखिए, कैसा सुन्दर उपदेश दिया गया है। यह उपदेश बंगालियों के लिए है, परन्तु इसमें हिन्दी-भाषियों के लिए भी सोचने के लिए, काम करने के लिए, अपने को उन्नत करने के लिए, बहुत अच्छे स्वास्थ्यकर मसाले भरे हैं। इसलिए उस उपदेश के कुछ अंश का हिन्दी अनुवाद यहां पर दिया जाता है:—

बंगालियों का कर्म्मक्षेत्र और जातीय साहित्य।

'आपलोग बंगला साहित्य को बड़ा बनाना चाहते हैं तो बंगाली जाति को बड़ा बनाइए। बंगला भाषा के भीतर जो सब भावों को लाना चाहते हों तो बंगला समाज को सब बातों में, सब विषयों में, गौरवान्वित करने की चेष्टा कीजिए, बंगाल के मनुष्यों को दूरदर्शी, चौड़े दिलवाले (प्रशस्तहृदय) और चालचलन के साधु (चरित्रवान्) बनाने की तैयारी कीजिए। यदि बंगालियों के साहित्य को विशाल और विपुल विस्तार में देखना चाहते हैं, तो अनेक उपायों से बंगाल देशभर को मानव-समाज में पूज्य वरेण्य, महनीय बना डालिये। बंगाली के कर्मक्षेत्र का विस्तार हो, बंगालियों का चिन्ताराज्य बढ़ने लगे, तब बंगाली जाति का साहित्य मनुष्यजाति के सारस्वतक्षेत्र में सिर ऊंचा करके खड़ा हो सकेगा। बंगाल के समाज में से छोटी बातें, ओछी तुच्छ बातें, स्वार्थ की बातें, नीचाशयता की बातें, दूर हटा दीजिए। इनके बदले असाधारण चिन्ता, असामान्य आलोचना, अनन्त काम की बातें, असाध्य साधन की प्रचेष्टा, असीम प्रेम, और अक्षय ज्ञान की बातें बंगाल के जनगण के हृदयों में, मस्तिष्कों में स्थान पाने लगें। बंगाल के ज़िले ज़िले में पञ्चनद (पञ्जाब) की कथा, महाराष्ट्र की कथा, द्राविड़ की कथा, सिंहल की कथा, आलोचित हुआ करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चनद के ज़िले ज़िले में, द्राविड़ के प्रान्त प्रान्त में, सिंहल के नगर नगर में बंगाल के अनुष्ठान, बंगाल के प्रतिष्ठान, बंगाल के इतिहास की बातें, बंगाली की शिल्प-चतुराई, बंगाली के काम काज की आलोचना हुआ करे। बंगाल के विद्यालय विद्यालय में चीन का साहित्य, जापान का शिल्प, अमेरिका का व्यापार, यूरोप का राष्ट्र बंगाली बच्चों और युवाओं के नित्यप्रति के शिक्षणीय विषय होवें। चीन-जापान के विद्यामन्दिर में, बर्लिन हार्वार्ड केम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में बंगाली का धर्म्म, बंगाली की समाज, बंगाली की रीतिनीति, विभिन्न देशवासी के पाठ्य विषयों में सन्निविष्ट हो जायं। बंगाली दुस्साध्य कार्य आरम्भ करें, असम्भव साधना में लग जावें, बंगाली अपने कर्म्मराज्य का विस्तार करें, विशाल जगत को अपनी चिन्ता का विषय बना लें, —तब बंगाल के साहित्य-सम्मिलन सार्थक होंगे।

"मनुष्य का कर्म्मक्षेत्र ही सब प्रकार के भाव और धारणाओं का कारण है। जीवन के वैचित्र्य और गम्भीरता ही से चिन्ता और आकांक्षा के प्राचुर्य्य और वैचित्र्य का जन्म होता है। इसलिए भाषा और साहित्य को समृद्धिशाली और ऐश्वर्यशाली बनाने के लिए विविध उपायों से सच्चे जीवन के कर्म्मक्षेत्र को विचित्र समस्याओं से पूर्ण और बहुतेरी घटनावलियों से युक्त बनाना पड़ेगा। राष्ट्रीय, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन की समग्रता, सर्वग्राहिता और सचेष्ट कार्य्यपटुता का प्रवेश बिना हुए भाषा अपनी शक्ति प्रकट करने का अवसर नहीं पाती; साहित्य भी अपने को सर्व्वत्र फैलाकर विपुल और वेगवान् नहीं हो सकता।"

"भारतवर्ष की आधुनिक भाषाओं और साहित्यों को परिपूर्ण करने के लिए हम लोगों को भिन्न भिन्न प्रदेशों के रहनेवालों के जीवन जिस प्रकार विचित्र कर्त्तव्यमय और बहुत सी घटनावलिओं के आधार बन सकें, उसकी चर्चा करनी होगी। बंगाली देश और महाराष्ट्र, पञ्जाब और आन्ध्रदेश (यानी मद्रास) जिस रीति से एक दूसरे को आपस में विशेषभाव से सब बातों में अच्छी तरह जान सके, उसका प्रबन्ध करना होगा। एक प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मनुष्य अन्य प्रदेश में जाकर जिस तरह कर्म्मक्षेत्र बना सकें, इसके लिए सहायता करनी होगी। प्रादेशिक भाषाएं भारतवर्ष के सब स्थानों में उच्चशिक्षा के विषय हो सकें, इसकी चेष्टा करनी होगी। इसी भांति हमारे प्रत्येक प्रदेश को दूसरे प्रदेशों से अनेक उपायों से नातेदारी करनी होगी।

"इसके सिवाय संसार के दूसरे देशों के साथ भी भारतवर्ष का सम्बन्ध गहरा बनाना होगा। भारतवासी जिस तरह भिन्न भिन्न जातियों में रह कर भी अपने अपने समाज में विद्या में, वाणिज्य में और दूसरे और और कार्यों में प्रतिष्ठा पा सकें, उसके लिए भी चेष्टा करनी होगी। भिन्न राष्ट्रों में कर्मचारियों के पद पर नियोजित होकर जिससे हमारे देश के शिक्षित मनुष्य विदेश ही में जीवन बिता सकें, जिससे भिन्न देशों में हमारे समाज, धर्म और साहित्य की आलोचना करके शिक्षित जातियों की सहानुभूति आकर्षित कर सकें, और जिससे भिन्न सभ्य जाति की राष्ट्रीय व्यवस्था, व्यापार और धर्म्मजीवन हमारे देशों में विस्तार के साथ आलोचित हो सके, इन सबके लिए उपाय करना होगा। फ्रेञ्च और जर्मन, कम से कम इन दो यूरोपीय भाषाओं को भारतवर्ष की उच्चशिक्षा-पद्धति में भली प्रकार चलाना होगा"।

हिन्दी-भाषा के रसिकों को देखना चाहिए कि यह उपदेश असल में वङ्गभाषा-भाषियों के लिए होने पर भी इसमें कैसी व्यापक और उदार नीति का आभास मिलता है। अब सब प्रान्तवासी इस बात को समझने लगे हैं कि सब भेदभाव भूल कर आपस के मेल से विश्वव्यापी व्यापक-नीति से कार्य करना होगा।

ग्राम्य कविता

जो लोग कानों को सुख पहुंचानेवाले छन्दों द्वारा शब्दों से शब्दों को जोड़कर वाक्यों की छटा से सबको मोहने की चेष्टा करते हैं, अशिक्षित साधारण लोग उन्हींको कवि कहकर उनका आदर करते हैं। ऐसे कवि और उनके काव्यों के परीक्षास्थल कान हैं। कविता भी सुरताल से पढ़ी वा कही जाती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसीके साथ साथ शरीर भी विविध ढंग से नाचने लगता है। फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, बंगला और संस्कृत आदि भाषाओं में ऐसे काव्यों की कमी नहीं है। भाट, कत्थक आदि गवैये इसी श्रेणी के कवि हैं। इन्हें किसी नाम से पुकारना चाहें तो इनका नाम शाब्दिक कवि रखना अनुचित न होगा। क्योंकि शब्द-विन्यास की चतुराई को छोड़ इनकी कविताओं में और कुछ नहीं रहता। कभी कुछ रहता भी हो तो वह स्वादग्राही मनुष्य के योग्य नहीं समझा जाता। सहृदय मनुष्य काव्य की खोज में कुछ और ऊपर चढ़ते हैं। वे छन्दोबद्ध वाक्यों ही को सुनकर पूरा आनन्द नहीं पाते। वे काव्य में भाव का भी अन्वेषण करते हैं। वे कानों से नहीं, हृदय से सुनते हैं।

परन्तु यहां पर हमारी दृष्टि भावुक कवियों की काव्यपिपासा पर नहीं है। हम पूछते हैं, "बजरिया में नजरिया लगाय गयो सँमरिया" को गानेवाली कोकिल-कंठवाली ग्राम्यरमणियों को किसने कविता सिखलायी? चक्की के घरघर निर्घोष से विदेश जानेवाले सँइया की स्मृति में कोमल रागिणी की तानलय मिलाने वाली विरहिनियों को अपने तापतप्त अन्तःकरण की करुणवेदना प्रकाश करने की भाषा किस निर्झर से फूट निकली? इस श्रेणी के नारीकाव्यों की रचना करनेवाली स्त्रियां भी तो कवि ही न हैं? उनके काव्य में चाहे पिंगल के नियम, शब्दों की छटा, और सभ्यसमाज के उपयोगी रस का आभास न मिलते हों, फिर भी हमारी स्वल्पबुद्धि में व शाब्दिक कवि हैं, क्योंकि उनकी असंलग्न कविता हमारे समान सूखे साखे नीरसमस्तिष्क वाले नराधमों के कर्णों को भी आकृष्ट करने की पूरी शक्ति रखती है, और कभी कभी उनके हृदय की वेदना से समाज की बहुत सी सच्ची बातें हृदय में एक प्रकार का भाव उत्पन्न कर ही देती हैं। हमने बहुधा सोचा है, इनकी कविताओं का यदि संग्रह हो सके तो काव्य-संसार के किसी अंग का इतिहास, ग्राम्यसमाज की मानसिक-वृत्ति तथा सामाजिक तत्वों के उपोद्घात आदि खोजने का मसाला हाथ लग सकता है। एक ठकुरानी जी ने—जो एक मित्र की हृदयलक्ष्मी हैं—हमारे आग्रह करने पर अपने प्रान्त की चक्की-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीतों का सग्रह करने की हामी भरी थी। परन्तु अभी तक वह इस कार्य को पूरा नहीं कर सकी हैं। क्या हम अपने सब पाठक पाठिकाओं से इन निरक्षर अशिक्षिता कवि नारियों के हृदयोच्छ्वासों का संग्रह करने की प्रार्थना कर सकते हैं? यदि सब सज्जन इस प्रकार के एक-एक भी चक्की-संगीत यथावत् भाषा में लिखकर मेरे पास भेजेंगे तो सम्भव है, काव्य के इस अंग का भी एक अद्भुत ग्रन्थ किसी समय साहित्यसेवियों के विनोद के लिए प्रकाशित हो सकेगा।

गङ्गाभरण

पण्डित नन्दकिशोर मिश्र उपनाम लेखराज रचित, तथा उनके पौत्र पण्डित कृष्णविहारी मिश्र, बी. ए., केनिंग कालेज, लखनऊ द्वारा प्रकाशित। डिमाई अठपेजी के ६+१४+१०० पृष्ठ। प्रकाशक से प्राप्य। मूल्य ।=), [१६११]

लेखराजजी (सं० १८८८—१९४९) सीतापुर ज़िला के अन्तर्गत गंधौली ग्रामनिवासी एक अच्छे कवि हो गये हैं। शिवसिंह-सरोज में आपका वर्णन करते हुए जिस ग्रन्थ का नाम लेखक ने भूल से "गङ्गाभूषण" लिखा है वह यही गंगाभरण है, जिसे भूमिका और और संक्षिप्त जीवनचरित समेत उनके सुयोग्य पौत्र ने प्रकाशित किया है। कागज़ और छपाई साधारणतः अच्छी है, किन्तु हिन्दी का कुछ ऐसा दुर्भाग्य है कि शुद्ध छपाई विरले ही होती है। इस ग्रन्थ में प्रेस के प्रेत के सिवा प्रकाशक का समयाभाव भी उन भूलों का कारण जान पड़ता है जो शुद्धाशुद्धिपत्र होते हुए भी रह गयी हैं। जैसे मनहरण नं० ८३ में "कहे" "सापने" "पुजवारे" वा दोहा नं० २१५ में "अहं" जो कदाचित् "अहै" के बदले छप गया है। इन अशुद्धियों से पाठकों को अर्थ समझने में जो भ्रम होता है वह कविता के प्रसादगुण को नष्ट कर देता है। शुद्धाशुद्धि-पत्र को तो ग्रन्थ की बुरी छपाई का सर्टिफ़िकेट समझना चाहिए। किन्तु हमारे प्रेसों में लज्जा का भाव या तो कुंठित हो गया है, या शायद उनके हृदय में उसका उदय ही नहीं हुआ। यदि अशुद्धियाँ न होतीं तो इन्ही दो पृष्टों में योग्य प्रकाशक महाशय अकारादि क्रम से अलंकारों की एक अनुक्रमणिका दे देते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती। "कविवर लेखराजजी" वस्तुतः कवि थे और अच्छे कवि थे। माध्यमिक काल के कवियों में प्रायः काव्यरचना की यही एक शैली थी कि वे बहुधा नायिका-भेद, नखसिख अलङ्कारादि पर ग्रन्थ लिखकर नियमों के उदाहरण के बहाने सब अंगों में अपना रचना-कौशल दरसाते थे और अपना नाम चिरस्थायी करने के लिए बहुत अच्छा उपाय कर जाते थे। चन्द, सूर, तुलसी, जायसी, विहारी आदि कुछ को छोड़ केशव, देव, दास, तोषनिधि, पद्माकर मतिराम प्रभृति सब ही कवियों ने इस रीति का अनुसरण किया है। लेखराज जी यद्यपि इस नियम के अपवाद नहीं थे, तथापि इतना कहा जा सकता है कि इन्होंने यह अलङ्कार ग्रन्थ सच्ची भक्ति के भाव से लिखा है।

गंगाजी की स्तुति में पद्माकर की गंगालहरी प्रसिद्ध है और पहले की है। यदि हम गंगाभरण की कविता की तुलना करना चाहें तो साथ ही साथ गंगालहरी को भी पढ़ना चाहिए। दोनों को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह अवश्य प्रतीत होगा कि पद्माकर की कविता अधिक प्रसादगुणवाली है, तथा पद्माकर की अपेक्षा लेखराजजी ने कवियों के प्रयोग-स्वातंत्र्य से (Poetic License) अत्यधिक काम लिया है। प्रकाशक इस बात को अपनी भूमिका में स्वीकार भी करता है, किन्तु हमारी राय में इस दरजे की "निरंकुशता" कम से कम इस शताब्दी में क्षम्य नहीं है। हम मानते हैं कि पद्य-रचना में कवियों को किसी हद तक निरंकुश होना पड़ता है, किन्तु गद्य-साहित्य का ज्यों ज्यों विस्तार होता है त्यों त्यों पद्य में निरंकुशता की सीमा संकुचित होती जाती है। लेखराज के पहले के कई कवियों ने उनसे भी अधिक स्वातंत्र्य से काम लिया है, किन्तु हम इसे कभी सराहनीय नहीं कहते। हमारे कवि शब्दालङ्कार की ओर इतना अधिक झुके हुए हैं कि अनुप्रास के लिए साधारण व्याकरण का गला घोटने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता। लेखराज की कविता में भी इसका उदाहरण कई जगह मिलता है। मनहरण नं० ८३ में ही "नीति रीति" के स्त्रीलिंग होते हुए "धारे" की जगह "धारी" ही शुद्ध होता, किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तीनों अन्त्यानुप्रासों के कारण "धारे" लिखना पड़ा। इसी तरह सवैया नं० २४८ में, जिसको जीवनचरित में उद्धृत किया गया है, पहले चरण के अन्त्यानुप्रासमें "भयो वास परे हैं" में "भयो हैं" पद आता है। "है" इसलिए नहीं लिख सकते कि और तीनों चरणों में "हैं" ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त "मुनीश की" जगह "मुनेश" और "खगेश" की जगह "खगीश" का प्रयोग भी जान बूझकर अनुप्रासों के लिए हुआ है। अब ऐसा प्रयोग क्षम्य नहीं समझा जाता, और अर्थ की गम्भीरता तथा गौरव को मूल और कोरे शब्दालङ्कार को गौण समझना ही उचित है। "कवयः परितुष्यन्ति नेतरे कविसूक्तिभिः" के अनुसार कवि न होने के कारण सम्भव है कि हमने कवि के श्रम को सम्यक-रीत्या न समझा हो, तथापि इतना कहने की धृष्टता हमको लेखराज और पद्माकर को साथ साथ पढ़ने से आती है। सहृदय पाठकों के विनोदार्थ हम उभय कवियों की रचना से ऐसे पद्य चुनते हैं, जिनमें भाव, अलङ्कार वा कल्पना की समानता है, यथा—

(तृतीय विभावना का उदाहरण)

लेखराज

मरो एक कामी क्रोधी कलही कृतघ्नी क्रूर,
कोढ़ी कृमि क्लेश ते न नेकहुँ हलो गयो।
कौन कहै मौन भली जौन भई पौन परसि[1],
गंगजल ताके भौन गौन कै भलो गयो।
लेखराज देवराज साज सब लीन्हे ठाढ़े,
अप्सरा विमान ह्वै ते नेक न छलो गयो।
दूत दबकाय चित्रगुप्तहिं[2] चकाय जमराजहिं,
जकाय शिवलोकहिं चलो गयो। १४३॥

पद्माकर

तहां आई भूमिते लगाई आसमान हुं लों,
जान गीरवान औ विमानन के लगे थोक।

(१) द्वितीय पद का भाव स्पष्ट नहीं है।
(२) पुस्तक मे 'चित्रगप्त हिंचकाय' है। हमारी समझ में 'चित्रगुप्तहिं चकाय' का यह "दशरा मशराः" रूप है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै पदमाकर जो कोऊ नर जैसे तैसे,
तन देत गंगातीर तजिकै महान शोक ॥
सो तौ देत व्याधै विष, दुश्मन दिनाई देत,
पापन के पुंज को पहारन को ठोक ठोक ।
दगा देत दूतन, चुनौती चित्रगुप्तै देत,
जमको जरब देत, पापी लेत शिवलोक ॥३४॥

("षष्ठम विभावना" का उदाहरण)

लेखराज ।

कहै लेखराज खगराज जाय आजिज़ी सों,
हरिसों कहत बात चुगुली समाजती ।
हौं तौ भयो विकल सकल पापी लादि,
लादि लेन देत कल न अधिकतर गाजती ॥
कौन परी बान आन, निपट मलान मन,
तजी कुलकान तापै नेकऊ न लाजती ।
छोह तुअ तजि निरमोह ताको भजि,
गंगा तोहीते उपजि नित तोही उपराजती ॥१४६॥

("द्वितीय विशेष' का उदाहरण)

पद्माकर ।

यम को न जोर जब पापिन पै चल्यो तब,
हाथ जोरि गंगाजू सों विनती करै खरे ।
बड़ेन पै ढरौना पै ढरौ देवि तुच्छन पै,
कहै पद्माकर सुनावत हरे हरे ॥
बड़ेन पै ढरे बड़ी पाइये बड़ाई देखौ,
ईश पै ढरीं तौ तुम्हें ईश शीश पै ढरे ।
तुच्छन को देती जैसो नारायन रूप तैसो,
तुच्छ तुम्हें तुच्छ करि पायन तरे करे ॥२६॥

लेखराज ।

तरु मैं औ तीर मैं औ तोय औ तरंगन मैं,
तरकी न जात है तुरत सो निकारी सी ।
रेत मैं औ खेत मैं औ सेत मैं औ हेतहू मैं,
देत है दिखाई लेत सब जन्म हारी सी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाउन के झौर हू में पारावार दौर हू में,
रोरहू में जलके सुभौंर हू में भारी सो।
कहै लेखराज मैं निहारी गंगा सारी ठौर,
मुकति बिचारी फिरै मारी दई मारीसी ॥१८६॥

पद्माकर।

रेनुका की रासन में कीच कुस कासन में,
निकट निवासन में आसन लदाऊ के।
कहै पदमाकर तहाँई मंजु सूरन में,
धौरी धौरी धूरन में पूरन प्रभाऊ के॥
वारन में पारन में देखहु दरारन में,
नाचति है मुकुती अधीन सब काऊ के।
फूल औ कछारन में गंगाजल धारन में,
मँझरा मझारन में झारन में झाऊ के॥ २१॥

विस्तारभय से अधिक उदाहरण न देकर रसज्ञ पाठकों से हमारा अनुरोध है कि लेखराज के १८६ से पद्माकर का ३, लेखराज के १६८ से पद्माकर का ४, इसी तरह और भी समान-कल्पना की रचना मिलावें। हमने जो पहले कहा है उसकी पुष्टि हो जायगी।

पिछले कवियों में पद्माकर मनहरण और कवित्त लिखने में बड़े सिद्धहस्त थे एवं रसिक लोग प्रायः इन्हें बड़ी उच्च पदवी देते हैं। हमने पद्माकर से यदि लेखराज की रचना का मिलान किया तो इसी अभिप्राय से कि लेखराज को उनके दोषों के होते हुए भी हम सुकवि समझते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि कहीं कहीं लेखराज की रचना बहुत ही अच्छी हो गयी है जो पद्माकर से कम नहीं है; मर्मज्ञ पाठक २८, २१२, २१६, २६७, ३२८, ३३०, ३४१, ३४५ इत्यादि पढ़ कर देख लें। कहीं कहीं तो लेखराजजी पद्माकर से भी बढ़ गये हैं, यथा—

(तृतीय विषम का उदाहरण)

लेखराज

देव नदी तट एक दिना,
लेखराज कहूं खगराज विराजो।
धारि में व्याल विलोकि गहो तेहि,
भच्छिवे को जो मनोरथ साजो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटत प्रान लखो तहं अद्भुत,
कौतुक एक नयो उपराजो।
अंग[1] अहीश खगीश के आनन,
प्रान गोबिन्द ह्वै कंध पै गाजो ॥ १६५ ॥

पद्माकर

भारी सो भुजंग भागीरथी के सुतीर पर्‌यो,
ताहि लखि खाइबे को तरक्षुत पार भो।
कहै पद्माकर चतुर्भुज को रूप भयो,
बड़े बड़े पापनि हूं ताप को तिसार भो॥
नारद बिसारद ह्व सारद सराहैं भले,
इन्द्र यम बरुन कुवेर परिवार भो।
गंगा को प्रभाव लखि मुकुति मजा की मंजु,
सोई अहि गरुड़ के कन्ध पै सवार भो ॥५५॥

इसी तरह लेखराज़ का २५० पद्माकर के ४० की अपेक्षा कहीं अच्छा बन पड़ा है। विस्तारभय से यहां नहीं देते।

अलङ्कारों के लक्षण प्रायः अच्छे हैं, ठीक हैं और उदाहरण भी बुरे नहीं हैं। पर इसमें भी वही पुरानी रीति है। तब भी पुस्तक हर तरह से संग्रह करने योग्य है और इसी प्रकार और ग्रन्थों का भी छपवाकर उद्धार करना चाहिए। हमारी समझ में अलङ्कारों के लक्षण सोदाहरण कंठ करने को भाषा-भूषण अच्छा बल्कि बहुत अच्छा है, पर ठीक ठीक समझने के लिए कम से कम लक्षणों का गद्य में होना बहुत ही आवश्यक है। बहुत दिन हुए रसिक-वाटिका में पूर्णादि प्रसिद्ध कवियों ने इस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया था। पर वह पत्रिका के बन्द हो जाने पर अपूर्ण ही रह गया। अब तक हमने भाषा गद्य में अलङ्कार-ग्रन्थ कोई नहीं देखा है।[2] यदि ऐसा कोई ग्रथ बने तो कम से कम विद्यार्थियों को बड़ा लाभदायक होगा। रामदास गौड़, एम. ए.

---

(१) "अहीश खगीश' के स्थान में सहज ही "फनेस खगेस' हो सकता था. (फणा+ईशः=फणेशः); परन्तु "अंग' और "अहीश"' में जो "अ' का अनुप्रास है सो कैसे बनता? (२) भाषा गद्य में सेठ कन्हैयालाल पोद्दार प्रणीत 'अलङ्कार प्रकाश" नाम का एक ग्रन्थ श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ है और हमारी समझ में वह अच्छी रीति से लिखा गया है —सं. स. प.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भाषा में वैद्यक का एक ग्रन्थ

अनुभूत चिकित्सासागरः

(पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध)

अजमेरनिवासी आयुर्वेदपञ्चानन पण्डित गङ्गाप्रसाद दाधीच त्रिपाठी की बनायी हुई यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य में एक ही है। इसमें "औषधियों के नाम, गुण और अङ्गों का वर्णन विस्तार के साथ पूरा पूरा किया गया है। इसमें दी हुई औषधियों के मारवाड़ी, गुजराती, मराठी, बंगला, पञ्जाबी, तैलङ्गी, द्राविड़ी, कर्णाटकी, अरबी, फ़ारसी, लैटिन, अंगरेज़ी, आदि भाषाओं के पर्यायवाची शब्द भी दिये हैं। औषधियों की प्रयोगविधि और किन किन रोगों पर कितनी तथा किस प्रकार देनी चाहिए, यह भी दिया है। इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य का एक अभाव पूर्ण हुआ है। हमारे जान में यह पुस्तक हिन्दी में पहिली ही है।

हिन्दी-परीक्षा की नियमावली।

[यह नियमावली गत वर्ष मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ६ और ७ संवत् १९६९ (ता० १५-१६ दिसम्बर) के स्थायी समिति के अधिवेशन में स्वीकृत हुई थी, किन्तु इस पर समयाभाव से तृतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में विचार न हो सका। अतः आगामी चतुर्थ हि. सा. सम्मेलन में यह विचारार्थ उपस्थित की जायगी। यह विषय बड़े महत्व का है। इस कारण सब हिन्दी प्रेमियों को और विशेष कर स्थायी समिति के सभासदों को चाहिए कि इस में यदि वे कुछ परिवर्त्तन आवश्यक समझते हों तो शीघ्र सम्मेलन के मंत्री को उसकी सूचना दे दें—सं. सं. प.]

(१) हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की ओर से उसके उद्देशानुसार प्रतिवर्ष हिन्दी में निम्न लिखित उपाधियों के लिए परीक्षाएं ली जायंगी:—

(क) साहित्योपध्याय।

(ख) साहित्य-भूषण।

(ग) साहित्याचार्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इन परीक्षाओं के प्रबन्ध के लिए एक परीक्षा-समिति होगी जिसमें ५ सभ्य होंगे, जो प्रति वर्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में निर्वाचित किये जायंगे।

(३) परीक्षा-समिति के सभ्यों का निर्वाचन स्थायी समिति के सभ्यों में से ही होगा।

(४) परीक्षाओं के स्थान, समय और ग्रन्थों का निर्धारण; परीक्षकों की नियुक्ति, परीक्षाओं के फल का विवरण और परीक्षा सम्बन्धी अन्य आवश्यक विषयों का प्रबन्ध परीक्षा-समिति करेगी।

(५) परीक्षा-समिति का मुख्य स्थान सम्मेलन-कार्यालय होगा।

(६) प्रत्येक परीक्षार्थी एक वर्ष में एक ही परीक्षा दे सकेगा।

(७) सभी देश सभी जाति और अवस्था के परीक्षार्थी उक्त परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

(८) परीक्षार्थी पहली परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर दूसरी और दूसरी में उत्तीर्ण होने पर तीसरी परीक्षा में समिलित हो सकेगा।

(९) हिन्दी-परीक्षाओं में केवल हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहर होगा।

(१०) परीक्षा के समय और स्थान आदि की सूचना परीक्षा, समय से चार महीने पहले समाचारपत्रों के द्वारा दी जायगी।

(११) प्रति वर्ष होनेवाले सम्मेलन के अधिवेशन से कम से कम दो मास पूर्व ही परीक्षा लेली जायगी।

परीक्षा-फल आगामी सम्मेलन के पहले समाचारपत्रों में प्रकाशित कर दिया जायगा और सम्मेलनोत्सव में भी सुनाया जायगा।

(१२) एक बार अनुत्तीर्ण होने पर दूसरे वर्ष फिर परीक्षा ली जायगी। परन्तु दूसरी या तीसरी बार उन्हीं विषयों में परीक्षा ली जायगी जिनमें पहले वर्ष उत्तीर्णता न प्राप्त की हो। किन्तु यदि कोई परीक्षार्थी तीन बार किसी परीक्षा में सम्मिलित होने पर भी उत्तीर्ण न हो, तो उसे फिर सब विषयों में परीक्षा देनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) परीक्षार्थियों को सम्मेलन के छपे आवेदनपत्र के फ़ार्म को* भर कर परीक्षा से तीन महीने पहले ही सम्मेलन-कार्यालय भेज देना होगा। आवेदन पत्र के साथ नीचे लिखी रीति से शुल्क आना चाहिए:—

१—साहित्योपाध्याय ... ... १)
२ - साहित्य-भूषण ... ... २)
३—साहित्यचार्य ... ... ३)

आवेदन पत्र ठीक समय पर न आने से परीक्षा में सम्मिलित होना असाध्य हो जायगा।

(१४) आवेदन पत्र का फ़ार्म इस प्रकार होगा:—

आवेदन पत्र।

ता०..................

महोदय,

मैं हिन्दी-परीक्षा देना चाहता हूं। नियमानुसार शुल्क भेजता हूं मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके परीक्षा-सम्बन्धी सभी नियमों का मैं पालन करूंगा।

....

हस्ताक्षर परीक्षार्थी

नाम
पिता का नाम
आयु
मातृ भाषा
धर्म्म
जाति
व्यवसाय
स्थान (पूरा पता)
परीक्षा-स्थान
परीक्षा-नाम
पहले कोई परीक्षा दी हो तो उसका उल्लेख जैसे कब दी, कहां दी, क्या फल रहा।

मुझे विश्वास है कि यह आवेदक सदाचारी है और परीक्षा देने योग्य है.

....

नगर के किसी प्रसिद्ध हिन्दी प्रेमी के हस्ताक्षर।

---

* यह फ़ार्म सम्मेलन-कार्यालय से मांगने पर बिना मूल्य मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे विश्वास है यह आवेदक सदाचारी है और परीक्षा देने योग्य है।

....

नगर के किसी प्रसिद्ध हिन्दीप्रेमी के हस्ताक्षर।

---

(१५) उत्तीर्ण होने के लिए अङ्क-प्राप्ति—

'उपाध्याय' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ३५ अङ्क प्राप्त करने होंगे। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के तीन विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे परीक्षार्थी होंगे जो सब विषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क पावें। द्वितीय श्रेणी में वे होंगे जो ४० या उससे अधिक प्रति सैकड़ा अङ्क पावेंगे। तृतीय श्रेणी में वे होंगे जो ३५ या उससे अधिक प्रति सैकड़ा अङ्क प्राप्त करेंगे।

'साहित्य-भूषण' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ४० अङ्क प्राप्त करने होंगे। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के दो विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे परीक्षार्थी होंगे जो सब विषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ५५ या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे। दूसरी श्रेणी में वे होंगे जो ४० या उससे अधिक अङ्क प्रति सैकड़ा पावेंगे।

'साहित्याचार्य' परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक विषय में परीक्षार्थी को प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करने होंगे। इस परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के २ विभाग होंगे। प्रथम श्रेणी में वे गिने जायंगे जो सब विषयों के अङ्क मिलाकर प्रति सैकड़ा ६० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे। दूसरी श्रेणी में वे होंगे जो प्रति सैकड़ा ५० या उससे अधिक अङ्क प्राप्त करेंगे।

(१६) प्रत्येक सम्मेलन में पिछली परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सभापति उपाधियां प्रदान करेंगे।

प्रथम श्रेणी में सर्वोत्तम उत्तीर्ण को पदवी-प्रदान के अतिरिक्त उत्तम पारितोषिक तथा विशेष प्रतिष्ठासूचक पदक भी मिलेगा।

(१७) साहित्योपाध्याय परीक्षा निम्नलिखित विषयों में होगी:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र— पद्य
तृतीय पत्र—लेख लिखाना—गद्य और पद्य
चतुर्थ पत्र—गणितः—
(१) अङ्कगणित
(२) रेखागणित
पंचम पत्र—भूगोल—एशिया
षष्ठ पत्र—इतिहास—
भारतवर्ष का प्राचीन और आधुनिक
सप्तम पत्र—स्वास्थ्य रक्षा

(१८) साहित्य-भूषण परीक्षा में निम्नलिखित विषय होंगेः—
प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र—साहित्य—पद्य
तृतीय पत्र—गद्य तथा कविता लिखना
चतुर्थ पत्र—गणित—अङ्कगणित पूरी, रेखागणित और
बीजगणित
अथवा विज्ञान।
पंचम पत्र—इतिहास—
भारतवर्ष, इङ्गलैंड
षष्ठ पत्र—अर्थशास्त्र
सप्तम पत्र—धर्म्मशास्त्र और नीति

(१९) साहित्याचार्य परीक्षा में निम्नलिखित विषय होंगे :—
प्रथम पत्र—साहित्य—गद्य
द्वितीय पत्र—पद्य साहित्य
तृतीय पत्र—गद्य पद्य लिखना
चतुर्थ पत्र—भाषा-विज्ञान और भाषा का इतिहास
पंचम पत्र—अर्थशास्त्र
षष्ठ पत्र—दर्शन
सप्तम पत्र—इतिहास—
भारत, इङ्गलैंड, यूरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन—यदि कोई सज्जन इस नियमावली में कुछ संशोधन की आवश्यकता समझें तो वे कृपा करके अपनी सम्मति मिती मार्गशीर्ष कृष्ण ६ (ता० २२ नवम्बर १६१३) तक सम्मेलन-कार्यालय में भेज दें, जिसमें सम्मेलन की स्थायी समिति के आगामी अधिवेशन में वह उपस्थित की जा सके।

श्रीनरेन्द्रनारायणसिंह,

सहायक मंत्री, हि० सा० सम्मेलन—प्रयाग।

भागलपुर में हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी

इस बार तारीख़ ७, ८, और ६ दिसंबर को भागलपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का चौथा वार्षिक अधिवेशन होगा। इस अवसर पर भागलपुर के कुछ सज्जनों ने साहित्यविषयिनी एक प्रदर्शनी खोलने का उत्तम विचार किया है। यह प्रदर्शनी ५ वीं से १२ वीं दिसम्बर तक खुली रहेगी और उसने प्राचीन लिपि, हिन्दी के प्रकाशित पुस्तकों, शिला लेखों, मुद्राङ्कण और ताम्रपत्रलेखों इत्यादि का संग्रह करने का अनुष्ठान किया है। प्रदर्शनी का कार्य्य एक समिति के निरीक्षण में हो रहा है, उसके कार्य्यकर्त्तागण की नामावली इस प्रकार है--

सभापति—बनैली राज्याधीश माननीय कुमार कीर्त्यानन्द सिंह बहादुर, बी. ए.।

उपसभापतिगण—राय शिवशंकर सहाय बहादुर, सी. आई. ई., बाबू देबीप्रसाद मारवाड़ी, बाबू रघुनन्दनलाल, पण्डित भगवानप्रसाद चौबे।

मन्त्री—बाबू गणेशलाल। उपमन्त्री—श्रीकृष्ण मिश्र।

सहायक मन्त्री—पण्डित रामलोचन पाण्डेय।

सभासदगण—रेवरेण्ड सी. एस. कलन, रेवरेण्ड एस्. के. तरफ़दार, बाबू अवधविहारी सिंह, पण्डित श्यामजी पाण्डेय, बाबू श्रीकृष्णप्रसाद, बी. एल्., बाबू मुरलीधर सराफ, बी. एल., बाबू रामसरेख सिंह, बाबू पूर्णमल्ल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शनी से क्या क्या लाभ है उसे दिखाने की विशेष आवश्यकता नहीं। सभी लोग इसे भली प्रकार समझते हैं। इस विषय में इतना कहना ही बहुत होगा कि साहित्य के जिज्ञासुओं को एक स्थान पर इकट्ठा की हुई साहित्य-सम्बन्धी वस्तुओं को देख कर उन से कितनी ही नई नई बातों का पता लगाने का अवसर प्रदर्शनियों द्वारा मिलता है जो किसी दूसरी तरह होना सम्भव नहीं। जिन सज्जनों के पुस्तकालयों में, परोपकार आदि के उद्देश्य से, प्राचीन लिपि आदि रखी हुई हैं, उनको देखने वा पढ़नेवाले उसी स्थान के लोग हो सकते हैं; परन्तु हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी माता के प्रायः सभी सुपूत उपस्थित होंगे। उस समय यदि उन सज्जनों की वस्तु इस प्रदर्शनी में उपस्थित होगी तो उन्हें देखकर बड़े बड़े साहित्यसेवी लाभ उठावेंगे और साथ ही उनके पुस्तकालयों की ख्याति भारत में फैलेगी तथा उनकी परोपकारिता की भी पूर्ण सफलता होगी।

प्रदर्शनी के नियम

(१) इस प्रदर्शनी का नाम "हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी" होगा। (२) इसमें प्राचीन और अर्वाचीन हिन्दी-साहित्य-सम्बन्धी शिला-लेख-लिपि, ताम्र-लेख, मुद्राङ्कण प्रभृति जितने प्रकार की हिन्दी-सम्बन्धी वस्तुएं होंगी सब रहेंगी। (३) प्रत्येक विषय के लिए भिन्न भिन्न स्थान और भिन्न भिन्न प्रबन्ध रहेंगे और बिना प्रदर्शनी-कमेटी की मंजूरी के किसीको स्थान–परिवर्त्तन करनेका अधिकार नहीं होगा। (४) प्रदर्शनी-कमेटी को अधिकार रहेगा कि जिस वस्तु को वह रखना उचित न समझेगी, अथवा जिस वस्तु को जहां रखना उचित समझेगी वहां रखेगी। (५) प्रदर्शनी में दिखाये जाने योग्य पुस्तकादि भेजनेवालों से निवेदन है कि वे प्रदर्शनी-कमेटी के मन्त्री को नीचे दिये हुए फ़ार्म के अनुसार पुलिसकेप साइज पर अपनी वस्तुओं का विवरण ७वीं नम्बवर तक भेज दें। (६) जो वस्तुएं प्रदर्शनी में आवेंगी उनके लिए किसी प्रकार की फ़ीस नहीं ली जायगी। (७) सब प्रकार की वस्तुओं के दर्शकगण अपने अपने निर्द्धारित स्थान पर ही देख सकेंगे। किसी किसी वस्तु को हाथ से छूना या और किसी प्रकार की हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचाना मना रहेगा। (८) प्रदर्शनी में जितनी वस्तुएं आवेंगी उनके मंगाने और भेजने का ख़र्च प्रदर्शनी-कमेटी देगी, और सब वस्तुएं भागलपुर हिन्दी-सभा से नियत एक कमेटी के निरीक्षण में रहेंगी। जो सज्जन या सभाएं अपनी वस्तु प्रदर्शनी में भेजेंगे, उनको अधिकार होगा कि उसकी देख भाल और रक्षा के लिए किसी अपने विश्वासी व्यक्ति को भेज सकें, पर भेजे हुए व्यक्ति के ख़र्च का प्रबन्ध उन्हें स्वयं करना होगा। विशेष अवस्था में कमेटी विचार करेगी। (१०) प्रदर्शनी-कमेटी से प्राप्त प्रवेशपत्र के बिना प्रदर्शनी में जाने का अधिकार किसीको न रहेगा। (११) प्रदर्शनी के आय-व्यय की अधिकारिणी भागलपुर की हिन्दी-सभा होगी। (१२) यह प्रदर्शनी ५वीं दिसम्बर से १२वीं दिसम्बर तक सम्पूर्ण दिन और ६ बजे रात तक खुली रहेगी, परन्तु हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की बैठक के समय बन्द रहेगी।

(१३) जो सभा या सज्जन प्रदर्शनी में अपनी वस्तु भेजना चाहें उन्हें २१वीं नवम्बर तक अपनी वस्तु को भागलपुर-प्रदर्शनी-कमेटी के पास पहुंचा या पहुंचवा देना होगा। (१४) प्रदर्शनी में आयी हुई वस्तुएं प्रदर्शनी समाप्त हो जाने के दो सप्ताह के भीतर ही उनके स्वामियों के निकट भेज दी जायंगी। (१५) प्रदर्शनी में आयी हुई वस्तुओं की जवाबदेही प्रदर्शनी कमेटी को होगी (१६) हिन्दी पुस्तक बेचनेवाले दूकानदारों के लिए स्थान का प्रबन्ध रहेगा। (१७) प्रदर्शनी सम्बन्धी सब विषयों की लिखा पढ़ी मन्त्री, प्रदर्शनी-कमेटी से करना चाहिए। (१८) प्रदर्शनी में वस्तु भेजनेवालों को यह आवश्यक है कि अपनी वस्तुओं की फेहरिस्त की दो प्रति वस्तुओं के साथ भेजें जिसमें एक प्रदर्शनी-कमेटी के पास रहे और दूसरी भेजनेवाले को रसीद स्वरूप लौटा दी जावे।

प्रदर्शनी को कोई वस्तु भेजते समय इस नमूने के अनुसार पत्र लिखना चाहिए—

ता०..........................

मन्त्री, हिन्दी साहित्य प्रदर्शनी कमेटी,

भागलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशय,

मैं आपकी प्रदर्शनी जो ५वीं दिसम्बर से १२वीं दिसम्बर १९१३ तक होनेवाली है उसमें इस पत्र के साथ भेजी हुई सूची के अनुसार वस्तु भेजना चाहता हूं।

मैं प्रदर्शनी कमेटी के नियम का पालन करूंगा।

भवदीय,

दस्तख़त.................................

पूरा पता ________________________

____

____

भागलपुर हिन्दी-साहित्य प्रदर्शनी, १९१३

नाम पुस्तकादि	संक्षिप्त विवरण	ग्रन्थ-कर्त्ता	कब का लिखा है	भेजने वाले का नाम	मूल्य यदि बिक्री करना हो	कैफ़ियत

मेरे जानते उपर लिखी हुई बातें सच हैं।

दस्तख़त

पत्र व्यवहार

"साहित्य सम्मान"

विदित हो कि हमने २० शिक्षाप्रद समस्याएं तैयार की हैं। जो कवि उनकी पूर्त्ति उत्तमता से करेगा उसको ५) रुपये का मेडल पुरस्कार में दिया जायगा। साहित्य-सेवियों को हमारे साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

२५-१०-१९१३

साहित्य-सेवक
मेलाराम सभापति प्रेमसागर सभा,
ठिकाना, नरसिंहदास हनुमान बक्स
मु० अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा।

संयुक्तप्रान्त में प्रारम्भिक शिक्षा के अधिकतर प्रचार के सम्बन्ध में नैनीताल में सरकार की ओर से जो कमेटी बैठी थी, उसका समाचार सम्मेलन-पत्रिका की आश्विन की संख्या में दिया गया था। इस कमेटी के पास साहित्य-सम्मेलन की ओर से जो निवेदन-पत्र भेजा गया था उसका भावानुवाद हिन्दी-भाषियों की जानकारी के लिए यहां पर दिया जाता है।

श्रीमान् सभापति, प्रारम्भिक शिक्षा-समिति,

नैनीताल।

[इलाहाबाद, तारीख १२ अगस्त, १९१३]

महाशय,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से—जो साहित्य-सेवियों और हिन्दी-साहित्य की उन्नति करने और नागरी को देश की सार्वजनिक लिपि बनाने के लिए भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में उद्योग करनेवाले सज्जनों की एक संस्था है, और जिसकी प्रधान समिति और कार्य्यालय प्रयाग में है—मैं आपकी सेवा में यह निवेदन करता हूं कि आपकी कमेटी कृपा कर इस प्रान्त के तहसीली, हलकाबन्दी आदि देशी भाषा में शिक्षा देनेवाले स्कूलों में किस भाषा में शिक्षा दी जाय इस विषय पर सम्मेलन की निम्नलिखित सम्मति पर ध्यान पूर्व्वक विचार करें। इस बात को सब विचारशील पुरुष स्वीकार करेंगे कि तहसीली स्कूलों में किस भाषाद्वारा शिक्षा दी जाय, इस विषय का प्रारम्भिक शिक्षा के भविष्य से बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है।

गवर्नमेन्ट की इस सूचना से कि वह प्रारम्भिक शिक्षा की उन्नति में अच्छी रकम खर्च करना चाहती है, केवल सार्वजनिक कार्य्यों से सम्बन्ध रखनेवाले लोगों ही को नहीं किन्तु उन बहुत से लोगों को भी जिनका निज की बातों को छोड़ कर प्रायः अन्य विषयों पर ध्यान ही नहीं जाता बड़ी प्रसन्नता हुई है और ऐसा होना उचित है; क्योंकि बालकों को शिक्षा देनेका विषय ही ऐसा है जिससे सब माता-पिताओं की सहानुभूति उत्पन्न होती है। विशेषतः इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्तप्रान्त में शिक्षा का विषय विशेष महत्व का है। हर दसवें वर्ष भारतवर्ष के अन्य बड़े बड़े प्रान्तों की अपेक्षा युक्त प्रान्त में प्रति सैकड़े अनपढ़ लोगों की संख्या बहुत बढ़ती जाती है। गवर्नमेंट के जिस मन्तव्य द्वारा आप की कमेटी सगठित की गई है उसके दूसरे पैरा में जो अङ्क दिये गये हैं वे इस विषय को विशेष रूप से स्पष्ट करते हैं। उनसे पता लगता है कि पढ़ने के योग्य लड़कों में से प्रति सैकड़े स्कूल में पढ़नेवाले लड़कों की संख्या युक्त प्रान्त में १२$\frac{3}{4}$, मद्रास में ३०, बम्बई में २७, बंगाल में २५$\frac{1}{2}$ और मध्य-प्रदेश में १६$\frac{2}{3}$ है। गवर्नमेंट के पास जो साधन हैं उनके होते हुए इन प्रान्तों से अत्यन्त सुगमता पूर्व्वक मूर्खता हटाने के लिए यह आवश्यक है कि इन प्रान्तों में शिक्षा की हीन दशा के कारणों की जाँच की जाय। इस सम्मेलन की सम्मति में इस हीन दशा का एक मुख्य कारण यह भी है कि इन प्रान्तों में सर्वसाधरण को अधिकतर उर्दू में ही शिक्षा दी जाती है। इस उर्दू में ऐसे अरबी और फ़ारसी शब्दों का बहुत अधिक मेल है जो अदालतों, शिक्षित मुसलमानों और उन लोगोंमें, जिन्होंने अरबी, फ़ारसी और उर्दूकी शिक्षा पाई है, प्रचलित होने पर भी जनसमुदाय के लिए बिलकुल विदेशी है और यह ऐसी कठिन विदेशी लिपि में लिखी जाती है जो अदालतों और सरकारी दफ़्तरों में सैकड़ों वर्ष में प्रचलित रहने पर भी अधिकांश लोगों को सर्वथा विदेशी जँचती है और जो उन प्रान्तों से सर्वथा विलुप्त सी हो गई है जहाँ कि अदालतों से उर्दू निकाल दी गई।

यह बात विशेष रूप से विचार करने के योग्य है कि युक्त प्रान्त की दशा कुछ कुछ उसी प्रकार की है या नहीं जैसी अवस्था इङ्गलैंड या जर्मनी की हो जायगी, यदि मान लिया जाय कि अंगरेज़ और जर्मन बालकों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा न देकर एक ऐसी भाषा में शिक्षा दी जाय जिसमें हेब्रू और अरबी शब्द अधिक भरे हों और जो हेब्रू या अरबी लिपि में ही लिखी जाती हो। इसका फल अवश्य ही यह होगा कि इस प्रकार की शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियोंमें बहुत कम विद्यार्थी प्रति सैकड़े अर्थात् केवल वे ही जिनकी बुद्धि बहुत तीव्र है ऐसे व्युत्पन्न निकलेंगे जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्षों में लिखने पढ़ने लग जायं और शेष विद्यार्थी वास्तव में अनपढ़ ही बने रहेंगे। यह सम्मेलन निवेदन करता है कि मद्रास, बम्बई, बंगाल और मध्यप्रदेश में युक्त प्रान्त की अपेक्षा पढ़े लिखे लोगों की संख्या अधिक होने का कम से कम एक कारण यह भी है कि उक्त प्रान्तों में लोगों को अपनी देशी भाषाओं द्वारा, जो देशी अक्षरों में लिखी जाती हैं, शिक्षा दी जाती है। बड़े प्रान्तों में केवल पंजाब ही ऐसा है जो शिक्षा में युक्तप्रान्त से भी पिछड़ा हुआ है किन्तु इसका भी इन प्रान्तों के समान यही कारण है कि वहां की अदालतों और स्कूलों में विदेशी शब्दों और विदेशी लिपि के व्यवहार से लोगों को कष्ट सहना पड़ता है। इसके साथ ही यह बात ध्यान देने की है कि इन प्रान्तों में कुमायूँ डिवीज़न के ज़िलों में जहां स्कूलों और अदालतों में उर्दू की जगह नागरी अक्षरों का प्रचार है पढ़े लिखे लोगों की संख्या बहुत अधिक है अर्थात् वहां की जनसंख्या में पिछली मनुष्य-गणना की रिपोर्ट के अनुसार १००० पीछे १२१ व्यक्ति शिक्षित हैं। इलाहाबाद डिवीज़न में जनसंख्या में १००० पीछे ७३ व्यक्ति शिक्षित हैं। इलाहाबाद डिवीज़न में शिक्षितों की संख्या कुमायूँ से कम किन्तु अन्य सब ज़िलों से अधिक है। पर अन्य डिवीज़नों में भी जहां हिन्दी का अधिक प्रचार है वहां उन डिवीज़नों की अपेक्षा जहां उर्दू का अधिक प्रचार है पढ़े लिखे लोगों की संख्या अधिक है। कुमायूँ के बाद इलाहाबाद में पढ़े लिखे लोगों की संख्या ७३ और बनारस में ७१ हैं, रुहेलखंड, जो युक्त प्रान्त में एक मात्र ऐसा डिवीजन है जहां हिन्दी जाननेवालों की अपेक्षा उर्दू जाननेवाले अधिक हैं वहां पढ़े लिखे लोगों की संख्या सबसे कम है अर्थात् जनसंख्या में १००० पीछे केवल ४४ व्यक्ति पढ़े लिखे हैं; और फ़ैज़ाबाद और लखनऊ में भी जहां उर्दू का अच्छा प्रचार है १००० पीछे केवल ५० और ६० आदमी पढ़े लिखे हैं।

दूसरा विचारणीय विषय-जिसका मूर्खता के दूर करने के उपायों से घनिष्ठ सम्बन्ध है-यह है कि हलक़ाबन्दी स्कूलों में उर्दू पढ़नेवाले कितने फ़ी सदी लड़के ऐसे हैं जो अदालतों, सरकारी दफ़्तरों और लोगों के पत्रव्यवहार के काम में आनेवाली फ़ारसी लिख पढ़ सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक यह भी ध्यान देने की बात है कि अच्छी तरह शिकस्ता लिखने पढ़ने की योग्यता प्राप्त करने के लिए कितने वर्ष की शिक्षा और अभ्यास की आवश्यकता है। हिन्दी जो इस प्रान्त के लोगों की भाषा है और नागरी अक्षरों में लिखी जाती है उसके विषय में ऐसे प्रश्न नहीं उठते क्योंकि वे सब लड़के जिन्होंने लगातार हलकाबन्दी स्कूलों में या अन्यत्र हिन्दी की शिक्षा पाई है वे आजीवन नागरी अक्षरों में लिख पढ़ सकते हैं और वास्तव में वे ही शिक्षित कहलाने के अधिकारी हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि आपकी कमेटी इस विषय पर भी विचार करेगी कि हलकाबन्दी स्कूलों में किन किन विषयों की शिक्षा देना आवश्यक है। इस बात को सब लोग स्वीकार करेंगे कि हलकाबन्दी स्कूलों में लिखने, पढ़ने और गणित के अतिरिक्त कृषि और आरोग्यमूलक विषयों की शिक्षा देना उचित है। इस सम्बन्ध में भी यह बात विचार करने के योग्य है कि गांव के लड़कों को फ़ारसी लिपि में लिखी जानेवाली उर्दू द्वारा इन विषयों में सुगमता पूर्व्वक शिक्षा दी जा सकती है अथवा नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी द्वारा; पर शर्त यह है कि दोनों दशाओं में प्रचलित लिपि के लिखने पढ़ने की योग्यता होना आवश्यक है। यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि यह्न निश्चित रूप से प्रमाणित हो चुका है कि युक्त प्रान्त के लोगों को साक्षर करने और उनमें विद्या का प्रचार करने के लिए सबसे सुगम और शीघ्र सफल होनेवाला उपाय यह है कि उन्हें नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी द्वारा शिक्षा दी जाय, क्योंकि यही लिपि और भाषा, बहुत थोड़े उर्दू बोलनेवाले और फ़ारसी लिपि के लिखनेवाले शिक्षित मुसलमानों को छोड़ कर, इस प्रान्त के सब लोगों की स्वदेशी लिपि और भाषा है। यही नहीं किन्तु गांवों में रहनेवाले मुसलमान, जो अधिकतर अशिक्षित हैं, उनकी भाषा भी अपने हिन्दू पड़ोसियों के समान हिन्दी ही है। इसमें सन्देह नहीं कि आपकी कमेटी इस विषय से सम्बन्ध रखनेवाली भिन्न भिन्न बातों को अच्छी तरह जानती है। किन्तु विचार के सुभीते के लिए मैं "कोर्ट कैरेक्टर एंड प्राइमरी इजुकेशन" नामकी पुस्तक, जो गवर्नमेंट की सेवा में मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८८८ को भेजी गई थी, और उसी विषय पर एक छोटी सी और पुस्तक जो इसके थोड़े समय बादही प्रकाशित हुई थी और नागरी के सम्बन्ध में सन १८९८ में जो एक प्रार्थना पत्र गवर्नमेंट को भेजा गया था वह और उस प्रार्थनापत्र लार्ड मैकडानल का उत्तर-ये सब आपकी सेवा में भेजता हूं। पहली पुस्तक के ५५ और ५६ पृष्ठों से विदित होगा कि उर्दू द्वारा शिक्षा देना मुसलमान और हिन्दू दोनों में शिक्षा की उन्नति के मार्ग को रोकता है; किन्तु यदि मुसलमान लोग धार्म्मिक जोश में आकर अपनी शिक्षा को चौपट करते हैं तो यह कोई कारण नहीं है कि हिन्दुओं को भी यह विपत्ति सहने के लिए बाध्य किया जाय। यह सत्य है कि जो चाहें प्रसन्नता से हिन्दी पढ़ें किन्तु गांवों में रहने वाले भी अधिकांश माता-पिता अपने बालकों को सरकारी नौकरी के लोभ से उर्दू पढ़ाना ही अधिक पसंद करते हैं। किन्तु उन लोगों को जो गांववालों की दशा से परिचित हैं यह भली भांति विदित है कि हलकाबन्दी स्कूलों में उर्दू पढ़नेवाले बहुत कम व्यक्तियों को सरकारी नौकरी मिलती है और बहुत थोड़े लोग वर्तमान रूप में लिखी जानेवाली उर्दू को पढ़ सकते हैं अर्थात् व्यवहार में वे कुपढ़ ही रहते हैं और जितने वर्ष उन्होंने स्कूल में बिताये वह समय व्यर्थ ही गया। यदि यह समय वे हिन्दी पढ़ने में लगाते तो वे सचमुच शिक्षित बन जाते।

किस भाषा द्वारा लोगों को शिक्षा दी जाय इस विषय के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तकों की भाषा का विषय एक महत्वपूर्ण विषय है। इस सम्मेलन को खेद है कि प्रारम्भिक शिक्षा दी जानेवाले स्कूलों में हिन्दी-पाठ्य-पुस्तकों की भाषा सन्तोषजनक नहीं है। बहुत करके उनकी भाषा भद्दी, अप्रचलित और बेमुहावरे हैं। इसका एक कारण यह है कि इन पाठ्य पुस्तकों के लिखनेवाले अधिकतर वे लोग हैं जो न हिन्दी के विद्वान हैं और न उसके लेखक ही हैं। इसके सम्बन्ध में यह सम्मेलन इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझता है कि लोगों को इस बात से बड़ी शिकायत है कि उर्दू हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें पहले ऐसे लोगों से तैयार कराई जाती हैं जो न उर्दू जानते न हिन्दी और फिर उर्दू हिन्दी में उनका अनुवाद कराया जाता है। कुछ इस कारण भी इन पुस्तकों की भाषा भद्दी और बेमुहावरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। पर दूसरा कारण यह प्रतीत होता है कि पाठ्य पुस्तकों को ऐसी भाषा में लिखने का प्रयत्न किया जाता है कि उसे उर्दू और हिन्दी दोनों पढ़नेवाले समझ सकें। निस्सन्देह यहां उर्दू से अभिप्राय हिन्दुस्तानी या उस हिन्दी से है जिसमें आधी से अधिक फ़ारसी के शब्द भरे हों! ऐसे प्रयत्न का बड़ा ही बुरा फल होता है। यह दिखाने के लिए कि हमारी पुस्तकें सार्वजनिक भाषा में लिखी हुई हैं इन पुस्तकों के लेखक जो हिन्दी भाषा के सौन्दर्य्य को नहीं समझते अपने ग्रन्थों में ऐसे अरबी फ़ारसी के अनावश्यक शब्दों को, जो थोड़े से शिक्षित मुसलमानों और अदालत में नित्य काम करनेवाले हिन्दुओं को छोड़ कर देश में साधारणतः प्रचलित नहीं है, स्थान देते हैं। वे जिस भाषा को पढ़ते हैं वह न तो लोगों ही की भाषा से मिलती है और न हिन्दी के प्राचीन या आधुनिक लेखकों की भाषा ही से उसका कुछ सम्बन्ध है। यह सत्य है कि प्रारम्भिक शिक्षा देनेवाली कक्षाओं की पुस्तकों की भाषा सरल और सुगम होनी चाहिए किन्तु शुद्धता और शब्दों के उचित पठन पर भी पूरी तरह ध्यान देना चाहिए और भाषा के सौन्दर्य्य को कदापि नष्ट नहीं होने देना चाहिए। यह भी स्मरण रखने की बात है कि आगे चलकर जब विचार में जटिलता आने लगती है तब उसके अनुसार स्वाभाविक ही भाषा भी जटिल हो जाती है। यह सम्मेलन प्रार्थना करता है शिक्षा-विभाग को हिन्दी और उर्दू की पाठ्य पुस्तकें इन भाषाओं के प्रसिद्ध लेखकों से लिखानी चाहिए और विदेशी रत्नभंडार से सहायता लेने में लोगों को उत्तेजना देनी चाहिए किन्तु पाठ्य पुस्तकों के लिए अनुवाद करने की प्रथा एक दम बंद कर देनी चाहिए। वर्तमान पाठ्य पुस्तकों की भाषा के कारण शिक्षा के कार्य्य में बहुत हानि हो रही है। शिक्षित माता-पिता भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन पुस्तकों को व्यर्थ समझते हैं और उन्हें उनके स्थान में या उनके साथ साथ सुन्दर भाषा में लिखी हुई पुस्तकें अपने बालकों को पढ़ने के लिए देनी पड़ती हैं। हिन्दू माता-पिताओं की—चाहे वे नगर में रहते हों चाहे गांव में—साधारणतः यह इच्छा रहती है कि दो तीन वर्ष पढ़ने के बाद उनके लड़के तुलसीकृत रामायण पढ़ने और समझने लगें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं में रामायण एक इतना लोकप्रिय और उत्तम ग्रन्थ है कि प्रसन्नता से विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दिया जा सकता है। वर्तमान पाठ्य पुस्तकों के रहते हुए और अन्य पुस्तकों से कुछ सहायता लिये बिना ६ वर्ष पढ़ने के बाद भी लड़कों को रामायण की भाषा समझना असम्भव है। इस सम्मेलन की सम्मति में हिन्दुओं में शिक्षा को लोकप्रिय बनाने का यह एक बहुत उत्तम उपाय होगा कि रामायण पढ़ाने के लिए अलग कक्षाएं खोल दी जायं और इन कक्षाओं में विद्यार्थी उस समय से रामायण पढ़ने लगें जब उन्हें हिन्दी लिखना पढ़ना आ जाय।

अब दिनों दिन इस बात की अधिक पुकार मच रही है कि मध्यम और उच्च शिक्षा भी देशी भाषाओं में दी जाय और विश्वविद्यालयों में देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा देने की उपयोगिता को सर थियोडर मारीसन जैसे प्रसिद्ध विद्वान स्वीकार कर चुके हैं। यह आशा की जाती है कि, चाहे शीघ्र चाहे देर से, हमारे (प्रयाग) विश्वविद्यालय को भी इस विषय में कुछ न कुछ ज़रूर करना पड़ेगा। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पाठ्य पुस्तकें ऐसी भाषा में लिखी जांय जिसे इन भाषाओं के विद्वान सुन्दर हिन्दी या अच्छी उर्दू मानें और यह नियम बिलकुल उठा दिया जाय कि पाठ्य पुस्तकें ऐसी कृत्रिम भाषा में लिखी जायं कि वे हिन्दी और उर्दू दोनों के विद्यार्थियों के काम आ सकें।

अन्त में मैं इस सम्मेलन की ओरसे आन्तरिक आशा प्रकट करता हूं कि सरकारी नौकरी की मृगतृष्णा में पड़ कर बहुसंख्यक हिन्दू बालकों का उर्दू पढ़ने में जो समय व्यर्थ नष्ट होता है उसका आपकी कमेटी कुछ न कुछ अवश्य प्रबन्ध करेगी। वर्तमान स्थिति के अनुसार, केवल बहुत थोड़े लोगों को छोड़ कर, सरकारी नौकरी की आशा करना निश्चय ही दुराशा मात्र है। यह सम्मेलन इस बात के परामर्श देनेका साहस करता है कि सब जगह हलकाबन्दी स्कूलों में, जहां मुसलमानों की संख्या बहुत कम हो, मान लो १० फ़ी सदी से कम हो, वहां हिन्दी भाषा और नागरी लिपि द्वारा शिक्षा दी जाय और जहां इसी हिसाब से मुसलमानों की संख्या अधिक हो और उनकी उर्दू पढ़ने की अभिलाषा हो वहां उनके लाभ के लिए विशेष प्रबन्ध होना चाहिए। पुनः यह सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय से आशा करता है कि आपकी कमेटी यह सम्मति प्रकट करेगी कि प्रारम्भिक शिक्षा देनेवाली कक्षाओं में पढ़ाई जानेवाली हिन्दी की पुस्तकें बनाने का भार ऐसे विद्वानों को दिया जाय जो अंगरेज़ी और हिन्दी में अच्छी योग्यता रखते हों और हिन्दी के माननीय लेखक समझे जाते हों।

महाशय का आज्ञाकारी सेवक,

पुरुषोत्तमदास टंडन,

मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

इलाहाबाद।

पुस्तक-प्राप्ति-स्वीकार।

४७-दिवाकर प्रकाश	पं० तुलसीराम स्वामी	स्वामी प्रेस, मेरठ	।)
४८-विदुरनीति	,,	,,	।=)
४९-ऋगादि भाष्य भूमिका	,,	,,	-)॥
५०-संस्कृत भाषा की पुस्तक ४ भाग	,,	,,	॥≡)
५१-मादक वस्तु खंडन	पं० देवीदत्त,	टेम्परेन्स प्रीचरप्रयाग पं० देवीदत्त	-)
५२-मद्यभंग का निषेध	,,	,,	-)
५३-गौ गोहार और शुद्धि	,,	,,	)॥
५४-सिरोही राज्य का इतिहास	पं० गौरीशंकर हीराचन्दओझा	अजमेर	
५५-गर्भ रक्षा	डाकृर प्रसादी-लाल झा—	हरदेवनारायण झा. गोसांईटोला प्रयाग	।)
५६-पुरुष रत्न (इतिहास)	प्रधान चन्द्र प्रसाद	नागरी प्रवर्धनी सभा प्रयाग।	।)
५७-हिन्दी नवरत्न	तीनों मिश्रभ्राता	,,	
५८-नूतन पाक प्रकाश	पं० रामलाल मिश्र	सुखसंचारक प्रेस मथुरा	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६-हास्य मंजरी	पंडित सूर्य्य नारायण त्रिवेदी	,,	I)
६०-फोटोग्राफी शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	१)
६१-प्लेगचिकित्सा-दो प्रति-	ले० डाक्टर महेन्दुलाल गर्ग	,,	
६२-सफलता के सिद्धान्त उपदेश	,,	,,	I)
६३-प्रेम का परिणाम उपन्यास	एक महात्मा	,,	=)
६४-हारमोनियम गाइड	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	|=)
६५-पालीवाल दशा उपदेश	पं० भोजराज शर्मा	,,	
६६-साबुन शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	१)
६७-हज़ार व्यापार	,,	,,	१)
६८-तरुणों की दिनचर्या	डा० महेन्दुलाल गर्ग	,,	=)
६९-जापानीय स्त्रीशिक्षा	,,	,,	I)
७०-तिल की ओट पहाड़	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	,,	II)
७१-कवायद पटवारियान	पं० रघुनाथप्रसाद मिश्र	शारदाभवन इटावा	
७२-अरविन्द महिमा	श्री० अरविन्द घोष	पं० जनार्दन भट्ट अहियापुर प्रयाग	≡)
७३-नूतनब्रह्मचारी (उपन्यास)	पं० बालकृष्ण भट्ट	,,	≡)
७४-सौ अजान एक सुजान (उपन्यास)	,,	,,	|=)
७५-रमेशदत्त (जीवनी)	बा० जगन्नाथ खन्ना	,,	≡)
७६-आंख (निबन्ध)	पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी	मेयोकालेज अजमेर	
७७-वैदिक षष्ठतप गोदानम्	,,	,,	
७८-सङ्गीत (निबन्ध)	,,	,,	
७९-कवि कर्त्तव्य (निबन्ध)	पं० जगन्नाथप्रसाद बिशारद भरतपुर	'साधु' कार्यालय बड़ोदा	
८०-हिन्दीपद्यसंग्रह	पं० द्वारकाप्रसाद चौबे	नैशनल प्रेस प्रयाग	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१–व्यापार शिक्षा	पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा	सुखसंचारक क० मथुरा	।)
८२–गौरीगिरीश १म भाग काव्य	पं० हरिमङ्गल मिश्र प्रयाग	खड्गविलास प्रेस बांकीपुर	।–)
८३–भारतवर्षका इतिहास	,,	,,	।)
८४– ,,	,,	,,	।)
८५–रानी भवानी	बा० गङ्गाप्रसाद गुप्त काशी	भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता	
८६–पत्नीधर्म संग्रह	पं० गिरधरलाल शर्मा बहुगुण	,,	
८७–रोज़गार	बा० दामोदरदास खत्री	,,	
८८–हिन्दीभाषा	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,	
८९–धर्म्मतत्व	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९०–कविरत्नमाला	मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ	,,	
९१–स्वामी और स्त्री	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९२–निरंकुशता दर्शन (समालोचना)	मनसाराम	,,	
९३–बालेस का जीवन-चरित	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९४–दशकुमार चरित	पं० अक्षयबट मिश्र	,,	
९५–जहांगीरनामा (इतिहास)	मुं० देवीप्रसाद मुंसिफ	,,	
९६–रत्नावली नाटिका	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,	
९७–स्फुट कविता	,,	,,	
९८–मधुमक्षिका १ भाग	बा० महावीरप्रसाद	,,	
९९–सज्जाद सम्बुल (नाटक)	पं० केशवराम भट्ट	,,	
१००–रामायण सार	बा० अमृतलाल चक्रवर्ती	,,	
१०१–मार्कण्डेयपुराण पूर्वार्द्ध	पं० अक्षयबट मिश्र	,,	
१०२–उत्तरार्द्ध	,,	,,	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०३-स्वदेशी आन्दोलन	पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी	भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता
१०४-चिट्ठे और ख़त	बा० बालमुकुन्द गुप्त	,,
१०४ शिवशम्भु का चिट्ठा	श्रीशिवशम्भु शर्म्मा	,,

सम्मेलन की स्थायी-समिति का अधिवेशन।

मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १० संवत् १९७० (ता० २३ ११ १३) रविवार को संध्या समय ६ बजे सम्मेलन-कार्यालय में हि० सा० सम्मेलन की स्थायीसमिति का एक साधारण अधिवेशन हुआ।

निम्न लिखित सज्जन उपस्थित थे:--

(१) बाबू नवाब बहादुर	सभापति
(२) पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी	प्रयाग
(३) पं० शेषधर शर्म्मा	,,
(४) पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल	,,
(५) पं० लक्ष्मीनारायण नागर	,,
(६) पं० कृष्णकान्त मालवीय	,,
(७) बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन	,,
(८) श्री नरेन्द्र नारायण सिंह	,,

कार्य-विवरण:—

[१] पण्डित कृष्णकान्त मालवीय के प्रस्ताव तथा बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से बाबू नवाब बहादुर सभापति चुने गये।

[२] सहायक मंत्री ने गत भाद्रपद कृष्ण १ संवत् १९७० के अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़कर सुनाया और पण्डित द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी के प्रस्ताव तथा पं० कृष्णकान्त मालवीय के अनुमोदन करने पर वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

[३] सम्मेलन के आय-व्यय का ता० ३१ अक्तूबर १९१३ तक का हिसाब उपस्थित किया गया, जिसपर आय-व्यय-परीक्षक ने यह सम्मति दी थी—"इस बार का हिसाब अच्छे प्रकार से रखा गया है। इसलिए मैं हिसाब रखनेवालों को साधुवाद देता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिडत जगन्नाथ प्रसाद शुक्क के प्रस्ताव और पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह हिसाब स्वीकार किया जाय।

[४] सम्मेलन से सम्बन्ध कराने के लिए हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभा, लहेरिया सराय-दरभङ्गा; हिन्दी-साहित्य-सभा, चौक-लखनऊ; विद्या प्रचारिणी सभा, चित्तोरगढ़-मेवाड़ तथा हिन्दी साहित्य-समिति, कोटा के प्रार्थनापत्र उपस्थित किये गये।

पं० कृष्णकान्त मालवीय के प्रस्ताव और परिडत लक्ष्मीनारायण नागर के अनुमोदन करने पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ये सब सभाएं सम्मेलन से सम्बद्ध की जायं।

[५] सम्मेलन के प्रधान मंत्री बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन ने सूचना के अनुसार यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि "सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों के अवसर पर अबसे प्रस्तावों की स्वीकृति आदि साधारण कार्यों के अतिरिक्त विद्वानों की विशिष्ट समितियों द्वारा हिन्दी-साहित्य के गूढ़ तथा प्रयोजनीय विषयों पर विचार करके कोई सिद्धान्त स्थिर कराने का प्रयत्न किया जाय, जिसमें हिन्दी साहित्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हो, और इस वर्ष चतुर्थ सम्मेलन का कार्यक्रम इस प्रकार रखा जायः—

प्रथम दिन—सवेरे से ११ बजे तक—सभापति का स्वागत इत्यादि

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा, जिसमें स्वागतकारिणी सभा के सभापति की वक्तृता, सभापति का चुनाव, सभापति का भाषण और विषय-निर्वाचिनी समिति, वर्णमाला-विचार-समिति तथा राजकार्योपयोगी हिन्दी-शब्द-निर्माण-समिति का संगठन होगा।

रात के ७॥ बजे से ९ बजे तक—विषय-निर्वाचिनी समिति की बैठक।

दूसरे दिन—सबेरे ७॥ बजे से ११ बजे तक—वर्णमाला-विचार-समिति तथा राजकार्योपयोगी-हिन्दी-शब्द-निर्माण-समिति के कार्य।

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के ७॥ बजे से ९ बजे तक—विषय-निर्वाचिनी समिति की बैठक।

तीसरे दिन—सवेरे ७॥ बजे से ११ बजे तक—वर्णमाला-विचार समिति तथा शब्द-निर्म्माण-समिति के कार्य।

२ बजे से ६ बजे तक—सार्वजनिक सभा।

रात के ७॥ बजे से ९ बजे तक—पुनः उक्त दोनों विशिष्ट समितियों के कार्य (यदि सम्भव और आवश्यक हो)

इस सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास, पं० श्यामविहारी मिश्र, बाबू माणिकचन्द्र जैन, पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, पं० ताराचन्द दुबे, बाबू युगलकिशोर अखौरी तथा पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय की सम्मतियां सुनायी गयीं।

बहुत वादानुवाद के अनन्तर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव बहुत उपयोगी है। इसके अनुसार कार्य होने से हिन्दी साहित्य के बहुत उपकार होने की आशा है। अतः यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय। किन्तु चतुर्थ सम्मेलन के कार्यक्रम में इतना परिवर्त्तन कर दिया जाय कि सार्वजनिक सभा का समय प्रतिदिन २ बजे से ६ बजे के बदले १ बजे से ५॥ बजे तक रखा जाय और विषय-निर्वाचिनी समिति का समय प्रतिदिन ७॥ बजे से १० बजे तक रखा जाय। और स्वागत-कारिणी समिति से प्रार्थना की जाय कि वह इसी क्रम से कार्य करने का प्रयत्न करे।

[६] पण्डित विनोदीलाल उपाध्याय के मिति भाद्रपद शुक्ल ४ तथा मार्गशीर्ष कृष्ण ४ संवत् १९७० के पत्र उपस्थित किये गये जिनमें उन्होंने सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को कई विशेष अधिकार देने का प्रस्ताव किया था।

बहुत सोच विचार के बाद सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को सम्प्रति नीचे लिखे दो विशेष अधिकार दिये जायं।

(७) सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को स्थायी-समिति के विचारार्थ प्रस्ताव भेजने का अधिकार होगा।

(८) सम्मेलन के अधिवेशनों के कार्यविवरण और सम्मेलन के विशेष विशेष कार्यों के विवरण पत्रिका के ग्राहकों को आधे दाम पर दिये जायंगे। कोई विशेष पुस्तक या ग्रन्थ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की ओर से प्रकाशित हों, वे इस नियम के अन्तर्गत न होंगे। यह नियम केवल विवरणों के लिए ही है।

[७] मंत्री ने भागलपुर की स्वागत-कारिणी समिति के मंत्री का तार—जिसमें यह लिखा था कि स्वागत-कारिणी समिति सर्वसम्मति से स्थायी समिति को आगामी सम्मेलन का सभापति चुनने का अधिकार देती है (Reception Committee unanimously authorises Standing Committee to elect president forthcoming Sammelan)—उपस्थित करते हुए निवेदन किया कि यह तार आज कुछ ही देर पहले प्राप्त हुआ है। अब आगामी सम्मेलन का समय बहुत निकट आ गया है। अब इतना समय नहीं रहा कि १२वें नियम के अनुसार १५ दिन की सूचना देकर पुनः एक अधिवेशन करके इस पर काररवाई की जाय।

इस पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि "समिति इस बात पर अपना दुःख प्रकट करती है कि सभापति के निर्वाचन के सम्बन्ध में ऐसा समय उपस्थित हुआ कि स्वागत-कारिणी-समिति स्वयं इस कार्य को न कर स्थायी समिति के अधीन करती है। इस समिति को इस बात पर बहुत दुःख है कि सभापति के निर्वाचन के विषय में कुछ समाचारपत्र सम्पादकों ने आदरणीय हिन्दी-सेवकों के सम्बन्ध में अनुचित शब्दों को अपने पत्रों में स्थान दिया।

आगामी चतुर्थ हि० सा० सम्मेलन के सभापति के विषय में निश्चय हुआ कि यह समिति महात्मा मुंशीरामजी को सभापति के आसन के लिए निर्वाचित करती है। (महात्मा मुंशीरामजी ने विशेष अनुरोध करने पर सभापति होना स्वीकार कर लिया है, यद्यपि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।)

[८] बाबू श्यामसुन्दर दासजी का ता० १३-११-१३ का पत्र उपस्थित किया गया, जिसमें उन्होंने सभापति के चुनाव के सम्बन्ध में कुछ नये नियम बनाकर भेजे थे।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ४३वें नियम के अनुसार सम्मेलन के समय से एक मास पहले न आने के कारण ये इस वर्ष स्वीकार नहीं किये जा सकते।

[९] मंत्री ने निवेदन किया कि माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीयजी आज कल प्रयाग में बहुत कम ठहरते हैं, इससे हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसा-फंड के करेन्ट एकाउन्ट का रुपया—जो उनके और बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन के हस्ताक्षर से मंगाया जाता है—मंगाने में बहुत असुविधा होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि माननीय मालवीयजी की जगह किसी दूसरे सज्जन का नाम लिखवा दिया जाय जिनके हस्ताक्षर से पैसा-फंड के सब कार्य हों।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि माननीय मालवीयजी से प्रार्थना की जाय कि वे अपनी जगह पर बाबू नवाब बहादुरजी का नाम हिन्दी-पैसा-फ़ंड के करेन्ट एकाउन्ट और फिक्सड् डिपाज़िट में लिखवा दें।

[१०] मंत्री ने सम्मेलन के आगामी वर्ष के व्यय का अनुमानपत्र बनाने का प्रस्ताव किया।

बहुत सोच विचार के बाद सर्वसम्मति से नीचे लिखा अनुमानपत्र बनाया गया। निश्चय हुआ कि यह आगामी सम्मेलन में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाय।

सम्मेलन के व्ययका अनुमान पत्र सन् १९१४ के लिए।

८००)	कार्य्यालय खर्च।
१०००)	हिन्दी लेखकों का वेतन।
१५०)	कागज़ स्याही आदि।
२०००)	पुस्तक प्रकाशन का ख़र्च।
९०)	स्टाम्प और तार।
७००)	उपदेशकों का ख़र्च।
२००)	पुस्तकालय सम्बन्धी ख़र्च।
७५)	सामान।
२५)	वार्षिक अधिवेशन सम्बन्धी ख़र्च।
४००)	सम्मेलन-पत्रिका।
५००)	डेपुटेशन ख़र्च।
२५)	फुटकर खर्च।
५९३५)	कुल जोड़।

सभापति महाशय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

श्रीनरेन्द्र नारायण सिंह

सहायक मन्त्री हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के आय-व्यय का चिट्ठा।

ता० २१ दिसम्बर १९१२ से ३१ अक्तूबर १९१३ तक।

आय		व्यय	
११३९-)।।।	पिछले वर्ष की बचत	१०॥)	फार्म वकालतनामा इत्यादि
९१९॥≡)	हिन्दी पैसा फंड	३१३।-)	कार्यालय खर्च
४५)	संबन्ध कराने की फीस	३७०॥)	हिन्दी लेखकों का वेतन
६१)॥	फार्म वकालतनामा आदि		
		१४९)	स्थानीय (१)
२१९१॥)	स्थायी कोष	८३॥)	हाथरस (२)
२०१)	तृतीय सम्मेलन का चन्दा	४५)	गोरखपुर (३)
४६-)॥	व्याज	३५)	बुलन्दशहर (४)
१६॥)	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	४८)	मिर्ज़ापुर (५)
१८५॥)	उपदेशक	१०)	लखीमपुर खीरी (६)
४८०५।≡)		३७०॥)	
		९५।)।	कागज़ छपाई आदि
		४९॥।)॥	स्टाम्प और तार
		४९८॥)॥	उपदेशकों का खर्च
		३=)	पुस्तकालय संबंधी खर्च
		१५॥-)	सामान
		१७।-)	तृतीय सम्मेलन संबंधी खर्च
		२०=)॥	फुटकर खर्च
		२३)	सम्मेलन-पत्रिका के व्यय के लिए दिया गया।
		१४१७)।।।	
		३३८८।=)।	बचत
		४८०५।≡)	कुल जोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचत का ब्योरा।

५६५॥≡)॥½	इलाहाबाद बैंक चलता
३६)	,, सेविंग बैंक
२५२०)	,, फिक्स्ड् डिपा०
१२०)	ना० प्र० सभा ब्यावर के पास
६४)	उपदेशकों के पास जिसका हिसाब लिखा नहीं गया
४६॥|=)॥½	नकद हाथ में [इसमें ॥≡) की चेक बुक है]
३३८८॥=)।	

श्रीनरेन्द्र नारायणसिंह
सहायक मंत्री हि० सा० सम्मेलन-प्रयाग।

विविध

आर्य्यसमाज के अग्रणी स्वनामधन्य महात्मा मुंशीरामजी इस बार भागलपुर में होनेवाले चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के सभापति का आसन सुशोभित करेंगे। पहिले पण्डित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी से सभापति का पद ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की गयी थी, परन्तु स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण आप इसे स्वीकार न कर सके। आशा है कि द्विवेदी जी का स्वास्थ्य सम्मेलन के समय तक बहुत कुछ सुधर जायगा और आप सम्मेलन में सम्मिलित होकर वहां के कार्य्य में भाग लेने की कृपा अवश्य कर सकेंगे।

आजकल हिन्दी साहित्य के प्रचार की चेष्टा बहुत स्थानों में होने लगी है। पुस्तकें भी प्रायः सभी नगरों में प्रकाशित हुआ करती हैं। परन्तु उन सबका एक ही दूकानदार से मिलना इस समय सम्भव नहीं। यदि ऐसा होता कि एक ही दूकानदार को पत्र लिख कर भारत भर में प्रकाशित होनेवाली हिन्दी पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगवाई जा सकतीं तो पढ़नेवालों की बहुत सी असुविधाएं दूर हो जातीं। डाक का व्यय, समय का व्यय, वार वार कई कारखानों से पत्रव्यवहार करना आदि बहुत सी बातों में ग्रन्थ मँगवानेवालों को आराम मिलता। आनन्द की बात है कि इस अभाव को दूर करने के लिए कलकत्ते में एक कार्य्यालय खोला गया है। इसका नाम सत्य-हरिश्चन्द्र कार्य्यालय है, और इसके प्रबन्धकर्त्ता बाबू अनुरुद्धसिंह क्षत्री (जौनपुरनिवासी) हैं। पता है—बड़ा बाज़ार, कलकत्ता। आप लिखते हैं कि आपके कार्य्यालय से 'छबीलो भटियारिन' से लेकर 'रासो' तक के हिन्दीभाषा के ग्रन्थ, चाहे जिस धर्म्म व जिस विषय के चाहिए, मिल सकते हैं। कलकत्ते की अन्यान्य वस्तुएं भी आप भेज सकते हैं।

श्री लक्ष्मीचन्द्र खोसला जी ने श्रीनगर में "जीवनसुधार पुस्तकालय" नामक एक हिन्दी पुस्तकालय खोल रक्खा है, जिस में सुना जाता है कि खोसला महाशय ने अपने ही व्यय से अनेक लाभदायक पुस्तकें इकट्ठी कर रखी हैं और वे हिन्दी के ५० समाचार पत्र और सामयिक पुस्तकें मंगवाया करते हैं। काश्मीर ऐसे दूर देश में, जहां मुसलमानी साहित्य का प्रभाव चारों ओर से व्याप्त है, ऐसे महानुभावों की हिन्दी भाषा की सेवा निस्सन्देह प्रशंसायोग्य है।

प्रयागवासी विख्यात कविवर पण्डित श्रीधर पाठकजी एक नये ढंग की कविता-पुस्तक लिख रहे हैं। इस पुस्तक का नाम होगा "आर्यगीता"। पुस्तक नये ही ढंग की और सर्वोपादेय होगी। सम्भव है कि मार्च तक प्रकाशित हो जाय। इसमें चित्रों का दिया जाना भी सम्भव है। जो लोग इस पुस्तक को लेना चाहें, वे अभी से पाठक जी को पत्र लिख कर इसके ग्राहक बन सकते हैं। मूल्य अभी देने की आवश्यकता नहीं। पुस्तक छप जाने पर मूल्य लिया जावेगा। कवि महाशय का पता—पद्मकोट, लूकरगंज, प्रयाग है। 'आर्यगीता" की कविताओं के नमूने "स्त्रीदर्पण" और "मर्य्यादा" में छपे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते का "भारतमित्र" दिनों दिन उन्नति कर रहा है और अपने कर्त्तव्य-साधन में बहुत ही दत्तचित्त देख पड़ता है। यह पत्र बीस वर्ष से साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होता रहा है। कुछ दिनों से दैनिक रूप में भी निकलने लगा है। अब इस पत्र के मालिक ने भविष्य में इस पत्र का सञ्चालन अधिकतर शक्तिशाली करने के लिए इसका अधिकार एक लिमिटेड कम्पनी के हाथ में सौंप दिया है। यह नयी कम्पनी ५००००) मूलधन लेकर कार्यारम्भ करेगी और समाचारपत्र के उपरान्त सब प्रकार के छापने का कार्य, टैप ढालना, स्टेशनरी बेंचना, इत्यादि और भी आनुसंगिक व्यापारों से कलकत्ते और बिहार प्रान्त के मुद्रणालय-सम्बन्धी अभावों को दूर करने का उद्यम करेगी। इसका एक एक शेयर १०) को मिल सकता है, और जो चाहे वही चाहे जितने शेयरों को मोल लेकर "भारतमित्र" का मालिक बन सकता है। आशा है कि सर्वसाधारण कम से कम एक एक शेयर मोल लेकर कम्पनी के सञ्चालकों का उत्साह बढ़ावेंगे। उनका १०) तो हाथों हाथ कुछ दिनों में उनके पास लौट ही आवेगा, ऊपर से उनको प्रति वर्ष लाभ भी मिलता रहेगा। "भारतमित्र" की उन्नति प्रत्येक हिन्दी साहित्य-सेवी के आनन्द का कारण है।

इस बार भागलपुरवाले अधिवेशन में पढ़े जाने के लिए निम्नलिखित विषयों पर निबन्ध लिखवाये जाने का प्रबन्ध हो रहा है—

१—पिछले ५० वर्षों में बिहार में हिन्दी की दशा।
२—हिन्दी में नाटक।
३—मैथिली भाषा का हिन्दी से सम्बन्ध।
४—भारतवर्ष में हिन्दी द्वारा उच्च शिक्षा।
५—हिन्दी भाषा के लिङ्गभेद पर विचार।
६—हिन्दी साहित्य का महत्व।
७—वर्ण विचार.
८—प्राकृत भाषा का हिन्दी पर प्रभाव.
९—नागरी प्रचारिणी सभाएं और उनके काम.
१०—देशी राज्यों में हिन्दी और उसके प्रचार का उपाय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११—मद्रास में हिन्दी के प्रचार का उपाय.
१२—नागरी, उर्दू और रोमन लिपियों की तुलना और भारतीय भाषाओं के लिए उनकी अपेक्षाकृत उपयोगिता.
१३—हिन्दी का वर्त्तमान पद्य-साहित्य.

पण्डितवर इन्द्रनारायण द्विवेदी जी, सराय आक़िल, ज़िला प्रयाग-निवासी, ज्योतिशास्त्र में बहुत ज्ञान रखते हैं। आप इस समय "हिन्दू ज्योतिष का इतिहास" इस विषय पर एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिख रहे हैं। ग्रन्थ निस्सन्देह हिन्दी-साहित्य का भूषणस्वरूप और अनुपम होगा, परन्तु उसके विषयों का पूरा व्योरा बताना या उनकी पूरी आलोचना करना शक्ति के अतिरिक्त है। आशा है कि हिन्दीप्रेमियों की उत्सुकता निवारणार्थ द्विवेदी जी सम्मेलन-पत्रिका में प्रकाशनार्थ अपनी पुस्तक का कुछ विवरण भेजने की कृपा करेंगे। सुना है कि द्विवेदी जी इस पुस्तक का प्रणयनकार्य स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं करते, सम्मेलन को आपने इस पुस्तक का स्वत्व दे डालने का भी विचार कर लिया है।

हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्रों में से बहुतेरे काल के फेर से लुप्त प्राय हो गये हैं। इन लुप्तप्राय शास्त्रों में से ज्योतिष भी एक है। ज्योतिष की तो अब ऐसी दुर्दशा है कि आजकल के विद्वान इस पर विश्वास भी नहीं करते। इसका एक कारण अवश्य यह भी है कि जोतिष विद्या के पारङ्गत विद्वानों की संख्या अब बहुत कम देख पड़ती है। परन्तु जहां तक हमने स्वयं देखा है, ज्योतिर्विद्या कभी असत्य नहीं है, और आजकल भी कहीं कहीं सच्चे ज्योतिविद विद्वानों के दर्शन मिल ही जाते हैं; हां उनका आदर करनेवाला नहीं। ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाताओं में से हम गया निवासी लाला रामफल लालजी का नाम भी ले सकते हैं। आप ब्राह्मण नहीं वैश्य हैं, परन्तु इस अद्भुत शास्त्र का आपको बड़ा भारी व्यसन है। फलित ज्योतिष बहुधा सच्ची नहीं निकलती। परन्तु रामफललालजी फलितज्योतिष की गणना में भी सिद्धहस्त हैं। इसका एक उदाहरण हमको भी मिल रहा है। आप इस समय एक महत्वपूर्ण कार्य्य में लगे हैं। महर्षि भृगु प्राचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में एक भारी दैवज्ञ और ज्योतिषाचार्य्य हो गये हैं। उनकी बनायी हुई भृगुसंहिता नामकी पुस्तक बहुत प्रसिद्ध है। कोई भी मनुष्य हो भूत-भविष्य, चाहे वर्त्तमान काल का हो—उसकी जन्मकुण्डली भृगुसंहिता में अवश्य निकल आवेगी। इस वृहत् ज्योतिषभिधान वा वृहद् भृगुसंहिता में कुल ४,४७,२०,७६० कुण्डलियां है, और लालारामफललालजी इन्हीं कुंडलियों का संग्रह पुस्तकाकार मासिक क्रम से प्रकाशित कर रहे हैं। यह अभिधान अंगरेज़ी और हिन्दी दोनों भाषा में छप रहा है। चाहे जिस भाषा में मंगवा लीजिए। इस छोटी सी पत्रिका में सम्पूर्ण अभिधान की प्रशंसा करने का स्थान नहीं है। दर्शनार्थीगण लालजी से "ज्योतिष कार्यालय, गया" के पते पर पत्र लिख कर नमूना मंगवाकर देख सकते हैं। इस प्रशंसनीय कार्य में ज्योतिष-शास्त्र के विद्वान् रामफलालजी का उत्साह बढ़ावें, यही हमारी प्रार्थना है।

इस बार बिहार के पत्र-सम्पादकों ने पटने में अपना स्वतन्त्र सम्पादक-सम्मेलन किया है।

चीन के विश्वकोष के बराबर विशाल ग्रन्थ जगत् में नहीं है। १७२६ ई० में यह सबसे पहले पुस्तकाकार प्रकाशित होने लगा। आज कल यह सब मिला कर दस हज़ार खंडों में समाप्त हुआ है। छोटे अक्षरों में इस पुस्तक का एक नया संस्करण प्रकाशित हुआ है, जिसके सोलह सौ खंडों में सारी पुस्तक की समाप्ति हुई है। मद्रास के थियासोफ़िकल सोसाइटी के पुस्तकागार को छोड़ भारतवर्ष में और कहीं यह पुस्तक नहीं है।

भागलपुर की हिन्दी सभा ने हमारे पास एक लम्बी सूची भेजी है उसमें सभा की ओर से हिन्दी की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की नामावली दी हुई है। तृतीय श्रेणी में १७, चतुर्थ श्रेणी में ६८ और सप्तम श्रेणी में १६१ छात्र पारितोषिक पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्य समझे गये हैं। तृतीय श्रेणी के छात्र भागलपुर केन्द्र से उत्तीर्ण रामनारायण मिश्र को सब से पहिला स्थान अधिकार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भागलपुर हिन्दी सभा का हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए यह कार्य्य प्रशंसनीय, और साथ ही साथ दूसरी हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभाओं के लिए अनुकरणीय है।

भागलपुर में सम्मेलन के समय पर होनेवाली साहित्य प्रदर्शन-समिति ने अपने एक अधिवेशन में प्रदर्शनी की खोज के लिए मनुष्य भेजने के व्यय स्वरूप २००) देना स्वीकार किया है और पण्डित रामलोचन जी पाण्डेय को इस कार्य के लिए भेजना निश्चय किया है। पण्डित रामलोचन जी बड़े ही उत्साही सज्जन हैं, और भागलपुर की हिन्दी सभा के संचालन और उस प्रान्त में हिन्दी प्रचार के कार्य में प्रधान शक्ति स्वरूप हैं। चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के आप सहायक मन्त्री भी हैं। एक विद्यानुरागी उत्साही सज्जन के द्वारा प्रान्त भर में कितना उत्साह फैल सकता है। इसका दृष्टान्त ढूढ़ना हो तो हम पाण्डेय जी का भी नाम ले सकते हैं।

हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि सम्मेलन के आवैतनिक उपदेशक श्रीयुत सत्यदेव जी ने गत सितम्बर और अक्तूबर महीने में राजपूताना प्रान्त के भरतपुर, कोटा, चित्तोड़, रतलाम आदि अनेक स्थानों में भ्रमण करके हिन्दी का प्रचार किया। आपके उद्योग से उन स्थानों में नागरी प्रचारिणी सभाएं स्थापित हो गयीं हैं जिनसे हिन्दी का बहुत उपकार होने की आशा है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्रीयुत सत्यदेवजी ने अपनी सत्यग्रन्थ-माला का कार्यालय कानपुर से उठा कर प्रयाग में ही हि० स० सम्मेलन कार्यालय के निकट प्रतिष्ठित किया है। इससे आशा की जाती है कि अब सम्मेलन को उनसे और भी अधिक सहायता मिलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शनी ।

आगामी चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर ५वीं दिसम्बर से १२वीं तक हिन्दी-साहित्य-प्रदर्शिनी होगी, जिसमें शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, मुद्रा और प्राचीन तथा अर्वाचीन हिन्दी पुस्तकें तथा देवनागरी अक्षर सम्बन्धो चीज़ें दिखायी जायंगी।

जिन सज्जनों के पास इस तरह को चीज़ें हों वे उन्हें भेजने की कृपा करें। शिलालेख और ताम्रपत्र यदि न भेज सकें तो उनका फोटो ही भेजें। जिनके पास हाथ की लिखी कोई प्राचीन अथवा अनूठी पुस्तक हो तो उसे अवश्य भेजें।

प्रदर्शनी-कमेटी का विचार है कि हिन्दी को आजतक जितनी पुस्तकें छपी हुई हैं वे सब दिखा दी जांय, एक भी छूट न जायें। अतएव पुस्तक-प्रकाशकों और ग्रन्थकारों से प्रार्थना है कि वे अपनी अपनी पुस्तकें अवश्य भेजें। यह भी सम्भव है-ऐसी आशा है कि उनकी पुस्तकें बिक भी जांय। विशेष हाल जानने के लिए नियमावली मँगाकर देखना चाहिए।

इन कार्य्य में उन लोगों का जो कुछ व्यय होगा वह प्रदर्शनी-कमेटी के नियमानुसार दिया जायगा।

रामलोचन पाण्डेय स० म० प्रदर्शनी-कमेटी भागलपुर।

हिन्दी सम्बन्धी सभाओंसे विशेष प्रार्थना।

आपको मालूम है कि चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए "नागरी-प्रचारिणी सभाएं और उनके काम" पर लेख लिखा जाय। पर अभी तक सम्मेलन कारिणी-समिति को बहुत थोड़ी सभाओं ने अपने विवरण भेजे हैं। अब समय बहुत थोड़ा रह गया है। अतएव जिन सभाओंने अपने विवरण नहीं भेजे हैं, वे कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

सम्मेलन की बैठक ७, ८, ९ दिसम्बर को है। सभाओं से प्रार्थना है कि वे अपना विशेष अधिवेशन करके प्रतिनिधि चुनकर उनकी नामावली कार्त्तिक पूर्णमासी के पहले अवस्य भेजने की कृपा करें।

जिन स्थानों में सभाएं नहीं हैं, वहां सर्वजनिक सभा करके प्रतिनिधि चुने जांय और अपने प्रान्त के हिन्दी प्रेमियों का नामावली पूरे पता के साथ भेजने की कृपा करें।

रामलोचन पाण्डेय, सहायक मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग १ } पौष संवत् १९७० { अङ्क ४

भागलपुर में
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन।

परम ब्रह्म परमात्मा का कोटिशः धन्यवाद है कि उसकी अतुल कृपा से चतुर्थ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन निर्विघ्न समाप्त होगया। सम्मेलन को अपने जन्म दिन से ही बड़ी बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ा है और इसको अपना वार्षिक अधिवेशन करने में कठिन समस्यायें हल करनी पड़ी हैं पर जैसी वक्र समस्या इस वर्ष के अधिवेशन मनाने में उपस्थित हुई थी उसकी कठिनाई को वुही लोग जान सकते हैं जिनका सम्मेलन के कार्य से घनिष्ट सम्बन्ध है। निस्सन्देह नई संस्थाओं का चलाना सहज काम नहीं, फिर ऐसी संस्था का चलाना, जिसके अपने हितैषियों में ही एकता न हो;—सचमुच यह उसी विघ्न विनाशक जगदीश्वर की कृपा का फल है कि इतने संकटों के रहते हुए भी मातृभाषा की पवित्र नौका भयङ्कर लहरों को चीरती हुई अपने उद्देश्य की ओर आनन्द पूर्वक जा रही है।

भागलपुर की स्वागत कारिणी सभा की असावधानता के कारण ऐसा समय उपस्थित हुआ था कि सम्मेलन का समय से होना संदिग्ध होगया था परन्तु स्वागतकारिणी सभा ने अन्त में यह अच्छा किया कि स्थायी समिति को सभापति निर्वाचन का कार्य्य सौंप दिया। सभापति के निर्वाचन में जो जो उतार चढ़ाव हुए उनके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। जब महात्मा मुन्शी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामजी का सभापति होना बिल्कुल निश्चित हो गया तो स्थायी समिति प्रयाग की ओर से स्वामी सत्यदेव जी भागलपुर वालों की सहायता के लिए भेजे गये थे। २६ नवम्बर को वे वहां पहुंचे और कार्य्य आरम्भ कर दिया। पहले व्याख्यान देकर उन्होंने लोगों को उत्साहित किया तदुपरान्त उत्सव की तय्यारियां आरम्भ करदीं। अन्त को वह दिन जिसकी प्रतीक्षा हिन्दी संसार महीनों से कर रहा था, आ पहुंचा। भागलपुर के नागरिक आश्चर्य्य में थे कि इतने लोग कहां से आ गये। शहर में धूम मच गई।

प्रथम दिन

७ दिसम्बर शनिवार।

यद्यपि उत्सव का आरम्भ एक बजे से होना था पर प्रेमीसज्जन सुबह से ही आकर डट गये थे। पण्डाल की शोभा देखने योग्य थी। रंगबिरंगी झण्डियां, सुनहले माटो, पण्डाल की शोभा बढ़ा रहे थी। चारों तरफ़ दर्शकगण प्रसन्न चित्त बैठे थे। ये मातृ भाषा के अनन्यभक्त आज मातृभूमि के प्रेम में मग्न होकर यहां एकत्रित हुए थे। आहा! कैसा अच्छा समय था। जो बात बीस वर्ष पहले स्वप्न में भी न आ सकती थी वह आज प्रत्यक्ष में विद्यमान देखी। फिर भला जिन महान आशाओं का आज स्वप्न देखते हैं वे आज से बीस वर्ष बाद प्रत्यक्ष न होजाँयेंगी? अवश्य, अवश्य। हे मातृभाषा! निराश मत हो। भारत के तीस करोड़ बच्चे तुझे अवश्य अपनायेंगे और तेरी पवित्र गोद में बैठ कर सुख लाभ करेंगे।

डेढ़ बज गया। प्लेट फारम पर हिन्दी साहित्य सेवी बैठे हुए हैं। किस किस का नाम गिनावें। कुमार कीर्त्यानन्द सिंहजी, वयो वृद्ध पंडित बालकृष्ण भट्टजी, पंडित शुकदेव बिहारी मिश्रजी, बाबू श्याम सुन्दर दास जी, प्रधान मंत्री बाबू पुरुषोत्तमदास जी, पण्डित बाबूराव पराडकर जी, हंसमुख जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी जी, पंडित द्वारिका प्रसाद जी चतुर्वेदी, पंडित लक्ष्मीधर जी बाजपेयी, कुंवर महेन्द्रपाल सिंह जी, बंगाली नायक के सम्पादक पंचकौड़ी बंद्योपाध्याय जी, पंडित रामावतार जी, कहां तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनावें, नये पुराने सभी साहित्य सेवी आज मातृभाषा के प्रेम में बद्ध होकर यहां उपस्थित हुए थे।

प्रायः डेढ़ बजे सभा का कार्य्य आरम्भ हुआ। सबसे पहले एक युवक ने निम्नलिखित मधुर गीत गाकर मंगला चरण किया।

धुन—पूर्व्वी

जयति जय जय पुन्यधाम धर्म की असल भूमि,
जयति जय श्रीभारत भवानी मेरी जननी।
कोऊ जीवै धन हित कोऊ जीवै जन हित,
मेरी प्राण तुम्हीं महरानी मेरी जननी॥

तीन ओर सिन्धु तेरे नाग बल गर्जत,
घुमि घुमि करै निगरानी मेरि जननी।
उत्तर हिमालय गिरि अरि राह छेके वीर,
राखे ताख तरख जवानी मेरी जननी।
ललकि ललाकि मस जीवै हिम गिर पर,
मेरी प्राण तुहि महरानी मेरी जननी॥

अपर प्रदेश देश सुन्दर कहावै वेश,
बसुधा बरनत भवानी मेरी जननी।
मधुर गुजारे राम पुलनपैं नाचि नाचि,
झिंगुर झनक सुखदानी मेरी जननी॥
गेहुँ धान जामे राम सरसों विपिन फूले,
सुख भूले मरई पलानी मेरी जननी।
तेरे गोद बीच नाचे योगिनि यमुन गङ्गै,
सोनभद्र गावें मीठी बानी मेरी जननी॥
कृष्णरावी ब्रह्म पुत्र मङ्गल सुनावे नित,
सरयू की अजब कहानी मेरी जननी।
तरल तरंग लहराय टोना जादू मारे,
टोना वष मति बड़रानी मेरी जननी॥
ललक ललाकि मन धावे नद नीर तीर,
मेरो प्राण गङ्ग महरानी मेरी जननी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयति जयति पुन्यधाम धर्म की अमल भूमि;
जयति जय श्रीभारत भवानी मेरी जननी ॥

आगरा प्रयाग काशी बम्बे पाटलपुर वंश,
दिल्ली तेरी शुभ रजधानी मेरी जननी ।

तेरे पुत्र शूर बीर केशरी श्री कौशलेन्द्र,
तेरी कन्या सीता महरानी मेरी जननी ॥

तेरे उपदेशक भये व्यास सनकादि मुनी,
नारद वशिष्ट से विज्ञानी मेरी जननी ।

तुरे सुत धर्मचारी शंकर श्रीरामानुज,
रामानन्द गौर प्रेमदानी मेरी जननी ॥

कवि बाल्मीकि कालिदास, जयदेव, विद्या,
तुलसी की मधुरी कहानी मेरी जननी ।

तेरे भाग्यशाली नृप जार्ज राज राजेश्वर,
आये थे सहित महरानी मेरी जननी ॥

परम कृपालु दोऊ तेरे प्रेम मुग्ध होके,
बैठे आगे दिल्ली रजधानी मेरी जननी ।

नृप प्रेम पाके अब जागु जागु माता मेरी,
आगे तेरे नई जिन्दगानी मेरी जननी ॥

धारु माथे मौर चम्प कुसुम की साजि वेश,
सारु अङ्ग झलक जवानी मेरी जननी ।
हिमदुतिकारी भालधारी वनमाल लाल,
वसन संवारु रङ्ग धानी मेरी जननी ॥

देश वो विदेश के भविष्य वर्त्तमान कवि,
गायेंगे "जय भारत भवानी, मेरी जननी ।
कोऊ जीवै धनहित कोऊ जीवै अनहित,
मेरा प्राण तुही महारानी मेरी जननी ॥
जन रघुवीर बार बार तोहि प्रणवत,
सुघर सनातन की नानी मेरी जननी ।
जयति जय जय पुन्यधाम कर्म को असल भूमि,
जयति जय श्रीभारत भवानी मेरी जननी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगला चरण के पश्चात स्वागतकारिणी समिति के प्रधान अनरेबल कुमार कीर्त्यानन्द सिंह जो सभा के अध्यक्ष हुए और आपने अपना निम्न लिखित भाषण पढ़ सुनाया—

कुमार कीर्त्यानन्द सिंह जी का भाषण।

"मान्यवर महोदय गण,

"करुणालय श्री जगदाधार परमात्मा को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनकी असीम कृपा एवम् अनुकम्पा में आज मुझे यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ कि प्राचीन गौरव के केन्द्र विहार प्रदेश में आप लोगों का स्वागत करूँ। आज दुर्भाग्यवश चाहे उन्नति के मार्ग से हम लागों का देश पीछे पड़ गया हो, किन्तु एक दिन वह था जब यह देश भारत के अपर देशों का गुरु स्वरूप था। इसने एक दिन देवबाणी के गुरु पाणिनिको विद्या पढ़ाई थी, गौतम बुद्ध को निर्वाण का पता बतलाया था, सारे संसार को चाणक्य के द्वारा नीति की और अशोक के द्वारा धर्म्म की शिक्षा दी थी। नीलन्द विश्वविद्यालय तथा मैथिल न्याय के विद्यालयों में देश देश के लोग आकर विद्या धन प्राप्त करते थे। जिस समय नदिया का कोई नाम तक न जानता था, आज की सभ्य जातियां जिस समय असभ्य बर्ब्बर गिनी जाती थीं, उस समय गौतम मुनि न्याय दर्शन की और कपिल मुनि सांख्य दर्शन की रचना कर रहे थे। वाचस्पति षट दर्शनों पर भाष्य बना रहे थे। यह विहार ही का सौभाग्य है कि विश्व बङ्ग को इसने कविता पढ़ायी। आज भी बङ्गाल के घरघर में मैथिल कोकिल विद्यापतिका आलाप गूंज रहा है। किन्तु पीछे की बात पीछे ही रह गयी। आज तो बात बात में हम लोगों को दूसरे ही का मंह जोहना पड़ता है।

"बिहार में यह भागलपुर नगर भी—जहां आप लोग आज विराजमान हैं और जहां के निवासी आप लोगों के दर्शन से आज कृतकृत्य हो रहे हैं—एक अतीव प्राचीन स्थान है। हिन्दू तथा मुसलमानों के प्रभुत्वकाल में इस ने अपने अच्छे दिनों को देखा था। अङ्गदेश का यह प्रधान अङ्ग है। महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम अद्यावधि पाया जाता है। हिन्दूराजत्वकाल में पालवंशीय धर्म्मपालने विक्रमशिला विश्वविद्यालय को स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर इस प्रान्त की कीर्तिध्वजा सारे देश में फहरायी थी। पुरातत्व वेत्ता कहते हैं कि, यह विख्यात विश्वविद्यालय कहलगांव के पत्थर घट्टा स्थान में था। आप लोग यदि चाहें तो थोड़े परिश्रम में उस पुण्यस्थान का दर्शन पा सकते हैं। जैनियों के दसम तीर्थङ्कर वशुपूज्य ने इसी ज़िले में जन्म धारण किया था और चम्पानगर के सुन्दर मन्दिर उनके स्मारक रूप आज भी विद्यमान है। इस ज़िले में जैन धर्म्म के स्मारक चिन्ह विश्वास दिलाते हैं कि, किसी समय विख्यात चम्पानगर जैन धर्म्म का एक केन्द्रस्थान अवश्य था। आज भी लाखों जैनी यहां दर्शन करने आते हैं। मुसलमानी शासन काल में मीर कासिम के साथ इस नगर का बहुत सम्बन्ध था।

"इस प्राचीन नगर में आप लोगों को स्वागत करते मुझे आन्तरिक आनन्द होता है और आप महानुभावों का यहां आगमन मेरे परम सौभाग्य एवम् गौरव का चिन्ह है। किन्तु आज जो कार्य मुझे सौंप गया है उसके योग्य मैं कदापि नहीं हूं। आप लोगों की उचित सेवा करने में मैं अपने को हर प्रकार असमर्थ समझता हूं। यह कार्य सर्वथा मेरी योग्यता तथा बुद्धिबल के बाहर है। किन्तु जब मेरे देशवासियों ने मुझे पद देकर अपनी उदारता का परिचय दिया, तब आप लोग भी दृढ़ विश्वास रखिये कि इस समय मेरे मुंह से आप लोगों के स्वागत के लिये जो वाक्य निकलते हैं, वे निश्छल भक्ति, हार्दिक और अन्तरिक आनन्द के उद्रेक हैं। मुझ में यह शक्ति नहीं कि अपनी यथार्थ मानसिक अवस्था आप लोगों पर स्पष्ट रूप से प्रकटित करूं। क्योंकि, हृदय की बातें हृदय ही सुनता और समझता है; जिह्वा की सामर्थ नहीं कि, उसे कह सुनावे।

"मान्यवर महोदयो, इसमें सन्देह नहीं कि, इस भागलपुर नागरी प्रचारिणी सभा का जन्म आज सुफल हुआ, इसके मनोरथ सिद्ध हुए और यह प्रकार से कृतार्थ हो गयी। आप लोगों को अपने मण्डप में बैठा कर यह अपने को आज बड़ी सौभाग्यवती मानता है। आप लोगों ने आज इसके मान की रक्षा की, इसके गौरव को बढाया, इसकी प्रतिष्ठा की वृद्धि की, इसकी कीर्ति अचल की। बिहार के इतिहास में आज का दिन स्वर्णाक्षरों में अङ्कित होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन हिन्दी भाषा के इतने प्रेमी तन मन धन से अपनी मातृ भाषा की सेवा के लिये अनेक शारीरिक कष्टों को अङ्गीकार कर बहुत धन व्यय कर अपन काम धाम छोड़ कर दूर दूर देशों से यहां एकत्रित हो चतुर्थ हिन्दीसाहित्य-सम्मेलन में सम्मिलित हुए हैं।

"गत तीन वर्षों से इस सम्मेलन की वार्षिक बैठक हो रही है। हर बैठक में बड़े २ विद्वान हिन्दी भाषा की अवस्था, इसकी उन्नति का उपाय, दूसरी भाषाओं के साथ इसका सम्बन्ध, इसकी उपयोगिता और इसके अभाव आदि विषयें पर विचार कर रहे हैं और अपने आदरणीय मन्तव्यों को सुना रहे हैं। इस विषय में मेरा कुछ कहना बाहुल्य है। क्योंकि पहले ते मुझ में इसके कहने की योग्यता ही नहीं और दूसरी बात यह है कि, जहां तक मैं समझता हूं आज मेरा कर्त्तव्य आप लोगों की सेवा करना है, न कि अपने मन्तव्यें को आप लोगों पर प्रकटित करना। किन्तु देखता हूं कि, ऐसा शुभ अवसर प्रायः नहीं आता। अतएव मेरी विनीत प्रार्थना और दृढ़ आशा है कि, यदि मैं आप लोगों का अमूल्य समय थोड़ासा नष्ट करूं तो आप लोग मुझे क्षमा करेंगे और मुझ पर रुष्ट न होंगे।

"मतभेद होने पर भी हम लोग यही मानते और विश्वास करते हैं कि हम लोग हिन्दी भाषाभाषी हैं। बिहार की मातृभाषा हिन्दी है; बिहार की कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं। यों ते किसी देश में पुस्तकवाली परिमार्जित भाषा नहीं बोली जाती। यह कौन नहीं जानता कि, वीरभूमि से हुगली की बोली में बहुत भेद है और इन देशों से ढाका और दिनाजपुर की बोली में कोई समता हो नहीं है। तब क्या एक बंगभाषा है, दूसरी नहीं; और दोनों प्रान्तों के लोग बंगभाषाभाषी नहीं हैं? यही दशा इंगलैण्ड की भी है, जहां प्रत्येक पांच मील पर बोली बदलती जाती है। विज्ञ पुरातत्त्ववेत्ताओं ने बहुत खोज कर जब यह सिद्ध किया है कि, प्रारम्भिकावस्थावली हिन्दी की उत्पत्ति मिश्रित शौरसेनी अथवा मिश्रित मागधी से हुई है और सामयिक हिन्दी, पश्चिमी तथा पूर्वी हिन्दी का सुधरा हुआ रूप है, तब हम लोग डाक्टर ग्रियरसन की सेन्ससरिपोर्ट वाली बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानने को प्रस्तुत नहीं हैं। यों कोई अज्ञानवस "स" को "श" भले ही लिख दे, किन्तु बिहार हिन्दी का बंगला से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसे तो विद्यापति ठाकुर का प्रभाव बङ्ग साहित्य पर बहुत पड़ा है, अतएव प्रारम्भिकावस्था में बङ्गभाषा हिन्दी से बहुत मिलती जुलती हुई दीख पड़ती है। कोई कितनाही कहे, किन्तु यह अवश्य मानना ही पड़ेगा कि वर्त्तमान हिन्दी की आदि जननी संस्कृत ही है और विविधकाल में नाना रूपों को धारण करती हुई आज यह इस अवस्था को प्राप्त हुई है और इसने इस कलेवर को धारण किया है। यह भी कहना असङ्गत जान पड़ता है कि, बिहार की लिपि कैथी ही है। साधारण व्यवहार में कैथी का प्रचार चाहे जितना हो, किन्तु पुस्तकों की लिपि पहले से आजतक नागरी ही रही और है।

"मैं अपने बिहारी भाइयों से यही कहूंगा कि, आप लोगों को कोई हिन्दीभाषाभाषी कहे चाहे न कहे, इसमें आपकी कोई हानि नहीं। आपका कर्त्तव्य यही है कि, जैसे आज तक आप के पूर्वज हिन्दी की सेवा करते आये हैं, उसी प्रकार आप भी करते जाइये। पं० केशवराम भट्ट, बाबू रामदीन सिंह, पं० अम्बिकादत्त व्यास, पं० छोटूराम त्रिपाठी और बाबू अयोध्याप्रसादजी आदि महानुभावों का अनुकरण कर आप लोग इसकी एकान्त उपासना कीजिये। दूसरों को उपहास करने दीजिये। आप जब अपर प्रान्त के लोगों से हिन्दी का कुछ कम आदर तथा स्नेह नहीं करते, हिन्दी पर कुछ कम ममता नहीं दिखाते, जब दूसरे प्रान्त के निवासियों से आप इसके साहित्यक्षेत्र में कुछ कम काम नहीं करते तब आप के हताश होने का कोई कारण नहीं है। यों तो जिसके जी में जो आवे वह कह सकता है।

"श्री लल्लूजी लाल के समकालीन श्री सदल मिश्र की "चन्द्रावती" को देख कर भी मैं नहीं कह सकता कि, लोग क्यों ऐसा सन्देह करते हैं कि, बिहार के आदर का धन हिन्दी नहीं है। चन्द्रावती की भाषा सर्वाङ्गसुन्दर एवम् परिमार्जित है और आज की प्रचलित पुस्तकोंवाली भाषा से किसी प्रकार हीन नहीं है। यह सदल मिश्र बिहार के अन्तर्गत आरा के निवासी थे। इधर छपरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी पजनेश कवि ने भी अपनी कविता द्वारा हिन्दी को अलंकृत करने में त्रुटि नहीं की है। अतएव कहना पड़ता है कि, बिहार भी यथासाध्य अपनी मातृभाषा की सेवा करता आया है, जिसका पूर्ण उल्लेख आप लोग अपर महानुभावों से सुनियेगा।

"आप लोगों के सम्मुख में यदि हिन्दीसाहित्य सम्बन्धी एक आध अपने मन्तव्यों के प्रकट करने का साहस करूँ, तो आशा है कि आप सज्जन मेरी धृष्टता क्षमा करेंगे। आप लोगों की यह लालसा अवश्य है कि हिन्दी राष्ट्र पद को प्राप्त करे, यह हर प्रान्त में व्यवहृत हो। किन्तु इसे इस योग्य बनाने के लिए आप लोगों को उचित है कि, अपर प्रान्तों के निवासियों की कठिनता की ओर ध्यान दें। देशी भाषाओं में बङ्गला साहित्य आज सब से उच्च गिना जाता है। किन्तु उस भाषा का व्याकरण हिन्दी के व्याकरण से कहीं सरल है। हिन्दी में लिङ्ग का उलझन नये सीखने वालों के लिए एक भारी अड़चन है। कितने विदेशी इसी भय से इसके निकट आने का साहस नहीं करते। अतएव मैं विनीत भाव से यह कहूंगा कि सम्मेलन लिङ्ग के नियमों को यदि सुधारने और कुछ सरल करने की चेष्टा करे, तो हमारी सर्वश्रेष्ठ भाषा के प्रचार में बहुत कुछ सुगमता प्राप्त हो।

"आप लोगों को भली भाँति विदित है कि जीवित भाषा को नियम बद्ध करना कितना कठिन है। जिस भाषा में नित्य नया परिवर्त्तन हो रहा है, जिसमें नये नये महावरों का प्रति दिन समावेश हो रहा है, जिसमें भावभरे नवीन शब्द एवम् वाक्य सदा संगृहीत किये जा रहे हैं, उसे भला कैसे कोई व्याकरण के जटिल नियमों में जकड़ सकता है? यह बात स्वतः सिद्ध है कि, साहित्य से व्याकरण बनता है और व्याकरण से साहित्य नहीं। अतएव जब तक हम लोग इधर शृङ्खलाबद्ध नियम की बेड़ी तैयार करेंगे, उधर तब तक साहित्य उन्नति के मार्ग में अग्रसर हो जायगा और व्याकरण पीछे का पीछे ही पड़ा रह जायगा। इसीसे मेरी प्रार्थना है कि आप लोग व्याकरण के नियमों को ढीला कीजिये।

"इधर भाषा प्रणाली की ओर भी ध्यान देना हम लोगों का कर्त्तव्य है। वर्त्तमान शैली के जन्मदाता प्रातःस्मरणीय भारतभूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की सदा यही इच्छा रही कि हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा की शैली सरल, सहज, सरस, मनोहर एवम् ओजस्विनी हो। उनकी इस अभिलाषा को सफलीभूत करने के लिए हम लोगों को चाहिये कि अव्यवहृत, अप्रचलित, क्लिष्ट संस्कृत शब्दों का व्यवहार अपने लेखों में न किया करें। हिन्दी की शैली ऐसी होनी उचित है कि सर्वसाधारण इसे सुगमता से समझ सकें। ऐसा करने के लिये हम लोगों को चाहिये कि, अपर भाषा, यथा अङ्गरेज़ी, फ़ारसी के साधारण नित्य के व्यवहारवाले शब्दों का प्रयोग किया करें। असंकुचित भाव से मुझे यह कहना पड़ता है कि, हिन्दी का शब्द भण्डार अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है और सब प्रकार के भावों को सुगमता से हम लोग अपनी भाषा में प्रकटित नहीं कर सकते हैं। अस्तु, हम लोगों को उचित है कि विविध भाषाओं से भिन्न भिन्न भावों के शब्दों का अपनी हिन्दी भाषा में समावेश करें, जिसमें इसके गौरव तथा राष्ट्रीयता की उन्नति हो। इस विषय पर ध्यान रख कर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को उचित है कि, अपने "शब्द सागर" में अपर भाषाओं के व्यवहृत शब्दों को भी स्थान दे।

"सर्वसाधारण पर जितना पद्य का प्रभाव पड़ता है उतना गद्य का नहीं, क्योंकि पद्य मानव जाति की हृदय रञ्जनी शक्ति पर प्रभाव डालता है। इसीसे गद्य की अपेक्षा कविता की स्थिति अधिक होती है। अतएव मेरी प्रार्थना यह भी है कि साहित्यसेवी साधारण नित्य के व्यवहारवाले गीत के छन्दों में गूढ़ तथा गम्भीर बिषयों एवम् भावों का सरल भाषा में उल्लेख करें। क्योंकि सरल शब्दों से बनी हुई कविता प्रायः मधुर एवम् मनोहर होती है और उसके भाव सहज में हृदयगङ्गम हो जाते हैं। जितना सहज में मनुष्य कविता कण्ठस्थ कर लेता है, उतना सहज में पद्य नहीं। यही कारण है कि, श्री सूरदास जी, विद्यापति ठाकुर तथा बरदाई कविचन्द की कविता लोगों की जिह्वापर आज भी विराजमान है, किन्तु उनके समकालीन किसी गद्य लेखक का नाम तक भी किसी को स्मरण नहीं। मैं यह तो कभी विश्वास कर नहीं सकता कि उस समय गद्य में कुछ लिखा ही नहीं जाता था। क्योंकि किसी भाषा की उन्नति होते ही उसमें कविता की रचना नहीं होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती। दूसरी बात यह है कि केवल शिक्षा पाये हुये लोग पुस्तकों को पढ़ सकते हैं किन्तु गीत को तो सहज में सभी सुन सकते और गा सकते हैं। अतएव इसके द्वारा भाषा का पूर्ण प्रचार भी हो सकता है।

"दिनोंदिन हिन्दी भाषा का गौरव देश में बढ़ता जाता है। आज पश्चिमीय उच्च शिक्षा तथा उपाधियों को प्राप्त किये हुए लोग भी इसे आदर की दृष्टि से देखने लगे हैं। अब हम लोगों का धर्म्म है कि इसे सर्वाङ्ग पुष्ट करने की चेष्टा करें, इसके भण्डार को सब ओर से भर दें। इसके लिये इसके साहित्य को उच्च श्रेणी का करना और साथ ही साथ उसे सर्वसाधारण के लिये सुलभ बनाना पड़ेगा। गूढ़ विषयों का सरल रीति से उल्लेख करना होगा। तभी हम लोग आशा कर सकते हैं कि नागराक्षर तथा हिन्दी भाषा उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर होकर और सारे भारतवर्ष में आदरणीय होकर राष्ट्रीयता के सर्वोच्च आसन पर आसीन होगी और तभी इस हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का उद्देश्य पूरा होगा और उसकी मनोरथ-वेला पुष्पित होगी।

"आप लोग जैसे इतने साहित्य सेवी कर्म्मवीर यहां आज इसी लिये एकत्र हुए हैं कि एक मन एक प्राण हो निःस्वार्थ भाव से इसको विचारें कि हिन्दी भाषा की उन्नति किस प्रकार हो सकती है। आप लोग भली भांति जानते हैं कि हिन्दी को सर्वोच्च पदपर पहुंचा देना ही इस सम्मेलन का उद्देश्य है। यदि इसका उपाय हम लोग नहीं निकाल सकें, यदि अपने उच्च विचारों को हम लोग कार्य्य में परिणत नहीं कर सकें, यदि अङ्गरेज़ी जैसी सर्व व्यापिनी हम लोग अपनी भाषा को बना नहीं सकें, यदि इसकी आदि जननी संस्कृत जैसी इसे उच्च न कर सकें तो हम लोगा का परिश्रम एवं व्यय व्यर्थ है। परन्तु इस उद्देश्य में कृतकार्य्य होने के लिये समस्त हिन्दी भाषाभाषियों को उद्योग करना होगा। एक दो के किये यह कार्य्य कदापि नहीं हो सकता। आप लोगा को यह निश्चय समझना पड़ेगा कि, पारस्परिक क्षुद्र विवादों को परित्याग कर प्रत्येक साहित्यवीर जब तक इस कार्य्य के करने में बद्ध परिकर न हो जाय, हिन्दीभाषाभाषी मात्र तन मन धन से जबतक इसके उद्धार की चेष्टा न करें, तब तक हम लोग सफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरथ नहीं हो सकते। देश में नागरी प्रचार के लिये जितनी सभाएं स्थापित हुई हैं और हो रही हैं उन्हें उचित है कि एक साथ मिलकर काम किया करें, एक दूसरों को यथासाध्य साहाय्य प्रदान करें और सम्मेलन समिति को अपना केन्द्र मान कर उसकी सम्मति से कार्य्य किया करें।

"विहार के अभ्युदय के ये शुभ लक्षण हैं कि यह प्रान्त स्वतंत्र हो गया और ईश्वर की असीम कृपा से हम लोगों के प्रथम और वर्त्तमान शासनकर्त्ता श्रीमान् सर चार्लस स्टूअर्ट वेली महोदय एक सच्चे सुयोग्य साहित्य प्रेमी मिले। हिन्दी भाषाभाषियों पर यह बात विदित है कि गत फ़रवरी मास में आरा नगर में आरा नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से अभिनन्दन अङ्गीकार करते समय श्रीमान् ने श्रीमुख से कहा था कि, नागरी प्रचार के साथ श्रीमान् की पूरी सहानुभूति है। आप लोग जानते हैं कि उक्त सभा के संरक्षक बन कर श्रीमान ने अपनी उदारता का उज्ज्वल प्रमाण दिया है। अपने लिये हिन्दी रसिकों के हृदय में श्रीमान् ने एक उच्च स्थान बना लिया है। इस अवसर पर समस्त हिन्दी भाषियों की ओर से और विशेषतः बिहार निवासियों की ओर से मैं श्रीमान् को हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूं। इनके शासनकाल में हिन्दी प्रचारकों को सरकार से बहुत कुछ सहायता मिलने की आशा है, क्योंकि हाल ही में विहार सरकार ने प्रारम्भिक शिक्षा विभाग की पाठ्य पुस्तकों को कैथी अक्षर में मुद्रित होने से रोक कर नागराक्षर में मुद्रित होने का आदेश दिया है।

"अब मैं आप लोगों का विशेष समय नष्ट करना नहीं चाहता और अन्त में आप लोगों से यही निवेदन करता हूं कि, असावधानता वश यदि हम लोगों के आतिथ्यसत्कार और प्रबन्ध में कुछ त्रुटि रह गयी हो, तो आप लोग उसे क्षमा कर अपनी उदारता का परिचय देंगे। और साथ ही साथ मैं उन सज्जनों का भी अनुगृहीत हू जिन्होंने मुझे नाना प्रकार से इस स्वागत कारिणी सभा के प्रबन्ध में सहायता दी है।

"अन्त में मैं महात्मा मुंशीराम जी से, जो नियम के अनुसार सभापति निर्वाचित किये जा चुके हैं, सभापति का आसन सुशोभित करने के लिये प्रार्थना करता हूं"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमार कीर्त्यानन्द जी के सभापति निर्वाचन-सम्बन्धी निवेदन का पं० बालकृष्ण भट्ट ने समर्थन किया। उनकी वक्तृता का सारांश नीचे दिया है—

"प्रिय भ्रातृ गण,

महाकवि श्रीहर्ष का कथन है—

वाग् जन्म वैफल्यमसह्यशल्यं गुणाधिके वस्तुनिमौनिता चेत्।
खलत्व मल्पीयसि जल्पितेऽपि तदस्तु वन्दिभ्रम भूमितैव॥

जो गुण में अधिक है उसकी प्रशंसा न करना या यथोचित उसका गुण न कहना मानो मुख में जिह्वा का होना व्यर्थ है। न केवल इतनाही वरन एक ऐसी चोट चित्त में लगती है जो कांटे के समान सदा चुभा करती है कि हाय! अवसर पाय चूक गये। हमने ऐसे गुणी का गुण गान न किया, धिक्कार है हमें। जो कहो, उसके गुणों का पूरा गान न करो तो कुछ ही उसके गुण कह कर सुनाओ तो यह एक प्रकार की खलता है कि जिसमें चार उत्कृष्ट गुण हैं उसमें दोही को कह दो छोड़ दिये—तब पूरा पूरा गुणगान करते हैं तो सब लोग कहैंगे कि यह तो वन्दी और भाटों सा गुन गा रहा है। घटाय के कहते हैं तो खल बनते हैं, इससे चाहो हम भाट वन्दी बनै, भट्ट हई हैं, भाट बन जांयगे पर आपके गुण का गान करैंगे सही—

आपका काम जगत विदित है। आप गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान नेता हैं। जो कुछ गुरुकुल में इस समय उन्नति है वह सब आपही के निरन्तर परिश्रम का परिणाम है—सद्धर्म प्रचारक जो पहिले उर्दू में था उसे आपने हिन्दी कर दिया। इसमें आपने बहुत सी हानि भी सही पर अपनी मातृभाषा के प्रेम से ऐसा आपको करना ही पड़ा। पंजाब जैसे उर्दू ग्रसित प्रान्त में आप हिन्दी के प्रचार का सतत परिश्रम कर रहे हैं, इससे अधिक मातृभाषा के प्रेम का उदाहरण क्या होगा। अस्तु, इनके गुण को बराबर सुनते ही रहे पर नेत्रों ने आपको देखा नहीं था। जब कान और आंख में लड़ाई होने लगे तब आंख कान को टोक दे—"तुम व्यर्थ प्रशंसा सुना करते हो हमने तो देखा ही नहीं।" सो आज आप अक्षिगोचर हो हमारी इस सभा को सुशोभित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं। इससे हम आपके सभापति होने का सर्वथा अनुमोदन करते हैं।

श्रुत्वापि दूरे भवदीय वार्त्ताम्, कर्णौच तृप्तौ नहि चक्षुषीमे।
तयोर्विवादं परिहर्तु कामः, समागतोहं तव दर्शनाय ॥"

वयो वृद्ध भट्टजी के अनुमोदन का समर्थन मान्यवर बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने अपनी ओजस्वनी भाषा में किया। आपने कहा "श्रीमान् महात्मा मुंशीराम जी की प्रशंसा करना मानों सूर्य्य को दीपक दिखाना है। जो स्वार्थत्याग महात्मा जी ने किया है उस को शिक्षित भारत सन्तान भली प्रकार जानते हैं। महात्मा जी के उद्योग से गुरुकुल की स्थापना हुई और उस गुरुकुल में उच्चशिक्षा हिन्दी द्वारा दी जाती है। आपका सद्धर्म्म-प्रचारक उर्दू में निकलता था और उसकी ग्राहक संख्या बहुत अधिक थी। उस उर्दू के पत्र को आपने हिन्दी का रूप देकर अपनी हिंदी हितैषिता का पूर्ण परिचय दिया। पंजाब के उर्दू अख़बारों में हिन्दी मिश्रित भाषा व्यवहृत होती है उसका आरम्भ पहले पहल आपनेही अपने पत्र द्वारा किया था। उसी का आज यह परिणाम है कि पंजाब में हिंदी व्याख्यान अच्छी प्रकार समझे जाते हैं। इस प्रकार आपने कठिन बाधाओं का सामना करके हिन्दी की सेवा की है। यद्यपि आपका स्वास्थ अच्छा नहीं था पर इसकी कुछ भी परवाह न कर आपने यह पद स्वीकार किया। यह आपके हिन्दी प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। अब मैं आपलोगों का अधिक समय न लेकर महात्मा जी से यह प्रार्थना करता हूं कि वे सभापति का आसन ग्रहण करें।"

इस पर खूब करतल ध्वनि हुई और महात्मा मुन्शीराम जी सभापति के आसन पर विराजमान हुए।

आपने दो घण्टे तक एक बड़ी ओजस्विनी और मनोहर वक्तृता से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। उस वक्तृता का सारांश नीचे दिया जाता है:—

सभापति का संक्षिप्त भाषण।

"स्वागतकारिणी सभा के सभापति महोदय, तथा मातृभूमि की शोभा को उज्वल करने वाले भ्रातृगण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का दिन एक बड़े सौभाग्य का दिन है। वर्षों की निरन्तर आकांक्षा के बाद मुझे आपकी सेवा करने का अवसर मिला है। जब मुझे स्वागतकारिणी के उपसभापति का मेरे सभापति चुने जाने का तार पहुंचा तब मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह आश्चर्य अभी तक है और रहेगा। किन्तु जब मैंने भट्ट जी जैसे साहित्य सेवियों को भी अपने को अपनाते पाया तब इसका कारण कुछ कुछ समझ में आ गया। मैं आज प्रातः इसी प्रश्न पर विचार रहा था। अन्त में जो बात मेरी समझ में आ गई वह यह है कि संसार में सब कहीं मनुष्य समाज के संगठन के लिए चार भाग आवश्यक हैं। वे भाग ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, के नाम से विख्यात हैं। ब्राह्मण चाहे जितना मुख से जात्योद्धार का प्रचार करें, क्षत्रिय और वैश्य चाहे जितना अपना काम कर डालें—पर शूद्रों के बिना वर्ण व्यवस्था की पूर्ति नहीं हो सकती, जिस प्रकार बिना पैर के शरीर की पूर्ति नहीं होती। भारत के अवनति के समय अर्थात् राक्षस वंश के राजत्वकाल को ले लीजिये उस समय भी मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी को, नीच शूद्र-बानरों को लेकर काम करना पड़ा था। वही मार्ग आप लोगों ने भी अवलम्बन कर मुझ शूद्र को अपनाया है। आप की इच्छा है कि जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य के होते हुए भी शूद्र की आवश्यक्ता आ पड़ती है उसी प्रकार साहित्य के काम को असली रूप देने के लिए आपने मुझ पर कृपा दृष्टि की है। आपने मुझे अपनाते हुए सद्धर्म प्रचारक का नाम लिया है, उसके विषय में मैं केवल इतनाही कहना चाहता हूं कि मैं आदि से ही सद्धर्म प्रचारक की भाषा में संस्कृत और हिन्दी के शब्दों की अधिकता से प्रयोग करने लगा था। वह भाषा देवियां समझ लेती थीं और प्रचारक इस प्रकार से संपादित होता था जिसमें देवियों को उसे पढ़ने में तनिक भी सङ्कोच न हो। उसके लेखों, नहीं २ उसके विज्ञापनों में भी अश्लील बात नहीं आने पाती थी। इस ओर अन्य समाचार पत्रों को भी विवेष ध्यान देना चाहिये। अनन्तर यह सूचना दी गई कि यदि प्रचारक के ५०० ग्राहक हो जायँ तो वह हिन्दी में निकाला जायगा। पर शोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इतने ग्राहक भी न हुये तो भी ईश्वर पर भरोसा रखकर मैंने उसे हिन्दी में निकालना आरंभ किया।

वास्तव में मुझे उर्दू से कोई द्वेषभाव नहीं है। परन्तु मैं आर्यभाषा की सेवा करना भारत सन्तान होने के कारण अपना परम धर्म समझता हूं। महाशयो! मैं यह भली प्रकार जानता हूं कि मैं इस गुरुता पूर्ण पद के लिये कदापि योग्य नहीं हूं। मुझ से कहीं अधिक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ साहित्य सेवी आपके सन्मुख उपस्थित हैं तो भी आपने जिस पवित्र भाव से मुझे अपनाया है उसके लिये मैं धन्यवाद देता हूं।

सम्मेलन के उद्देश्य बड़े महत्व पूर्ण हैं। मैं जब इन उद्देश्यों पर विचार कर रहा था तब मेरी दृष्टि नं० २ के उद्देश्य पर पड़ी उसमें लिखा था कि 'देवनागरी लिपि का देश भर में प्रचार करना' किन्तु मेरे विचार से इस नियम द्वारा किसी अंश में सङ्कीर्णता ही प्रगट होती है। मेरी समझ में तो हिन्दी साहित्य का प्रचार भारतही नहीं वरन् विश्वमात्र में किया जाना परम आवश्यक है।

इसका अनुभव मुझे अपने लड़कों को शिक्षा देने के समय हुआ। पहिले भी मेरे मन में यह भाव उत्पन्न हो गया था कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषयुक्त है। इसी भाव और विचार का प्रतिफल गुरुकुल है। मैंने अपने लड़कों को शिक्षा देते समय देखा है कि वे नागरीलिपि और आर्यभाषा बड़ी सरलतासे सीख गये। साथही उनमें शङ्का करने की बुद्धि उत्पन्न हुई और वे बात २ पर प्रश्न करने लगे। ये स्वतन्त्र विचार के चिन्ह हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का दोष यही है कि युवक स्वतन्त्र विचार नहीं कर सकते। हाल में कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी के मि० फिशर से मुझसे बात चीत हुई थी। उन्हों ने कहा कि भारतवासी कठिन से कठिन विषय तैयार कर सकते हैं, पर स्वतन्त्र विचार नहीं कर सकते। मैंने कहा कि कारण यह है कि मातृभाषा द्वारा वे शिक्षा नहीं पाते, आप गुरुकुल चलकर स्वयंही देख लीजिये वहां यह त्रुटि न मिलेगी। मैंने देखा कि मेरे बच्चों से जब शिक्षक ने कहा कि why का उच्चारण "ह्वाई" और Knowledge का "नालेज" होता है, तब यह उनकी समझ में हो न आया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षक भी इसका कारण समझा न सके। यह बात नागरी में नहीं है। इसमें जो लिखा जाता है, वही पढ़ा भी जाता है। इसलिये संसार की लिपि देवनागरी ही होगी।

मेरे इस कथन के कुछ कारण हैं। सब से मुख्य कारण तो यह है कि हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में बड़ी २ त्रुटियां हैं। बड़ी २ अभिमानी भाषाओं की लिपि सर्वाङ्गपूर्ण नहीं हैं। एक सज्जन ने जो एक लिपि विस्तार परिषद के उपसभापति थे अपने भाषण में कहा था कि हिन्दी भाषा का प्रचार केवल भारत में ही नहीं वरन समस्त संसार में होना चाहिये। दिल्ली दरबार के समय मुझ से और एक प्रसिद्ध अंगरेजी पत्र के संपादक मद्रासी सज्जन से बात चीत हुई। बात चीत के सिलसिले में उन्होंने कहा कि शिक्षा का आदर्श अंग्रेज़ी ही ठीक है, हिन्दी की कुछ आवश्यकता नहीं। मैंने उनसे बहुत कुछ कहा पर उनके कुछ समझ में न आया। दूसरे दिन प्रातः काल वे एक मेहतर को बुला कर पाख़ाना साफ़ करने के लिये बार २ अंग्रेज़ी और टूटी फूटी भाषा में कह रहे थे और वह समझता ही न था, उन्हीं सज्जन ने मुझसे उनके आशय को प्रगट करने की प्रार्थना की। मैंने उसे समझाने के बाद उन से कहा कि कहिये शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी में होना चाहिए वा भाषा में? पर उन्होंने इसका कुछ उत्तर न दिया। सारांश यह कि अंग्रेज़ी का राष्ट्रभाषा होना एक प्रकार से असंभव ही है। सब भारत के राजनैतिकों के दिल में यह भाव है कि हमें कुछ न कुछ स्वतंत्रता दीजाय। पर मैं उनसे पूछता हूं कि साहित्य के अखाड़े में हमें पूरी २ स्वतंत्रता है कि नहीं, फिर हमारे इस हिन्दी साहित्य का पूर्ण रूप से प्रचार क्यों नहीं होता? आजकल के समाचार पत्रों में प्रायः अश्लील विज्ञापन दिखाई देते हैं। पर उनके निराकरण की विशेष चेष्टा क्यों नहीं की जाती?

भाषा के कारण देश की सभ्यता में भी बड़ा अन्तर पड़ जाता है। हमारी सभ्यता अन्य सभ्यताओं से भिन्न है। बिहार में गौतम बुद्ध की कथा प्रत्येक बाल युवा और वृद्ध को मालूम है। देवदत्त पत्नी को तीर मार कर उसे घायल अवस्था में नीचे गिरा देता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सिद्धार्थ उसे ईश्वर की सृष्टि का एक जीव समझ कर हृदय से लगा लेता और पालन पोषण करता है। जिस समय वे दोनों उचित न्याय के लिये राजदरबार में जाते हैं, राजा अपने पुत्र का पक्ष न लेते हुए साफ़ शब्दों में यह निर्णय करता है कि मारने वाले से बचाने वाले का अधिकार कहीं अधिक है। भारतवर्ष अहिंसा प्रधान देश है।

लोग हमपर दोषारोपण करते हैं कि भारतवासियों में स्त्रियों की प्रधान प्रतिष्ठा नहीं की जाती, उनका सत्कार कभी नहीं होता। मैं कहता हूं कि यह वही पवित्र भूमि है जहां रामसीता श्यामराधे न कह कर सीताराम और राधेश्याम ही कहा करते हैं। पश्चात्य सभ्यता की झलक इसी बात से प्रगट है, कि दिल्ली दरबार के अवसर पर किंगजार्ज के पश्चात् राजरानी मेरी को स्थान मिला था। किंतु हमारे यहां स्त्री का आदर मुख्य माना गया है। यह देश शक्ति और शक्ति पूजा का प्रधान देश है।

तीसरी बात जो हमारे देश की विशेषता है वह ब्राह्मणों का उच्च स्थान है। ब्राह्मणों की प्रधानता न होने के कारण ही संसार कष्ट झेल रहा है। अमेरिका में प्रबल लक्ष्मी Mighty Dollar की धूम है। धनकी कामना के कारण ही वहां नित्य हड़तालें हुआ करती हैं। भारत के राज्य सचिव भी धन सम्बन्धी झगड़ों में दिन रात अपना दिमाग़ गड़ाए रहते हैं। उन्हें भी धन प्राप्ति के बिना चैन नहीं पड़ता किन्तु इसी देश के रामराज्य के सुशासन का एक मात्र सचिव महर्षि वशिष्ठ इतना निर्लोभचित्त था जो लक्ष्मी और सांसारिक वैभव को लात मारकर एकनिष्ठ होकर राज्य प्रबन्ध में भाग लेता था। विलायत के धर्मगुरु लार्ड बिशप राज्यारोहण के पश्चात् बादशाह जार्ज के संमुख अति विनीत भाव से अपना मस्तक नवाते हैं पर विश्वामित्र के आने पर हिंदू राज्य के प्रधान सूर्य महाराज दशरथ अपना सिंहासन् छोड़कर सिर झुकाए हुए उनके स्वागत के लिए दौड़ते हैं। अँग्रेज़ी और हिन्दी के आदर्श में यह अन्तर है। अँग्रेज़ी को राष्ट्रभाषा बनाने से भारत का राष्ट्र भस्म तुल्य है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या उर्दू भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है या नहीं? प्रयाग में हिंदी उर्दू की लिपि पर विचार करने के लिये एक कान्फ़्रेंस बैठी थी। मैं भी उस में निमंत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर गया था। उसके सभापति जस्टिस कृष्ण स्वामी आइयर ने मुसलमान भाइयों से कहा था कि "कुरान को कंठ करो अरबी के आलिम बनो लेकिन कुरान को भी हिन्दी लिपि में लिखो।" यह हिन्दी का महत्व है। हमारा आदि काल से ही यह सिद्धांत रहा है कि "उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्"—यह शिक्षा हमें संस्कृत और हिन्दी से ही मिलती है। भिन्न २ प्रान्तों की दृष्टि से ले लीजिये वहां भी आप हिन्दी ही को राष्ट्रभाषा के योग्य पावेंगे। विहार की वास्तविक भाषा तो आर्यभाषा ही है-पंजाब के बन्दोबस्त में पहले पहल काम करने वाले संयुक्तप्रान्त से गए थे और वहां के पटवारी के फ़ार्म हिन्दी में थे। उर्दू देवी और गुरुमुखी का इतना प्रबल प्रचार रहते हुए भी हिन्दी ही का इतना सन्मान क्या कुछ कम गौरव की बात है! प्रयागीय सम्मेलन के साथ ही साथ नागपुर में All India Moslem League का भी अधिवेशन हुआ था, उस समय वहां के चीफ़ कमिश्नर अब सर की उपाधि पाये हुये मि० रेजिनाल्ड क्रैडक ने प्रमाण द्वारा यह सिद्ध किया था कि इस (मध्य) प्रान्त में अधिकांश हिन्दी जानने वाले हैं। राजपूताने की तो बात ही निराली है, प्रसिद्ध पृथ्वी राजरासो का रचयिता महाकवि चन्दवरदाई जिस राज्य में उत्पन्न हुआ उस के लिए दूसरी भाषा के प्रचार का विचार तक करना पाप होगा। बम्बई में जब मैं नासिक का गुरुकुल देखने गया, मैंने पांडवों की कन्दराओं देखकर जो प्रश्न अपने कोचवान से पूछे उन के उत्तर पाने पर मुझे इस बात की कोई शंका न रही कि यहां की राष्ट्र भाषा कोई दूसरी भी हो सकती है। उसने हमारे प्रश्नों का उत्तर गुजराती में न देकर हिन्दी में ही दिया। आर्यभाषा सम्मेलन के समय वैद्यक चिकित्सा के प्राण कविराज योगीन्द्रनाथ सेन ने एक प्रस्ताव के अनुमोदन करते समय एक युक्तिपूर्ण बात कही; वह यह कि जब वे चिकित्सा के लिए नैपाल राज्य गए और उन्होंने रोग का निदान जानने के लिए अँग्रेज़ी में बात चीत की उनका उत्तर वहां उस के प्रचार न होने के कारण स्पष्ट न मिल सका—ऐसी अवस्था में द्विभाषा के रूप में एक और भी भाषा व्यवहार की गई जिसने सब कष्टों को शान्त कर दिया और वह यही पवित्र आर्यभाषा थी। मद्रास में संस्कृत शब्दों का संस्कार होते हुए कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का अनादर करेगा। अब पंजाब सिन्ध और सीमाप्रान्त की दशापर बिचार कीजिए। वहां के डेरा इस्माइल खां, डेरा ग़ाज़ी खां आदि नगर सब उर्दू के पुष्टि प्रमाण हैं किन्तु वहां की भाषा की अनर्गलता भी हिन्दी साहित्य को पुष्ट करने वाली है। दूध के स्थान पर वहां खीर का प्रयोग है, घृणा से घिन-जमात्रा से दमाद व जमातरा, सिंह से शींह, टुट गया से भज्ज गया, कुता से कीता, पिपीलिका से पपीली, क्या सिद्ध करते हैं? क्या अब भी कोई उर्दू के राष्ट्र भाषा होने की शंका कर सकता है? पंजाब के लोग पहले अँग्रेज़ी में पत्र लिखा करते थे पर अब हिन्दी में भी पत्र व्यवहार करने लगे हैं। अब हिन्दी ने उनके हृदय पर अधिकार जमा दिया है। हिन्दू सभ्यता की स्थिति के लिए यह आवश्यक है कि आर्यभाषा का प्रचार हो। आर्यसमाज भी हिन्दी प्रचार के लिए पंजाब प्रान्त में अच्छा उद्योग कर रहा है। हमारे मिश्र बन्धुओं ने अपने हिन्दी के इतिहास नामक ग्रंथ में इस काल को दयानन्दकाल के नाम से माना है। सारांश यह कि संस्थाओं के द्वारा मातृभाषा की उन्नति होनी चाहिये। आर्यसमाज के बाद ब्रह्म समाज का नम्बर है—वहां किसी समय विदेशी प्रतीकों द्वारा कार्य होता था, पर अब वे सभाएँ भी हिन्दी भाषा द्वारा ही अपना पत्र व्यवहार करती हैं।

शोक है कि सम्मेलन ऐसी महत्वपूर्ण संस्था में पञ्जाबी उचित योग नहीं देते। पञ्जाबियों के लिए ऐसी जातीय संस्थाओं से अलग रहना एक बड़ा भारी धब्बा है। अब तक बहीखातों में वहां वही मूड़कटी-'लूंडे' अक्षर लिखे जाते हैं पर अब उसके स्थान पर आर्य भाषा का प्रचार हो रहा है। जलंधर में सर्वत्र बही नागरी में लिखी जाती हैं। अमृतसर में भी तीन दूकानों में बही खाता नागरी में किया गया है। क्या यह सब जागृति के चिन्ह हमारे अन्दर नहीं हैं?

सज्जनो। एक बात और कहनी है। ऐसी उन्नत अवस्था में भी दो एक बातें हमारे भविष्य को बड़े अंधकार में डाल देती हैं। दिल्ली, पुरानी दिल्ली—प्राचीन इन्द्रप्रस्थ—पांडवोंका गढ़ - ब्रिटिश राज की राजधानी—दिल्ली में इस समय एक भी दैनिकपत्र नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उर्दू के साप्ताहिक यहां दैनिक हो गए—मुसलमानी लोकमत वहां बड़ी तेज़ी से गूज रहा है, पर हिन्दुओं की भाषा हिन्दी—देश भर की राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के साप्ताहिक सद्धर्म प्रचारक के अतिरिक्त कोई समाचार पत्र वहां नहीं है। वहां एक दैनिक की अत्यन्त आवश्यकता है। सञ्चालकों की कमी नहीं, कार्यकर्त्ताओं की कमी नहीं, केवल धन का अभाव है। यह नहीं कि धन एकत्र ही नहीं हो सकता। लाहौर में रायबहादुर रामसरनदास के पुत्र के व्याह में १२५०००) रुपया व्यय करने का विचार है इतनी रक़म से दिल्ली में दो अच्छे दैनिक निकल आते। दिल्ली में रायबहादुर सुलतान सिंह के पुत्र के व्याहोत्सव में ६००००) व्यय होगा। यदि यही धन इस ओर व्यय किया जावे तो अच्छा सुसम्पादित हिन्दी पत्र निकल सकता है, पर वहां तो जात बिरादरी और लोगों के क्षणिक आमोद प्रमोद की परवाह है।

इसके अतिरिक्त इस समय स्थान २ पर हिन्दी पाठशालाएं और पुस्तकालय खोलने की आवश्यकता है। मेरा तो यह दावा है कि भारतवर्ष के अन्दर यदि आर्यभाषा को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जावेगा तो शिक्षा की उन्नति किसी प्रकार नहीं हो सकती।

हमारे भाग्य से संयुक्त प्रान्त में एक नई यूनिवर्सिटी बनने वाली है। हाल ही में उसके एक सञ्चालक से मुझ से भेट हुई। मैंने उन से हिन्दू यूनिवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम हिन्दी बनाने की प्रार्थना की—पर उन महात्मा ने हमारी विनय को यह कहकर टाल दिया कि अभी हिन्दी साहित्य में पाठ्य पुस्तकों की बड़ी कमी है। जब तक यह कमी पूर्ण न हो—हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाना उचित नहीं। मुझे उन के इस रूखे उत्तर पर स्वामी रामतीर्थ की एक अवस्था का स्मरण हो आया। वे जब अमेरिका के स्थल पर जहाज़ से उतरे तब उन से नियम के अनुसार कुछ रुपया देखने के लिए मांगा गया—स्वामी जी के पास क्या था—उनके पास लँगोटा छोड़ कर और कुछ न था—वे रुपया कहां से लाते। अतएव वे विवश थे। उनके इस त्याग दशा पर मोहित हो वहां के जांच करने वाले ने उन से फिर पूछा कि भाई यदि अमेरिका में तुम्हें भोजन न मिले—और रोज़गार से वञ्चित रहा तो बतलाओ तुम्हें भोजन कौन देगा—स्वामी राम ने छूटते शब्दों में यह उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया कि "भाई तू देगा"। यह शब्द सुनते ही वह अमेरिकन स्वामी जी के पैरों पर गिर पड़ा और तुरन्त अपने गांठ से आवश्यक धन दे कर बिदा किया। पर हाय! स्वामी राम को अमेरिका से उत्तर मिल गया—पर एक भारत के सपूत से हमें अब तक उत्तर न मिला।

मातृभाषा के प्रेमियो! यह स्मरण रक्खो कि माता की उन्नति मातृभाषा पर निर्भर है। यह कहना व्यर्थ है कि हिन्दी में कला-कौशल विज्ञान का कोई साहित्य नहीं। गुरुकुल में वनस्पति शास्त्र और गणित हिन्दी भाषा ही में पढ़ाया जाता है। युक्त प्रान्त के छोटे लाट सरजेम्स मेस्टन ने गुरुकुल का निरीक्षण कर और उसकी पाठ्यप्रणाली पर आश्चर्य प्रगट करते हुए यह कहा था कि जो बातें मैंने देखीं उन्हें मैं कभी न मानता यदि मैं स्वयम् न देख लेता। इस में बात कौन सी है। लैटिन से अंग्रेज़ी व जर्मनी प्रायः शब्द क़र्ज़ लेते हैं। उन की भाषा में धातु कोष की कमी है। प्रसिद्ध तत्ववेत्ता हर्बर्ट स्पेंसर को भी 'प्रकृति' को एक अगम्य वस्तु के नाम से सम्बोधित कर अपना पिंड छुड़ाना पड़ा है। संस्कृत का कोष इतना बड़ा है कि किसी विषय के शब्द तैयार करना कठिन नहीं—भारत के सौभाग्य से इस देश में अब भी रवीन्द्र नाथ ठाकुर सदृश ऐसे २ विद्वान् हैं—जिन्होंने अपने काव्य प्रतिभा से समस्त विश्वमात्र को स्तब्ध कर दिया है—जिन को साहित्य की नोबेल 'प्राइज़' अभी हाल ही में दी गई है, जिसे उन्हों ने बोलपुर के शान्तिनिकेतन को दान कर दिया है। रवीन्द्र बाबू का मत है कि आर्यभाषा ही देश भाषा होने के योग्य है। इसी लए वे गुरुकुल आ रहे हैं। मि० रामज़े मेकडानल ने गुरुकुल को देख कर कहा था कि मुझे स्काटलैण्ड की याद आ रही है। हमारे देश में मातृ भाषा का सत्कार है। मातृभाषा की महिमा समझ कर ऐसा कौन अभागा मनुष्य होगा जो अब भी स्त्री निरादर का हम में दोष लगा सके। अँग्रेज़ी में फ़ादर टाइबर, फ़ादर टेम्स का नाम लिया जाता है पर यह वही देश है जहां गंगा 'माता' की ध्वनि गुंजाई जा रही है। पिता से हम शिक्षा प्रकाश लेते हैं, पर विपत्ति दुर्घटना आपत्ति के समय बड़ा से बड़ा पुत्र अपनी मा की गोद में बैठकर शान्ति प्राप्त करता है। और 'फ़ादरलैंड' (Father-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

land) हैं पर यह 'मादरलैंड' (Motherland) है। "श्रद्धा माता अग्ने पिता" इस सामवेद के मंत्र और "श्रद्धा प्राण" इस अथर्ववेद की उक्ति पर भी कौन नहीं कह सकता कि भारत माता श्रद्धा की भूमि है। इसी श्रद्धा के नाम पर मैं मातृभाषा मातृभूमि के लिए आप से अपील करता हूं। क्या माताके लिए किसी शब्द लालित्यकी आवश्यकता है? क्या उसके लिए कुछ बनावटी ढोंग आवश्यक हैं? माता की सेवा में बालक के तोतले शब्द सीधे जायंगे। ऐ भारत वासियो—भारत माता के याेग्य पुत्रो। क्या माता इसी तरह देखती रहेगी? क्या माता का शोकपूर्ण मुख तुम को दिखलाई नहीं देता? भाइयो! माता ने हम को लाखों वर्षों तक जिस सभ्यता में पाला है क्या हम उसके आंसू न पोछेंगे? क्या हम उस को इसी भांति दुःखित बनाए रक्खेंगे? माता के मलिन मुख को देखो, माता तुम्हारी आशा जोह रही है।

गुरुकुल के निबन्धोत्सव पर एक बालक ने देशभक्ति पर यह कहा था कि "हम सूखे टुकड़े खाएंगे। भारत की जै जै गाएंगे" उस समय मेरा कलेजा भर आया—नेत्रों से आंसू गिरने लगे। मैंने कहा कि माता निरास न हो, तेरे आंसू पोंछने वाले अभी इस देश में पैदा होंगे। एक एक भारत पुत्र अपने कर्तव्यों से माता को निश्चय करा दे—श्रद्धामई मां को अंजली लेकर माता के सामने धर दे—माता पर अपना तन मन धन न्योछावर कर दे—देशभक्ति के अनुपम तरंग में रंग कर माता के दुःख निवारण की चेष्टा करे तभी मां प्रसन्न होगी—तभी हमारा उद्धार होगा।

आओ! हम सब आपस में मिलें—ईर्षा द्वेष भस्म कर माता मातृभाषा की उन्नति में लग जाएं—एक मत—एक विचार—एक शक्ति—एक प्राण—एक समूह—एक जीव—एक तेज हो कर माता के लिए अपना कर्तव्य पालन करें और माता की ओर से "एतद्देश प्रसूतस्य" का आशीर्वाद लें। ओ३म् शांतिः ३।

सभापति के संभाषण के बाद विषय निर्वाचन समिति का संगठन हुआ। इस प्रकार पहले दिन की कार्य्यवाही समाप्त हुई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ दिसम्बर सोमवार

आज भी ख़ूब भीड़ थी। पण्डाल खचाखच भर गया था। नियमित समय पर कार्य्यवाही आरम्भ हुई। मंगला-चरण के पश्चात पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने सैय्यद अमीर अली लिखित "हिन्दी भाषा द्वारा उच्च शिक्षा" निबन्ध का अन्तिम अंश पढ़ा और तत्पश्चात सभापति महोदय ने निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किये और वे स्वीकृत हुए।

(१)

"बाबू देवकीनन्दन खत्री पंडित रामेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी और श्रीमान् भिङ्गानरेश के असमय स्वर्गारोहण पर यह सम्मेलन आन्तरिक शोक और उनके कुटुम्बियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करता है।"

(२)

"(क) यह सम्मेलन हिन्दी के सब पुस्तक प्रकाशकों से प्रार्थना करता है कि, वे अपनी प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति यथा समय सम्मेलन के स्थायी कार्य्यालय में बिना मूल्य भेजने की कृपा कर हिन्दी साहित्य की सम्पूर्ण सूची तथा उसकी सामयिक अवस्था और उन्नति का विवरण प्रस्तुति रखने के उद्योग में सम्मेलन की सहायता करते रहें। पत्रसंचालकों से भी प्रार्थना है कि, कार्य्य में सहायता देने के लिये अपने अपने पत्र उक्त कार्यालय में बिना मूल्य भेजने की कृपा किया करें।

"(ख) इस सम्मेलन के विचार साहित्य की उन्नति का यह एक उत्तम साधन है कि, प्रत्येक तीर्थ स्थान पर और देवालय में हिन्दी पुस्तकालय खोले जायं। इसलिये सम्मेलन तीर्थवासी हिन्दी प्रेमियों और मन्दिरों के सञ्चालकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करता है।

"(ग) इस उद्देशसिद्धि के लिये सम्मेलन की स्थायी समिति एक उपदेशक नियुक्त करे और मन्दिरों के संचालकों से, विशेष कर महन्त महाशयों से लिखा पढ़ी करे।

"(घ) इस सम्मेलन के विचार में हिन्दी भाषा में सत्य, बीरता, परोपकार देशभक्ति आदि उच्च भावों की ओर प्रवृत्त करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले नाटकों का खेलना सर्व साधारण के चरित्र को सुधारने के अतिरिक्त उनमें हिन्दी भाषा और साहित्य की ओर प्रेम उत्पन्न करने का भी उत्तम साधन है। इसलिये हिन्दी में रोचक और शिक्षा प्रद उत्तम उत्तम नाटकों की रचना और भिन्न भिन्न स्थानों में समय समय पर उनकी आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाता हुआ यह सम्मेलन देश के सुशिक्षित सज्जनों से निवेदन करता है कि नाटक खेलने के प्रचलित दोषों को दूर करने और उनको आदर योग्य तथा सर्वसाधारण की शिक्षा का साधन बनाने के लिये वे स्वयं भी उनके अभिनय में सम्मिलित हुआ करें।"

"यह सम्मेलन नाटक खेलने का व्यवसाय करने वाली कम्पनियों का ध्यान भी इस ओर दिलाता है कि देश के प्रति उनका कर्त्तव्य है कि अपने नाटकों को विचारवान लेखकों से सर्वसाधारण के समझने योग्य सरल हिन्दी में लिखवावें जिससे उन नाटकों का प्रचार हो तथा दर्शकों पर उनका अच्छा प्रभाव पड़े।"

"(ङ) इस सम्मेलन के विचार में यह आवश्यक है कि स्थायी समिति उन भारतीय भाषाओं के, जिनकी प्रचलित लिपि नागरी नहीं है, पत्र सम्पादकों से नागरी प्रचार में सहायता पाने का उद्योग बराबर करती रहे।"

"(च) इस देश की भिन्न भिन्न संस्कृत परीक्षा समितियों से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि हिन्दी-भाषाभाषी विद्यार्थियों के लिये संस्कृत परीक्षाओं के साथ हिन्दी का भी एक विषय अवश्य रक्खा जाय।"

(३)

अनन्तर बाबू राजेन्द्रप्रसाद एम० ए०, बी० एल० ने नीचे लिखा प्रस्ताव उपस्थित किया।

"यह सम्मेलन भारतीय सरकार तथा बिहार और मध्यप्रदेश की गवर्नमेण्टों से प्रार्थना करता है कि, वे बिहार और मध्यप्रदेश के भावी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में बी० ए० क्लास तक हिन्दी भाषा अनिवार्य रक्खें और एम०ए० उपाधि के लिये भी हिन्दी एक विषय रक्खा जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रस्ताव का अनुमोदन पं० श्याम जी शर्म्मा ने तथा समर्थन बाबू सुखराम सिंहने किया और सर्व्वसम्मति सेयह स्वीकृत हुआ।

(४)

अनन्तर सभापति ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया—

"यह सम्मेलन बिहार सरकार को सन्थाल परगना और छोटा नागपुर की कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी जारी करने के लिये धन्यवाद देता है और इस ओर ध्यान दिलाता है कि उचित आज्ञा का पालन अब तक नहीं हो रहा है।" सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(५)

पांचवां प्रस्ताव बाबू मदनमोहन सहाय बी० ए०, बी० एल० ने उपस्थित किया। वह इस प्रकार था।

"यह सम्मेलन बिहार, संयुक्त प्रान्त, मध्यप्रदेश और पञ्जाब की गवर्नमेंटों से प्रार्थना करता है कि वे अपने प्रान्तों के गज़टों का सर्वसाधारण की सुविधा के लिए हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित किया करें।"

इसका अनुमोदन पं० जीवानन्द शर्म्मा काव्यतीर्थ ने किया और यह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(६)

इसके अनन्तर बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, एम० ए० एल एल० बी०। ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया—

"यह सम्मेलन बिहार प्रान्त के वकीलों मुख़तारों और कचहरी के कर्म्मचारियों से प्रार्थना करता है कि वे अपने कार्य्य में नागरी लिपि और हिन्दी भाषा का यथा सम्भव, प्रयोग करें। जहाँ कचहरी के फ़ार्म नागरी अक्षरों में न मिल सकें, उचित है कि वहां की हिन्दी सम्बन्धिनी सभाएं फ़ार्मों को नागरी में छपवा कर बेचने का प्रबन्ध करें।"

इसका अनुमोदन बाबू गिरवरधर और समर्थन पं० रामलोचन पाड़े ने किया। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(७)

पण्डित बाबूराव बिष्णु पराड़कर ने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया। इसका अनुमोदन पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी ने किया और यह सर्व सम्मति से स्वीकृति हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि भारत और प्रान्तीय सरकार सर्वसाधारण के लाभ के विचार से अपनी सब छपी हुई पुस्तकें मुख्य मुख्य हिंदी समाचार पत्रों को भी दिया करें।"

(८)

आठवां प्रस्ताव इस प्रकार था।

"यह सम्मेलन भारतवर्ष का रेलवे बोर्ड और कम्पनियों से अनुरोध करता है कि वे हिंदी भाषियों के लाभ के लिये रेलवे नियमावली, टाइम टेबिल, नकशे इत्यादि हिंदी में प्रकाशित करें।

इसके प्रस्तावक बाबू दामोदर दास खण्डेलवाल और अनुमोदक बाबू रामलाल वर्मा थे। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

पैसा फ़ण्ड की अपील

इसके बाद स्वामी सत्यदेव जी ने हिन्दी पैसा फ़ण्ड के लिये अपील की। आपने अपनी ओजस्विनी भाषा में हिन्दी का महत्व दिखलाया। हिन्दी के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है इसको भले प्रकार समझाया। आपने कहा—"किसी देश व जाति का उत्थान नहीं हो सकता जब तक कि वहां के लोग अपनी मातृ भाषा के साहित्य भण्डार को नहीं भरते; जब तक कि वहां के शिक्षित लोग अपनी प्यारी भाषा को नहीं अपनाते। भारत में आज हम क्या देखते हैं। शिक्षित लोग विदेशी भाषाओं में बोलना अपना गौरव समझते हैं। वे यह नहीं जानते कि वे अपनी जड़ों में तेल दे रहे हैं। अरे!

"ग़ैर भाषा हिन्द बच्चों को! स्याही चाँद में!
शेर के बच्चे पले हैं गीदड़ों की माँद में?
हाय खुदगरज़ी बुरा हो, तू ने ही चौपट किया।
तू ने ही मत आर्य सन्तानों की सारी हर लिया॥
व्यास बालमीकों ने माना जिसको ज्यादा प्राण से।
हाय वह हिन्दी उठी जाती है हिन्दुस्तान से॥

समझ जाओ और अपने कर्त्तव्य को देखो। एक मनुष्य के किये से देश का उद्धार नहीं हो सकता जब तक सब मिल कर अपनी शक्ति अनुसार मातृभाषा की सेवा नहीं करेंगे। धन वाले धन से, शक्ति वाले शक्ति से, विद्यावाले विद्या से—जैसी श्रद्धा हो इस यज्ञ में आहुति दो। उठो, अपने कर्त्तव्य का पालन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय है। मातृभाषा सहायता चाह रही है। अपनी अपनी शक्ति भर दान दो। परमात्मा आपका कल्याण करे।"

इस व्याख्यान का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। अपनी अपनी श्रद्धानुसार लोग दान देने लगे। श्री कुमार कीर्त्यानन्द सिंह जी ने ५००) रुपया नक़द दिया और २००) रुपये वार्षिक सहायता देनेका बचन दिया। मौज़ा अगुआनी ज़िला भागलपुर के रामेश्वर प्रसाद सिंह जी ने १००) वार्षिक देने का वचन दिया। और कई एक लोगों ने वार्षिक सहायता देने की प्रतिज्ञा की। कुल वार्षिक सहायता की प्रतिज्ञा लगभग ४९६) रुपये के हुई। नक़द रुपये सब मिला कर ८९०) प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त ६६३।=)। की प्रतिज्ञा हुई। यह वार्षिक सहायता की प्रतिज्ञा से भिन्न है। एक सज्जन ने चाँदी का एक बटन दिया; एकने घड़ी की चेन दी। दोनों का नीलाम आरम्भ हुआ। खूब आनन्द आया। बढ़ते बढ़ते बटन का दाम २०) रुपये हो गया। उस को भागलपुर के एक सज्जन ने ख़रीद लिया। चेन बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त ने १५) रुपये में ख़रीदी। दोनों चीज़ें ख़रीदने वालों ने वहां की प्रदर्शिनी को भेंट करदी।

इस प्रकार हिन्दी-प्रेम-धारा में स्नान करते हुए यह शुभदिन भी बीत गया।

तीसरा दिन

मंगलवार (मार्ग शीर्ष शुक्ल ११)।

आज साढ़े ग्यारह बजे सम्मेलन की बैठक होने की बात थी. पर १२॥ बजे कार्य्यारम्भ हुआ, क्योंकि कल रात को विषय निर्वाचनी समिति का कार्य्य समाप्त न होने पर आज सवेरे उस की बैठक फिर हुई थी।

प्रारम्भ में पण्डित बालकृष्ण भट्ट की नाटक पर वक्तृता हुई। आपने कहा कि भाषा जब उन्नतावस्था को प्राप्त होती है तब नाटक बनता है। जब संस्कृत प्रौढ़ावस्था को प्राप्त हुई थी तब कालिदास और भवभूति ने नाटक बनाये थे। काव्यों में नाटक श्रेष्ठ माना गया है। नाटक से समाज, जाति और देश का बड़ा उपकार होता है। उत्तम नाटकों से जाति की रहन सहन, व्यवहार का पता लगता है और ऐतिहासिक महापुरुषों के चरित्र हमारे सामने आते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उस समय देश की कसी दशा थी, देशका शासन कैसे होता था, राजा प्रजा में कैसा सम्बन्ध था आदि विषय नाटकों से प्रत्यक्ष हो जाते हैं। शूद्रक के "मृच्छकटिक" नाटक पढ़ने से मालूम होता है कि उस समय अदालतों में कैसा अन्धेर था। नाटक के देखने और पढ़ने दोनों में आनन्द आता है। पर दुःख की बात है कि इस समय नाटकों की बडी दुर्दशा है। पार्सी नाटक कम्पनियों ने नाटकों के उद्देश्य को चौपट कर डाला है। उनमें केवल आशिक माशूकों की ही प्रधानता रहती है। गीत अश्लीलता पूर्ण होते हैं। रुचि बिगडती है। आनन्द की बात है कि अब हमारे देश के नवयुवक शौकिया तौर से नाटक खेलने लगे हैं। पर उन की यह शिकायत है कि हिन्दी में अच्छे नाटक बहुत ही कम हैं। अब लेखकों को इधर ध्यान देना चाहिये। ऐतिहासिक, सामाजिक तथा धार्मिक नाटकों का दर्शकों पर बड़ा प्रभाव पडता है। इस समय नाटक के बनने की बडी आवश्यकता है। इस में सन्देह नहीं कि पार्सियों ने इस आर्ट में—नाट्यकला में—बड़ी उन्नति की है। हमारे युवकों को ध्यान रखना चाहिये कि वे इस कला को तो सीख लें पर उनका दुर्गुण न लें।

इस के अनन्तर आनन्दस्वामी ने "बालकों को सरलता से कैसे हिन्दी सिखायी जा सकती है" इस पर व्याख्यान दिया। आपने कहा कि मैं आठ दिन में हिन्दी पढ़ाना सिखा सकता हूं।

इसके बाद कुमार कीर्त्यानन्द के प्राइवेट सेक्रेटरी बाबू रघुवीर-शरण रचित अप्रकाशित एक काव्य में से दो तीन कविताएं पढ़ी गयीं। अनन्तर प्रस्तावों की बारी आयी।

(९)

सभापति ने नीचे लिखा प्रस्ताव उपस्थित किया और वह स्वीकृत हुआ:—

"इस सम्मेलन का मत है कि, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रेमियों को सब प्रकार की लिखा पढ़ी में देशी मिति और संवत् का व्यवहार करना चाहिये।"

(१०)

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने दसवां प्रस्ताव उपस्थित किया:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस सम्मेलन को दुःख है कि हिन्दी-भाषाभाषी ज़मीन्दार और व्यापारी अपना कार्य्य फ़ारसी तथा अन्य लिपि द्वारा करते हैं; सम्मेलन का उनसे अनुरोध है कि, वे बिना विलम्ब नागरी में कार्य्य करना प्रारम्भ कर दें।"

इसका अनुमोदन आरा के बा० सुपार्श्वदासने और समर्थन भागलपुर के रईस बाबू सखीचन्द ने किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(११)

ग्यारहवां प्रस्ताव सभापति ने उपस्थित किया—

"(क) यह सम्मेलन अपना दृढ़ विश्वास प्रकट करता है कि, हिन्दू विश्वविद्यालय की उच्च परीक्षा के लिये शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही हो और इसके आगे प्रत्येक परीक्षा में हिन्दी की पढ़ाई अनिवार्य्य रहे।

"(ख) यह सम्मेलन उक्त विश्वविद्यालय के कार्य्यकर्त्ताओं से सानुरोध प्रार्थना करता है कि अपने सामयिक विवरण तथा अन्य पत्र वे हिन्दी में भी अवश्य प्रकाशित करें।"

प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(१२)

बारहवां प्रस्ताव भी सभापति महाशय ने उपस्थित किया—

"इस सम्मेलन को अत्यन्त दुःख है कि इसके दो अधिवेशनों में मन्तव्य करने पर भी भारत सरकार ने अब तक नोटों पर हिन्दी को स्थान नहीं दिया है। यह सम्मेलन निश्चय करता है कि, स्थायी समिति भारतीय सरकार के पास यह निवेदन करने के लिये डेपुटेशन ले जाय कि, नोटों पर हिन्दी को स्थान मिले।"

प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(१३)

निम्नलिखित प्रस्ताव बाबू श्रीकृष्णप्रसाद बी० ए०, बी० एल० ने उपस्थित किया:—

"यह देखकर कि शिक्षा विभाग के पाठ्य क्रम में हिन्दी की प्रायः ऐसी पुस्तकें स्वीकृत हो जाती हैं, जो बहुधा अङ्गरेज़ी का अनुवाद हुआ करती हैं और जिनकी भाषा भद्दी, अशुद्ध और बेमु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होवरे और कभी कभी विशुद्ध उर्दू होती है, यह सम्मेलन अपना घोर असन्तोष प्रकट करता है और पञ्जाब, मध्यप्रदेश और विहार के शिक्षा विभाग के अधिकारियों से निवेदन करता है कि वे शिक्षासम्बन्धी सब हिन्दी पुस्तकों को हिन्दी के सुलेखकों से लिखवाया करें और इस कार्य्य में सहायता देकर अपनी अपनी टेक्सटबुक कमिटियों में अपने प्रदेश के चुने २ हिन्दी के विद्वानों को स्थान देने की कृपा करें।"

इसका अनुमोदन बाबू मुरलीधर सराफ़ बी० ए० बी० एल० और समर्थन बाबू पांचकोड़ी बनर्जी तथा स्वामी सत्यदेव ने किया।

प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

(१४)

बाबू श्यामसुन्दरदास ने निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :

"यह सम्मेलन निश्चय करता है कि स्थायी समिति एक डेपुटेशन शीघ्र ही संयुक्त प्रदेश के लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर की सेवा में उपस्थित करने का प्रबन्ध करे जो उनका ध्यान प्रारम्भिक शिक्षाके माध्यम हिन्दी होने, वर्नाक्यूलर तथा ऐङ्गलो-वर्नाक्यूलर स्कूलों में हिन्दी पाठ्य-क्रम तथा उसकी पाठ्य-पुस्तकों की सुव्यवस्था होने तथा युनिवर्सिटी शिक्षामें हिन्दी को उचित स्थान देने के सम्बन्ध में दिलावे"।

इस प्रस्ताव का समर्थन बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन ने किया। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(१५)

दरभंगा के वकील पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र एम० ए० बी० एल० काव्यतीर्थ ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया:—

"इस सम्मेलन के विचार में विहार प्रान्त की भाषा हिन्दी है और यहां हिन्दी के द्वारा ही प्रारम्भिक शिक्षा का होना उचित है। इस सम्मेलन के विचार में भोजपुरी, मागधी मैथली आदि स्थानीय बोलियों को बिहार के किसी भाग में शिक्षा का माध्यम बनाना अनुचित और हानिकारक होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अनुमोदन बाबू श्रीकृष्णप्रसाद और समर्थन समस्तीपुर के वकील बाबू गिरवरधर तथा पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने किया। सर्व सम्मति से यह स्वीकृत हुआ।

(१६)

हिन्दी परीक्षा समिति के सम्बन्ध में इस आशय का एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ कि, "नियमावली पर विचार करने के लिये निम्न लिखित सज्जनों की एक कमिटी बनाई जाय जो तीन महीनेके पहले स्थायी समिति में अपनी सम्मति भेज दे। इस पर स्थायी समित विचार कर नियमों में आवश्यक परिवर्त्तन करेगी और तदनुसार कार्य्य प्रारम्भ किया जायगा। अनुभव के बाद जिन परिवर्त्तनों की आवश्यकता मालूम होगी उनके लिये आगामी सम्मेलन में प्रस्ताव उपस्थित किये जायंगे।"

कमिटी के सदस्यों के नाम :—

पं० शुकदेव बिहारी मिश्र (संयोजक), लाला राधामोहन गोकुल जी, बाबू श्यामसुन्दरदास, श्रीयुत हरिश्चन्द्र वेदालङ्कार, पं० रामावतार शर्म्मा, पं० जुगुलकिशोर मिश्र और पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी।

(१७)

इसके अनन्तर बंगभाषा के प्रसिद्ध कवि श्रीयुत रवेन्द्रनाथ ठाकुर के 'नोबल' पुरस्कार पाने पर हर्ष प्रगट किया गया।

इसके अनन्तर सम्मेलन के सहायक मंत्री श्रीयुत नरेन्द्रनारायणसिंहजी ने स्थायी समिति के गत वर्ष के कार्य का विवरण और व्यय का अनुमान पत्र उपस्थित किया * विवरण स्वीकृत हुआ और अनुमान पत्र के विषय में निश्चित हुआ कि इस विषय पर स्थायी समिति विचार करें।

(१८)

इसके पीछे बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर आगामी वर्ष के लिये पदाधिकारियों और स्थायी समिति के सभासदों का निर्वाचन हुआ। निम्न लिखित सज्जन चुने गये।

---

* विवरण आगामी संख्या में प्रकाशित किया जायगा। अनुमान पत्र पिछली संख्या में ६६ पृष्ठ पर प्रकाशित किया जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति

श्रीयुत् महात्मा मुँशी रामजी

उपसभापति

श्रीयुत पण्डित बालकृष्ण भट्ट, अहियापुर प्रयाग।
श्रीयुत बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०,
हेडमास्टर कालीचरण हाई स्कूल लखनऊ।

प्रधान मंत्री

श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, प्रयाग।

मंत्री

श्रीयुत स्वामी सत्यदेवजी, सत्यग्रंथ माला आफ़िस, प्रयाग।
श्रीयुत पण्डित लक्ष्मीनारायण नागर वकील हाईकोर्ट, प्रयाग।

आय व्यय परीक्षक

श्रीयुत पं० रामजी लाल शर्म्मा, हिन्दी प्रेस कर्नैलगंज प्रयाग।

सभासद—संयुक्त प्रान्त

श्रीयुत पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, दारागंज प्रयाग।
श्रीयुत पं० चन्द्रशेखर ओझा, दारागंज प्रयाग।
,, पं० कृष्णकान्त मालवीय, सम्पादक मर्यादा प्रयाग।
,, बाबू नव्वाब बहादुर, वकील हाईकोर्ट प्रयाग।
,, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, सराय आक़िल प्रयाग।
,, बाबू रामदास गौड़, दारागंज प्रयाग।
,, पं० द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी, दारागंज प्रयाग।
,, पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, जुही कानपुर।
,, पं० महेशदत्त शुक्ल, वकील कानपुर।
,, पं० रामप्रसाद मिश्र, सम्पादक जीवन कानपुर।
,, बाबू मन्नूलाल जी वकील, फतेहपुर।
,, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, नन्दन साहु की गली काशी।
,, पं० शुकदेव बिहारी मिश्र, मुन्सिफ़ सीतापुर।
,, बाबा साहब श्रीमन्त राव मोरेश्वर राव बलवन्त योग, कर्वी-बांदा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत् बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, वकील काशी ।
,, बाबू नारायण प्रसाद अरोड़ा, प्रताप कार्य्यालय कानपुर।
,, बाबू पुत्तन लाल विद्यार्थी बान वाली गली लखनऊ ।
,, पं० रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।
,, पं० महराज मणि त्रिपाठी वकील गोरखपुर ।
,, बाबू भगवान्दास हालना हाथरस ।

बिहार और उड़ीसा

,, पं० रामावतार शर्म्मा एम० ए० संस्कृत प्रोफ़ेसर पटना ।
,, बाबू बृजनन्दन सहाय, वकील आरा ।
,, बाबू मुर्लीधर प्रसाद सराफ़ बी०ए० एल एल बी० भागलपुर।
,, बाबू अवध बिहारी शरण आरा ।
,, बाबू गणेश लाल, नया बाज़ार भागलपुर ।
,, बाबू युगुल किशोर अखौरी बी० ए० एल एल० बी० वकील डालटन गंज पलामू ।
,, बाबू सूर्य प्रसाद महाजन मुरारपुर गया ।
,, बाबू श्रीकृष्ण प्रसाद वकील मुंगेर ।
,, बाबू गिरजाकुमार घोष बिहार बंधु प्रेस बांकीपुर ।
,, पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र वकील दरभंगा ।

मध्य प्रदेश

,, पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय, मैनेजर चन्द्रपुर स्टेट जि० रायपुर।
,, पं० ताराचन्द्र दुबे सिल्क मर्चेन्ट बिलासपुर ।
,, पं० कामता प्रसाद गुरू हितकारिणी हाई स्कूल जबलपुर।
,, पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी बी० ए० हेड मास्टर हितकारिणी हाई स्कूल जबलपुर।
,, सेठ शिवनरायण राठी नागपुर ।
,, पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री बैकुंठपुर वाया पिन्डरा रोड बी० एन० आर।
,, बाबू माणिक्य चन्द जैन वकील खण्डवा ।
,, पं० माधव राव सप्रे नागपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजपूताना–मध्य भारत।

श्रीयुत सेठ दामोदर दास राठी कृष्णमिल्स ब्यावर।
,, पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द्र ओझा क्यूरेटर गवर्मेन्ट म्यूज़ियम अजमेर।
,, पं० चन्द्रधर शर्म्मा गुलेरी जयपुर हाउस अजमेर।
,, अधिकारी जगन्नाथदास विशारद महंत विरक्तमंदिर भरतपुर।
,, पं० श्यामविहारी मिश्र दिवान छत्रपुर।
,, रायबहादुर बाबू लालबिहारीलाल वकील सतना।
,, पं० कृष्णविहारी तिवारी हेडमास्टर डींगर मेमोरियल स्कूल बीकानेर।

बंगाल

,, बाबू राजेन्द्रप्रसाद एम०ए० बी० एल० ८६ हरिश्चंद्र मुकर्जी रोड भवानीपुर कलकत्ता।
,, बाबू हरिकृष्ण जौहर सम्पादक हिन्दी बंगवासी कलकत्ता।
,, पं० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता।
,, बाबू पांच कौड़ी बनर्जी सम्पादक नायक कलकत्ता।
,, पं० नित्यानन्द मिश्र।
,, बाबूराधामोहन गोकुल जी १२ सिकन्दर पाड़ालेन कलकत्ता।
,, बा० दामोदरदास खाण्डेवाल।
,, पं० बैजनाथ चतुर्वेदी भारतमित्र आफ़िस कलकत्ता।

दिल्ली।

,, पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार दिल्ली।
,, लाला लाजपत राय वकील चीफ कोर्ट लाहौर।
,, लाला देवराज कन्या महाविद्यालय जालन्धर।
,, लाला गोपालदास मंत्री हिन्दूसभा लाहौर।
,, महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शास्त्री ओरियन्टल कालेज लाहौर।

बम्बई।

श्रीयुत बा० महावीर प्रसाद।
,, पं० नाथूराम प्रेमी जैन हितैषी कार्य्यालय गिरगांव बंबई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत् पं० जटाशङ्कर लीलाधर द्विवेदी सम्पादक हिन्दी वैद्यकल्पतरु अहमदाबाद।

,, मास्टर आत्माराम स्कूल इन्सपेक्टर बड़ोदा।

मदरास।

,, जी० ए० नटेसन सम्पादक इन्डियन रिव्यू मदरास।

,, स्वामी अनन्ताचार्य्य जी कांजीवरम मदरास।

(२०)

इसके बाद निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ :—

"यह सम्मेलन वर्णविचार उपसमिति को उसकी रिपोर्ट के लिए धन्यवाद देता है और निम्न लिखित महाशयों की एक उप-समिति बनाता है जो देवनागरी वर्णमाला सम्बन्धी अनेक प्रश्नों पर पूर्ण विचार कर आगामी आषाढ़ के पूर्व अपनी रिपोर्ट स्थायी समिति के पास भेज दे और उस पर आगामी सम्मेलन में विचार हो। इस उपसमिति को अधिकार होगा कि वह अपने में आठ तक अन्य महाशयों को सम्मिलित करले और जिनसे आवश्यक तथा उचित समझे उनसे भी सम्मति ले*

पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा

बाबू श्रीशचन्द्र वसु

बाबू श्यामसुन्दर दास

पं० बाबू राव विष्णु पराडकर

बाबू जगमोहन वर्म्मा

पं० शुकदेवबिहारी मिश्र

पं० श्रीकृष्ण जोशी

* पाठकों को स्मरण होगा कि स्थायी समिति के गत मार्ग शीर्ष कृष्ण १० संवत् १९७० के अधिवेशन में सम्मेलन के प्रधान मंत्री के प्रस्ताव पर यह निश्चय हुआ था कि अब से सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों के अवसर पर प्रस्तावों की स्वीकृति आदि साधारण कार्यों के अतिरिक्त विद्वानों की विशिष्ट समितियों द्वारा हिन्दी साहित्य के गूढ़ तथा प्रयोजनीय विषयों पर विचार करके कोई सिद्धान्त स्थिर कराने का प्रयत्न किया जाय। तदनुसार इस बार सम्मेलन को विषय-निर्वाचिनी समिति द्वारा दो उपसमितियां बनायी गयी थीं—एक वर्णमाला सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के लिए और दूसरी राजकार्योपयोगी हिन्दी शब्द निश्चित करने के लिए। इनमें से वर्ण विचार उपसमिति ने अन्तिम दिन अपनी रिपोर्ट उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२१)

इसके बाद स्थायी समिति के मंत्रियों को उनके कार्य के लिये धन्यवाद दिया गया।

(२२)

अनन्तर बाबू श्याम सुन्दर दास ने लखनऊ निवासियों की ओर से सम्मेलन को आगामी वर्ष के लिये लखनऊ में निमंत्रित किया। यह निमंत्रण हर्ष के साथ स्वीकार किया गया।

इसके बाद भागलपुरके वकील बाबू सूर्यप्रसाद ने सभापति तथा आये हुए प्रतिनिधियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि, भागलपुर में सम्मेलन होने से हमारा बड़ा उपकार हुआ है। मैं हिन्दी को कुछ नहीं समझता था। यहांतक कि, जब मेरे पास कोई हिन्दी में लिखा कोई कागज़ लाता था, तब मैं उसकी हिन्दी का उर्दू तर्जुमा करा लाने के लिये कहता था। पर अब मेरी आंखें खुल गयी हैं। अब मैं मातृभाषा का महत्त्व समझने लगा हूं। अन्त में आपने सभापति के आत्मत्याग और देशहितैषिता का उल्लेख किया और अस्वस्थ रहने पर भी भागलपुर आने का कष्ट उठाने के लिये उन्हें धन्यवाद दिया।

बाबू श्यामसुन्दरदास ने लोगों से सभापति की तीन बार जयध्वनि करने को कहा। जयध्वनि से मण्डप गूंज उठा।

की, जिसमें यह सम्मति प्रकट की गई थी कि इस महत्त्व पूर्ण विषय पर बड़े बड़े विद्वानों का मत संग्रह करके कोई सिद्धान्त स्थिर किया जाना चाहिये और सम्मेलन से प्रार्थना की गयी थी कि वह साल भर काम करने के लिए एक उपसमिति बनावे। अतः यह मन्तव्य सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। यह रिपोर्ट पत्रिका की आगामी संख्या में प्रकाशित की जायगी।

दूसरी उपसमिति की सहायता के लिए स्थायी समिति ने न्यायालयों में प्रचलित उर्दू शब्दों की एक सूची बनाकर भेज दी थी। उसपर उपसमिति के सभासदों ने तीन दिन तक विचार करके अनेक उर्दू शब्दों के हिन्दी प्रति शब्द निश्चित किये। किन्तु इतने कम समय में सब शब्दों के प्रतिशब्द निश्चित नहीं किये जा सकते थे। इस उपसमिति का काम निजकी भांति सम्मेलन के समाप्त होने के बाद भी एक दिन भागलपुर में हुआ। कार्य समाप्त न होने से उसके सम्बन्ध में सम्मेलन में कोई प्रस्ताव उपस्थित नहीं हुआ। अब स्थायी समिति के द्वारा यह काम हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सभापति महाशय उठे। आपके उठते ही खूब करतल-ध्वनि हुई। आपने कहा कि, यहां आकर मुझे नया उत्साह मिला है। यदि मैं यहां न आता तो मुझे पश्चात्ताप होता, क्योंकि मातृ-भाषा सेवा से वञ्चित रहता। इस प्रकार की संस्था में आकर बैठने का सौभाग्य मुझे पहले प्राप्त नहीं हुआ था। मैं अन्य सभाओं में बैठा था—पर ऐसी सभा में बैठने का यही पहला अवसर है। जब मैं चला था मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, पर यहां आकर मेरा स्वास्थ्य अच्छा हो गया। मातृभाषा की सेवा करने का मुझ में नया उत्साह आया। यह श्रद्धा की भूमि है। इसकी रेणु में श्रद्धा भरी है इस देवनिर्मित देश में सब काम श्रद्धा से होगा। हमें श्रद्धापूर्वक अपनी मातृभाषा की पूजा करनी चाहिये। हमें श्रद्धांजलि लेकर मातृपूजा करनी चाहिये। लोगों को मातृभाषा की सेवा करने का उत्साह देते हुए आपने स्वागत कारिणीसभा तथा प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन सफलता पूर्वक समाप्त होगया।

रात्रि में प्रतिनिधियों के मनोरञ्जनार्थ "भारत पराजय" नाटक खेला गया।

सम्मेलन के साथ इस वार एक प्रदर्शिनी हुई थी। प्रदर्शिनी तीन कमरों के छोटे से बंगले में सजाई गई थी। यह बंगला सम्मेलन के मण्डप से मिला हुआ था। प्रदर्शिनी बहुत ही छोटी थी और इसमें आई हुई पुस्तकों और सामग्रियों की संख्या अधिक न थी। तब भी इस कार्य को आरम्भ करने के लिये भागलपुर की स्वागतकारिणी सभा धन्यवाद के योग्य है। समस्त संग्रहों में कुछ अलमारियों में हस्तलिखित पुस्तकें ही इस प्रदर्शिनी में विशेष कर देखने के योग्य थीं। यदि ऐसा ही उद्योग प्रतिवर्ष होता रहे तो इससे हिन्दी-साहित्य को बहुत लाभ पहुंचने की आशा है।

हिन्दी संसार।

२१, २२, २३ दिसम्बर १९१३ को गया नागरी प्रचारिणी सभा का वार्षिकोत्सव था। श्रीयुत सत्यदेव जी सम्मेलन की ओर से व्याख्यानार्थ गये थे। 'शिक्षा, और 'हिन्दी का सन्देश, विषयों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुए। थिओसोफ़िकल हाल श्रोताओं से भरा रहता था। नगर के प्रायः सभी प्रतिष्ठित सज्जन व्याख्यान सुनने आते थे स्थानीय सभा की ओर से एक नागरी पाठशाला खुली हुई है। धनाभाव से उसकी दशा बहुत शोचनीय हो गई थी। सत्यदेव जी के अपील करने पर लोगों ने बड़े उत्साह से दान दिया। श्रीयुत परमेश्वर लाल जी बेरिस्टर बांकीपुर ने उत्सव के कार्यों में विशेषरूप से भाग लिया और आगे को सहायता देने की प्रतिज्ञा की। अधिकारियों का निर्वाचन हुआ।

* * *

ज़िला बस्ती में धेनुगवां नाम का एक छोटा सा क़सबा है। वहां श्रीयुत रुद्रनाथ सिंह जी हिन्दीभाषा के भक्त रहते हैं। उनके उद्योग से वहां पर एक हिन्दी हितैषिणी सभा स्थापित हुई है। उसका वार्षिक अधिवेशन माघ कृष्ण १२, १३, १४ ता० २५, २६, २७ जनवरी को हुआ

* * *

हिन्दी हित षियों को यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि अलीगढ़ के मातृभाषा प्रेमियों ने अलीगढ़ में एक ज़िला हिन्दी साहित्य सम्मेलन स्थापित किया है। इसके द्वारा अलीगढ़ ज़िले के ग्राम ग्राम, क़सबे क़सबे में हिन्दी साहित्य का प्रचार किया जायगा। अलीगढ़ वालों का यह उदाहरण अनुकरणीय है। यदि इस प्रकार भारत के प्रत्येक ज़िले में मातृभाषा प्रेमी अपने अपने ज़िला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन स्थापित करलें तो जो कार्य्य पचास वर्षों में होगा वही पांच वर्ष में हो जाय। इस ज़िला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से फालगुण शुक्ल ११ और १२ सं० १९७० रविवार और सोमवार तारीख २२, २३ फरवरी को अलीगढ़ में होगा। साथ ही अलीगढ़ में एक प्रदर्शिनी भी होगी। ऐसे अवसर पर दूर दूर के विद्वान् और हिन्दी हितैषी सज्जनों को इस सम्मेलन में योग देकर हिन्दी-साहित्य सभा अलीगढ़ के कार्य्य कर्ताओं का उत्साह बढ़ाना चाहिये। हम अलीगढ वालों को इस शुभ संकल्प पर बधाई देते हैं।

* * *

अलवर में एक नवयुवक रहते हैं आपका नाम है पं० व्रज-नारायण जी शर्म्मा। आप हिन्दी के अत्यन्त भक्त हैं। आपके उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अलवर में एक हिन्दी साहित्य समिति स्थापित हुई है आशा है कि इसके द्वारा अलवर रियासत में हिन्दी साहित्य की अच्छी सेवा होगी।

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का पांचवा अधिवेशन अगले वर्ष लखनऊ में होगा। लखनऊ के मातृभाषा प्रेमी अभी से काम में डट गये हैं। खूब जोश से तय्यारियां होने लग गई हैं। ८०० रुपया चन्दा भी हो गया है। स्वागतकारिणी समिति संगठित हो गई है। उसके निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुये हैं।

सभापति—श्रीमान् राजा रामपाल सिंह सी. आई. ई. कुर्री सिधौली।

उपसभापति—श्रीमान् राजा इन्द्रविक्रम सिंह इटौंजा।
श्रीयुत् मुन्शी प्रयागनारायण भार्गव राय बहादुर।

मन्त्री—बाबू गोपाल लाल खत्री।

सहकारी मन्त्री—बाबू पुत्तन लाल विद्यार्थी।

उपमंत्री—पं० बाल मकुन्द वाजपेयी।
पं० महेश नाथ शर्म्मा।
पं० बिहारी लाल गुजराती।

कोषाध्यक्ष—बाबू हरनारायण टंडन।

सहकारी कोषाध्यक्ष—बाबू पुरुषोत्तम दास ख़ज़ानची।

प्रधान स्वयं सेवक—पं० राधे लाल त्रिपाठी।

* * *

सब हिन्दी प्रेमियों को यह सूचना दी जाती है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की रजिस्टरी सन् १८६० ई० के २१वें एक्ट के अनुसार ता० ८ जनवरी सन १९१४ ई० को होगई है।

* * *

सब हिन्दी प्रेमियों को यह सूचना दी जाती है कि पण्डित जीवानन्द जी काव्य तीर्थ हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के उपदेशक के पद से अब अलग हो गये हैं। जिस किसी को उनसे पत्र व्यवहार करना हो वह सीधे उक्त पण्डित जी को लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलनपत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित

भाग १ } फालगुन संवत् १९७० { अङ्क ६

सम्मेलन का वार्षिक वृतान्त (१९१२-१३)

जिसे सम्मेलन के सहायक मंत्री ने चतुर्थ सम्मेलन भागलपुर में उपस्थित किया ।

माननीय सभापति महोदय और हिन्दी प्रेमी सज्जनो !

समूह शक्ति की आवश्यकता ।

आप जानते हैं कि सम्मेलन का उद्देश सार्वजनिक है, समस्त भारतवर्ष को एक भाषा के प्रेम सूत्र में बांध लोगों में जातीयता का भाव उत्पन्न कर कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना इसका लक्ष है। इस पवित्र उद्देश की पूर्त्ति के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन हिन्दी-प्रेमियों तथा हिन्दी की उन्नति और प्रचार से सम्बन्ध रखनेवाली सभाओं की शक्तियों का केन्द्र हो। क्योंकि इतना बड़ा देश व्यापी कार्य समूहशक्ति के उपयोग बिना सिद्ध नहीं हो सकता। किन्तु मुझे यह कहते दुःख होता है कि हमारे कितने ही भाइयों ने अभी तक समूहशक्ति की उपयोगिता ठीक तरह से नहीं समझी है। इसी से भिन्न भिन्न स्थानों पर छोटी मोटी सभा समितियों द्वारा हिन्दी के प्रचार और उन्नति का निरन्तर उद्योग होते रहने पर भी अनेक कार्य – जिनकी सिद्ध के लिए समस्त हिन्दी-प्रेमी देशहितैषियों को मिलकर उद्योग करने की आवश्यकता है—अभी तक सफल नहीं हुए हैं। उदाहरण के लिए नोटों पर हिन्दी को स्थान दिलाने का प्रश्न ही ले लीजिये। आप लोगों को विदित है कि सम्मेलन के पिछले अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेशनों में इस विषय के मन्तव्य स्वीकृत हो चुके हैं और गवर्नमेंट से उनके अनुसार प्रार्थना भी की जा चुकी है। तो भी अभी तक गवर्नमेंट ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है, इसका कारण क्या है? मेरी समझ में इसका कारण यही है कि अभी तक गवर्नमेन्ट को इस बात का पक्का विश्वास नहीं हुआ है कि सम्मेलन की यह प्रार्थना कतिपय गिने गिनाये हिन्दी प्रेमियों की प्रार्थना नहीं बल्कि समस्त हिन्दी भाषी प्रजा की प्रार्थना है और इसके स्वीकृत न होने से प्रजा की बहुत बड़ी संख्या को असुविधा तथा कष्ट हो रहा है। गवर्नमेन्ट को ऐसा विश्वास दिलाने के लिए यह आवश्यक था कि प्रत्येक नगर से क्या प्रत्येक गांव से, जहां हिन्दीभाषी लोग रहते हैं, गवर्नमेन्ट की सेवा में इस विषय का प्रार्थनापत्र भेजा जाता। इस कार्य का होना कुछ बहुत कठिन नहीं है, कठिनता यह है कि हम लोगों ने अपने देश और समाज की भलाई से सम्बन्ध रखने वाले बड़े बड़े कार्यों की सिद्धि के लिए, व्यक्तिगत क्षुद्र स्वार्थ तथा अन्य मानसिक विकारों को त्याग एक मन एक प्राण से उद्योग करना अभी नहीं सीखा है। जिस दिन जिस समय हमारी यह त्रुटि दूर हो जायगी उसी दिन उसी समय हमारी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जायगा।

समाज की उपमा शरीर से दी जाती है और उसके नेताओं की मुख से। शरीर के अभावों और आवश्यकताओं को दूसरों पर प्रकट करके उनकी पूर्त्ति का प्रयत्न करना मुखका कर्त्तव्य है। अतएव आप लोगों का, जो हिन्दी भाषी समाज के मुखिया बनकर यहां एकत्र हुए हैं, यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि आप हिन्दी भाषियों की आवश्यकताओं को पूरी कराने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा करलें और जब तक वह पूरी न हो तब तक कदापि उद्योग करने से मुंह न मोड़ें। आप लोग प्रति वर्ष अपनी आवश्यकताएं मन्तव्यों द्वारा प्रकट कर दिया करते हैं और स्थायी समिति पर उनकी पूर्त्ति का भार छोड़कर निश्चिन्त हो जाते हैं। स्थायी समिति में अवश्य ही आप लोगों के द्वारा निर्वाचित ऐसे विद्वान् रखे जाते हैं, जिनसे उद्देश्य की सफलता के निमित्त बहुत कुछ उद्योग करने की आशा की जाती है और वे यथासाध्य उद्योग करते भी हैं। किन्तु आप लोगों को केवल मन्तव्य-स्वीकार तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति के सभासदों का निर्वाचन करके ही यह न समझना चाहिये कि आपका कर्त्तव्य पूरा हो गया। मेरी समझ में सभी हिन्दी प्रेमियों का और विशेषतः आप लोगों का, जो उनके प्रतिनिधि हैं, यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि जब कभी आवश्यकता हो तभी आप स्थायी समिति के उद्योगों में यथा साध्य सहायता दें। हिन्दी साहित्य सम्मेलन किसी की पैत्रिक सम्पत्ति नहीं है। यह हिन्दी प्रेमी मात्र की संस्था है और सब हिन्दी प्रेमियों का उस पर समान अधिकार है।

नयी पुस्तकें।

अब मैं प्रकृत विषय की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूं। आपको स्मरण होगा कि गतवर्ष कलकत्ते में सम्मेलन की स्थायी समिति के द्वितीय वर्ष का कार्य्य विवरण उपस्थित करते समय प्रधान मंत्री ने उपस्थित हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान श्रीमान् पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा पं० रामावतार शर्म्मा के द्वितीय सम्मेलन में पढ़े गये लेखों की ओर आकर्षित किया था, जिस का फल यह हुआ कि १२ सज्जनों ने भिन्न भिन्न विषयों पर पुस्तकें लिख कर आगामी सम्मेलन में उपस्थित करने की प्रतिज्ञा की। मुझे आज आप लोगों के सन्मुख यह निवेदन करते प्रसन्नता होती है कि उन में से दो सज्जनों ने अपनी पुस्तकें तैयार करके भेज दी हैं और शेष पुस्तकों के भी कुछ ही दिनों में आजाने की आशा है। जो पुस्तकें आगयीं हैं उनका ब्योरा इस प्रकार है:—

प्राचीन भारत का इतिहास—लेखक पं० हरिमंगल मिश्र एम.ए.।

भारतीय ज्योतिष—ले० पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी।

इन सज्जनों को इस प्रशंसनीय साहित्य सेवा के लिए मैं अनेक धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि इस वर्ष और भी अधिक सज्जन अपने लिए विषय चुन लेंगे और आगामी सम्मेलन के अवसर पर हम लोगों को अनेक उत्तमोत्तम पुस्तकें देखने में आवेंगी।

इस के अतिरिक्त आप को यह सूचित करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता होती है कि हिन्दी साहित्य की वृद्धि और पुष्टि की ओर देश हितैषी सज्जनों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई जगह हिन्दी के बड़े बड़े उपयोगी ग्रन्थों का प्रणयनकार्य आरम्भ हो गया है। इस प्रशंसनीय उद्योग में सबसे पहिले मैं काशी की नागरी प्रचारिणी सभा का नाम लूंगा। उक्त सभाने हिन्दी शब्दसागर की रचना का जो अत्युत्तम कार्य आरम्भ किया है उससे हिन्दी भाषियों का क्या उपकार होगा इस के कहने की आवश्यकता नहीं। हिन्दी प्रेमी मात्र इस की उपयो-गिता स्वीकार कर चुके हैं। दूसरा उल्लेख योग्य उद्योग मेरठ के वकील बाबू मुख्तार सिंह का है। आपने विज्ञानकल्पतरु नामक एक वृहत् विज्ञानकोश का प्रणयन किया है और उस के प्रकाशन का उद्योग कर रहे हैं। यह ग्रन्थ १३००० पृष्ठों में पूर्ण होगा। तीसरा प्रशंसनीय संकल्प बंगला विश्वकोश के श्रीयुत नगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव महाशय का है आपने बंगला विश्वकोश का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का उद्योग किया है। इस बंगभाषा के वृहतग्रंथ की प्रशंसा बड़े बड़े अंगरेज़ी विद्वानों तक ने की है और निस्सन्देह इसका हिन्दी संस्करण हिन्दी साहित्य में एक अमूल्य रत्न का स्थान ग्रहण करेगा। चौथा उद्योग हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्र भ्राताओं का है। आप लोगों ने हिन्दी का एक अच्छा इतिहास लिख कर जो हिन्दी कीसेवा की है उससे आप समस्त हिन्दी प्रेमियों के धन्यवाद के भागी हैं।

यहां पर मैं हिन्दी की चिरकाल से सेवा करने वाले 'भारत-मित्र' का नाम लेना उचित समझता हूं। भारत मित्र' ने अपना दैनिक संस्करण निकाल हिन्दी संसार के ऊपर से दैनिक पत्र के अभाव का कलङ्क मिटा दिया है और उसके संचालक हमारे धन्य-वाद के भागी हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप लोग इन उद्योगों का उचित स्वागत करेंगे और उनमें सहायता देंगे।

उपदेशकों का कार्य।

आप लोगों को विदित है कि कलकत्ते के अधिवेशन में श्रीयुत सत्यदेवजी ने पंजाब प्रान्त में हिन्दी का प्रचार करने की प्रतिज्ञा की थी। आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि उक्तमहाशय ने अपनी प्रतिज्ञा का प्रशंसनीय रीति से पालन किया है। गत ७ मार्च १९१३ से १० मई १९१३ तक श्रीयुत सत्यदेव जी ने पंजाब प्रान्त में भ्रमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया उनकी सहायता के लिये सम्मेलन के वैतनिक उपदेशक पं० जीवानन्द शर्म्मा काव्यतीर्थ उनके साथ भेजे गये थे और प्रयाग के पं० माधव शुक्ल तथा भिवानी के पं० रामजीवन शर्म्मा ने भी कुछ दिनों तक उन लोगों का साथ दिया। इन सब सज्जनों के उद्योग से इस वार पंजाब प्रान्त के अनेक स्थानों में जो प्रशंसनीय कार्य्य हुआ है। उसका विवरण "पंजाब प्रान्त में हिन्दी का प्रचार" नामी पुस्तिका द्वारा पहिले ही प्रकाशित किया जा चुका है। उसी का सारांश यहां दिया जाता है:—

दिल्ली—(ता० ८ से १३ मार्च १९१३) श्रीयुत सत्यदेवजी का एक व्याख्यान चांदनी चौक में हुआ। लोग बड़े उत्साहित हुये और अनेक महाशयों ने सम्मेलन के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर भी किये।

भिवानी—(१३ से १९ मार्च) यहां ९ व्याख्यान हुए। अन्तिम व्याख्यान के दिन एक नागरी-प्रचारणी सभा स्थापित हुई। वहुत संख्यक सज्जनों ने सम्मेलन के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये, तथा स्थायी कोष के लिए कई महाशयों ने वार्षिक चन्दा देना भी स्वीकार किया। व्याख्यान का सब प्रवन्ध ब्रह्मचर्य्याश्रम-कमेटी की ओर से किया गया था। उक्त कमेटी ने श्रीयुत सत्यदेवजी को मार्ग-व्यय के निमित्त १०) रुपये दिये।

हिसार—(२० मार्च) यहां पर श्रीयुत सत्यदेवजी का एक व्याख्यान हुआ।

गुजरानवाला—(२० से २३ मार्च) यहां पंडित जीवानन्द जी के दो व्याख्यान हुए। दीवान मङ्गलसेनजी ने पंडितजी को व्यय के निमित्त १५) रुपये दिये।

अम्बाला—(२४ से ३१ मार्च) यहां "हिन्दी भाषा का महत्व," "हमारा कर्त्तव्य," "शिक्षा का आदर्श" आदि विषयों पर व्याख्यान हुए। उसी समय स्थानीय ब्राह्मण सभा का वार्षिकोत्सव था। अतः कतिपय सज्जनों के अनुरोध से ब्राह्मण सभा में भी पंडित जीवानन्दजी ने 'ब्राह्मणों के कर्त्तव्य' तथा "हिन्दी शिक्षा" के विषय पर दो व्याख्यान दिये। इन सब व्याख्यानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रभाव अच्छा पड़ा और फल स्वरूप एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने वालों की भी संख्या अच्छी थी।

फ़ीरोज़पुर—(१ से ६ अप्रैल) यहां पांच व्याख्यान हुए और अन्तिम दिन एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई।

मोगा—(७-८ अप्रैल) यहां श्रीयुत सत्यदेवजी का एक व्याख्यान हुआ। कुछ प्रतिज्ञापत्र भी भरे गये।

होशियारपुर—(६ अप्रैल) यहां ५ व्याख्यान हुए।

जालन्धर—(१६ से २५ अप्रैल) कुछ अस्वस्थ होने के कारण श्रीयुत सत्यदेवजी ४-५ दिन होशियारपुर में रहे। ता० १६ अप्रैल को वे जालंधर पहुंचे। यहां ४ व्याख्यान हुए। अन्त में एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई।

लाहौर—(२५ से २८ अप्रैल) यहां पर प्रयाग के पं० माधव शुक्ल श्रीयुत सत्यदेवजी से मिले। नागरीप्रचारिणी सभा, लाहौर का सम्बन्ध हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से हो गया। एक व्याख्यान हुआ और एक नागरी-प्रचारिणी सभा भी स्थापित हुई।

गुजरानवाला—(२६ अप्रैल से ५ मई तक) यहां ५ व्याख्यान हुये। अन्तिम दिन व्याख्यान के अनन्तर एक नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई।

स्यालकोट—(६ से ६ मई) यहां ३ दिन तक व्याख्यान हुये और एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। श्रीयुत सत्यदेवजी के पांव में मोच आजाने के कारण उनको कार्य्य बन्द करना पड़ा और वे रावलपिंडी न जा सके। स्यालकोट की नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री ने सत्यदेवजी को मार्ग व्यय के लिये १४॥) दिये।

पंडित जीवानन्दजी शर्म्मा।

भटिण्डा (१ से ३ अप्रैल) पं० जीवानन्द शर्म्मा पं० रामजीवन लाल को साथ लेकर भटिण्डा पहुंचे। यहां दो व्याख्यान हुए। बहुत से लोगों ने प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये।

माण्टगुमरी—(४ से ८ अप्रैल) यहां चार व्याख्यान हुए। इनका फल यह हुआ कि वहां एक हिन्दी-पाठशाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित हुई और अनेक सज्जनों ने प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये। एक मुसलमान सज्जन ने भी हस्ताक्षर किया और कुछ वार्षिक चन्दा देना स्वीकार किया। गवर्नमेन्ट स्कूल के ५० विद्यार्थियों के अभिभावकों ने उक्त स्कूल के हेडमास्टर के पास आवेदनपत्र भेजा कि हमारे लड़के हिन्दी पढ़ेंगे। एक "युवक सम्मेलन सभा" स्थापित हुई जिसमें हिन्दी-प्रचार के व्रती स्वयं-सेवकगण ही सम्मिलित हो सकते हैं।

मुलतान--(८ से १७ अप्रैल तक) यहां ६ व्याख्यान हुए। यहां प्रतिज्ञापत्र भरे गये और एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। हिन्दूसभा के मंत्री ने हिन्दी के सुलेखक को एक पदक देना स्वीकार किया।

डेरा-इस्माइलखां—(१८ से २० अप्रैल तक)—यहां एक व्याख्यान हुआ और दो "रामायण मंडल" स्थापित हुए। यहां से पश्तो बोली प्रारम्भ होती है। यहां एक पुस्तकालय स्थापित था वह हिन्दी पुस्तकालय बना लिया गया। मार्ग व्यय के लिए ५) मिला।

शाहपुर छावनी—(२० से २२ अप्रेल तक) यहां दो व्याख्यान हुए और कुछ प्रतिज्ञा पत्र भराए गये।

भेरा— २२ से २६ अप्रेल तक) यहां चार व्याख्यान हुए। प्रतिज्ञापत्र भरे गये। दो पाठशालाएं स्थापित हुईं। बहुत सज्जनों ने कृपाराम हाई स्कूल की कमेटी के पास हिन्दी को उक्त स्कूल में अनिवार्य्य बनाने की प्रार्थना की। एक नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। सभा की ओर से पंडितजी को मार्ग व्यय के लिए ५) मिले।

गुजरात—(२६ से २८ अप्रैल तक) यहां पंडितजी गये परन्तु अमृतसरमें अत्यन्त आवश्यक कार्य्य होने के कारण बिना कुछ प्रचार किये ही लौट आना पड़ा।

अमृतसर—(२८ अप्रेल से ६ मई तक) यहां पंडित जीवनन्दजी के तीन व्याख्यान हुए। इसके फल से नागरी-प्रचारिणी सभा की एक मृत नागरी पाठशाला पुनर्जीवित हुई। प्रतिज्ञापत्र भरे गये। व्याख्यान में सिक्खों की अच्छी भीड़ रहती थी। ता० ७ मई को पं० जीवानन्दजी पञ्जाबप्रान्त से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौट आये। ता० १० मई को मुरादाबाद की नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से एक व्याख्यान दिया और वहां से ता० १२ मई को प्रयाग आये।

पञ्जाब में हिन्दी प्रचार का सम्मेलन की ओर से यह पहिला उद्योग था तथापि जैसी सफलता हुई वह ऊपर के विवरण से स्पष्ट है। परन्तु पंजाब में हिन्दी के लिए बहुत कुछ कार्य करना है। मुझे विश्वास है कि इस विवरण को पढ़कर हिन्दी हितैषियों का ध्यान अवश्य ही पञ्जाब में हिन्दी प्रचार की ओर आकर्षित होगा और वे इस कार्य के निमित्त यथाशक्ति सहायता देने को अग्रसर होंगे। इस विशेष कार्य के लिए धामपुर की श्रीमती फूल कुंवारी जी ने १००) और कलकत्ते के पं० बैजनाथ चौबेजी ने ५१) रुपये की सहायता दी थी। इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं।

पंजाब प्रान्त से लौटने पर सम्मेलन के वैतनिक उपदेशक पं० जीवानन्द शर्म्मा विहार प्रान्त भेजे गये। उनके कार्य का व्यौरा इस प्रकार है:—

आरा—(११ जून से १५ जून सन १९१३ तक) यहां पं० जीवानन्दजी विहार की अदालतों में हिन्दी का प्रचार कराने तथा प्रारम्भिक शिक्षा की पुस्तकें कैथी के बदले हिन्दी में छपवाने के निमित्त गवर्नमेन्ट के पास विहार की प्रजा की ओर से प्रार्थना पत्र भेजने के लिये आवश्यक कागज़ पत्र संग्रह करने गये थे। किन्तु लोगों से बात चीत करने पर उन्हें मालूम हुआ कि अदालतों में हिन्दी के प्रचार का प्रश्न उठाना इस समय अनुचित होगा और प्रारम्भिक शिक्षा की पुस्तकों के सम्बन्ध में विहार की कई सभाओं ने उद्योग किया है और इसमें सफलता होने की आशा है। अतः पंडितजी ने कागज़ पत्र का संग्रह करना अनावश्यक समझा।

गया—(१६ जून से २३ जून १९१३)—यहां पं० जीवानंन्दजी के पांच व्याख्यान हुए। लोगों में बहुत उत्साह रहा। अन्तिम दिन बाबू केदारनाथ वकील ने सम्मेलन को ५००) का चन्दा देना स्वीकार किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छपरा—(१४ जून से ४ जुलाई १९१३)—यहां पंडित जी के दो व्याख्यान हुए जिसके फल से एक नागरी प्रचारणी सभा और एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना हुई। पुस्तकालय के लिये ७५०) का चन्दा लिखा गया।

मुज़फ़्फ़रपुर—(५ जुलाई से १४ जुलाई)--खड़ी बोली के प्रसिद्ध आन्दोलन कर्त्ता स्वर्गीय बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री की इस जन्म भूमि में पंडित जी के ६ व्याख्यान हुए जिसका फल यह हुआ कि वहां की हिन्दी "भाषा प्रचारिणी सभा" पुनरुज्जीवित हुई और एक हिन्दी पुस्तकालय स्थापित करने के लिये ७५०) का चन्दा लिखा गया।

समस्तीपुर—(१५ से २० जुलाई तक)—यहां ४ व्याख्यान हुए उपस्थिति बहुत अच्छी रहती थी। अन्तिम दिन श्रोताओं ने हिन्दी पढ़ने तथा अपने काग़ज़ पत्र हिन्दी में रखने की प्रतिज्ञा की।

दरभङ्गा—लहेरिया सराय—(२० से २४ जुलाई तक) यहां पण्डित जी के ५ व्याख्यान हुए। लोगों में बहुत उत्साह था। हिन्दू मुसलमान सभी सभा में आते थे। अन्तिम दिन दरभङ्गा स्कूल के हेड मोलवी ने पण्डित जी की बातों का समर्थन करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के योग्य बताया। यहां के प्रसिद्ध वकील माननीय बा० ब्रजकिशोर प्रसाद एम० ए० बी० एल ने सम्मेलन को २५) रु० चन्दा देना स्वीकार किया।

बांकीपुर—(२५-२६ जुलाई)—महन्त रघुबीर शरणजी ने तार देकर पं० जीवानन्द जी को व्याख्यान देने के लिए बुलाया था। यहां उनके दो व्याख्यान हुए।

बेतिया—(३० जुलाई से ३ अगस्त तक)—बांकीपुर से लौटकर पंडित जी फिर दरभङ्गा पहुंचे किन्तु महाराज बहादुर की अनुपस्थिति के कारण कोई विशेष कार्य न होसका। इसी बीच में बेतिया की संस्कृत पाठशाला में पं० त्रिलोकनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र ने उन्हें बुलाया। यहां पंडित जी ने दो व्याख्यान दिये जिसका फल यह हुआ कि सेठ साहूकारों ने उक्त पाठशाला का मकान बनवाने के लिए ३०००) देना स्वीकार किया।

मुज़फ़्फ़रपुर (दूसरी बार)—(३ से ७ अगस्त)—इसबार यहां बाबू युद्ध विक्रम जीने कानून की किताबें हिन्दी में छपवाने के लिए सम्मेलन को ५००) रु० देने का बचन दिया।

छपरा (दूसरीबार)—(८ से १५ अगस्त) मुज़फ़्फ़रपुर से पं० जीवानन्द जी ८ अगस्त को फिर छपरा आये। किन्तु अधिक वर्षा के कारण एक सप्ताह तक बेकार बैठ रहे।

बांकीपुर—(१५ से २५ अगस्त) बाढ़ के कारण पहले ७ दिनों तक पं० जीवानन्द जी को यहां बेकार बैठे रहना पड़ा। आठवें दिन एक महती सभा हुई जिसमें एक नागरी-प्रचारिणी सभा संगठित हुई।

भागलपुर—(२५ अगस्त से ३ सितम्बर) यहां पंडित जी ने चार व्याख्यान दिये जिसमें सभी जाति, सभी धर्म्म और सभी श्रेणी के लोग उपस्थित रहते थे। पीछे कई दिनों तक स्वागत कारिणी समिति के काम में सहायता देते रहे।

सुलतानगंज—(३ से ६ सितम्बर)—यहां पर पंडित जी के तीन व्याख्यान हुए।

मुङ्गेर—(६ से ११ सितम्बर)—यहां पं० जीवानन्दजी के चार व्याख्यान हुए, जिनके प्रभाव से यहां एक नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। शहर के अनेक प्रतिष्ठित रईस उसकी प्रबन्ध कारिणी समिति में सम्मिलित हुए। यहां से बीच में ता० ८ को हरिश्चन्द्र जयन्ती में सम्मिलित होने के लिए पं० जीवानन्द जी भागलपुर गये।

बेगू सराय -(१२ से १६ सितम्बर) यहां पं० जीवानन्दजी ने चार व्याख्यान दिये। अन्तिम दिन एक हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हुआ।

भागलपुर—१६ सितम्बर को पं० जीवानन्द जी फिर भागलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले आये और स्वागत कारिणी समिति के कार्य में कई दिनों तक सहायता देते रहे।

उसी समय भरतपुर, आगरा तथा लखनऊ की सभाओं के वार्षिकोत्सव होने वाले थे। अतः सम्मेलन के मन्त्री की सम्मति के अनुसार वे उन उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए २६ सितम्बर को भागलपुर से रवाना हुए। उक्त तीनों उत्सवों के कार्य समाप्त करके पण्डित जीवानन्द फिर बिहार को लौटे। किन्तु इस बार वहां उनको कुछ कार्य करने का अवसर न मिला। थोड़े ही दिनों में उन्हें पुनः हाथरस और बुलन्दशहर की नागरी प्रचारिणी सभाओं के उत्सव में सम्मिलित होना पड़ा।

इसके बाद अस्वस्थता के कारण पण्डित जी और अधिक कार्य न कर सके और उन्होंने अपना पद त्याग दिया।

श्रीयुत सत्यदेवजी के सम्बन्ध में यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि उन्होंने सितम्बर और अक्तूबर महीने में फिर राजपूताना प्रान्त के भरतपूर, कोटा, उदयपुर, चित्तौरगढ़ आदि अनेक स्थानों में हिन्दी प्रचार के निमित्त भ्रमण किया और नागरी प्रचारिणी सभाएं स्थापित करायीं।

अदालतों में नागरी प्रचार।

आप लोगों से पहले यह निवेदन किया जा चुका है और इस समय भी मैं इस बात की ओर आपका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करता हूं कि अदालती भाषा का सर्व साधारण की शिक्षा पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हिन्दी की उन्नति के निमित्त अदालतों में हिन्दी प्रचार कराने का यत्न किया जाय। इसी विचार से सम्मेलन की स्थायी समिति आरम्भ से ही बराबर इसके लिए प्रयत्न कर रही है।

आप लोगों को मोलूम है कि पिछले वर्ष आठ स्थानों में सम्मेलन के प्रबन्ध से अदालतों में हिन्दी प्रचार का काम हुआ और ६२८३ काग़ज़ दाख़िल हुए। आपको यह जान कर हर्ष होगा कि इस वर्ष बाँदा, मथुरा, हाटा (तहसील देउरिया)—इन नये स्थानों में सम्मेलन की ओर से अदालती काम हुआ और सब मिलकर इस वर्ष कुल ८६२३ कागज़ दाखिल हुए। इसके अतिरिक्त कोई ४००० छपे फारमों की बिक्री हुई है जिनमें अधिकांश अवश्य ही दाख़िल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए होंगे। इससे आप समझ सकते हैं कि संयुक्त प्रान्त की अदालतों में हिन्दी प्रचार का काम दिन २ बढ़ रहा है।

सम्बद्ध सभायें।

गत वर्ष आप को सूचित किया गया था कि आठ सभाओंने सम्मेलन के तीसरे नियम के अनुसार अपना सम्बन्ध करा लिया है। इस वर्ष जो सभाएं सम्मेलन से सम्बद्ध हुई हैं उन के नाम ये हैं—(१) छात्रोपकारिणी हिन्दी सभा, लहेरिया सराय, (२) ना० प्र० सभा हाथरस; (३) हिन्दी हितैषिणी सभा धेनुगांवा; (४) ना० प्र० सभा लखीमपुर, खीरी; (५) हिन्दीसभा, भागलपुर; (६) हिन्दी प्रचारिणी सभा मुरादाबाद; (७) नागरी प्र० सभा, लाहौर, (८) हिन्दी भाषा प्रचारिणी सभा लहेरिया सराय, दरभङ्गा; (९) हिन्दी साहित्य सभा, चौक, लखनऊ; (१०) विद्याप्रचारिणी सभा, चित्तौर मेवाड़; (११) हि० सा० समिति, कोटा।

किन्तु अभीतक कितनी ही सभाएं ऐसी हैं जिन्होंने अपना सम्बन्ध नहीं कराया है। सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्त्ति की सहायता के लिए मेरी समझ में यह आवश्यक है कि समस्त भारत वर्ष की कोई भी हिन्दी भाषा प्रचार से सम्मन्ध रखने वाली सभा सम्मेलन से असम्बद्ध न रहे। अतएव मैं आशा करता हूं कि जिन सभाओं का अभी तक सम्मेलन से सम्बन्ध नहीं हुआ है वे इस ओर शीघ्र ध्यान देंगी।

सम्मेलन पुस्तकालय।

आप लोग जानते हैं कि सम्मेलन ने अपनी स्थायी समिति को हिन्दी साहित्य की सामायिक अवस्था और उन्नति का विवरण रखने का भार दिया है। और इस कार्य में सहायता के लिए पिछले दो अधिवेशनों में मन्तव्य भी प्रकट हो चुके हैं।

उक्त मन्तव्यों के अनुसार इस वर्ष कुल १७७ पुस्तकें सम्मेलन पुस्तकालय में आयीं हैं जिनका ब्यवरा इस प्रकार है

श्रीयुत	रामलाल वर्मा, कलकत्ता	३९
,,	सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई	२१
,,	पाण्डेय लोचन प्रसाद शर्म्मा ...	८
,,	हिन्दी ट्रैंसलेटिङ्ग कम्पनी, कलकत्ता... ...	८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत जैन मित्र कार्यालय बम्बई ६
,, श्रीमान कुमार छत्रपति सिंह ... ६
,, भारत मित्र प्रेस कलकत्ता ४
श्रीयुत हरिहर दत्तजी ४
,, ठाकुर किशोर सिंह बारहट ४
,, स्वामी सत्यदेवजी ३
,, बाबू० वल्लभदास वर्म्मा ३
ग्रन्थ प्रकाशक समिति, काशी ३
ब्रह्म यन्त्रालय, इटावा ३
श्रीयुत अम्बिका प्रसाद गुप्त काशी ३
लक्ष्मीनारायण यन्त्रालय मुरादा बाद ... ३
श्रीयुत पं० कालूराम शास्त्री ३
,, पं० देवी दत्त शर्म्मा नैनीताल ३
,, मु० देवी प्रसाद कायस्थ २
चित्रशाला प्रेस पूना २
अभ्युदय प्रेस प्रयाग २
श्रीयुत पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए० ... ... २
,, रामनारायण लाल १
,, हर ज्ञान सिंह १
,, पं० राम कर्ण जोधपुर १
,, बाबू राम शर्म्मा अध्यक्ष आर्य पुस्तकालय, इटावा १
,, बाल कृष्ण शर्म्मा १
,, प० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल १
,, पं० विन्देश्वरी प्रसाद तिवारी १
श्रीमती नागरी प्रचारिणी सभा, गोरखपुर १
श्रीयुत पं० भवानी दत्त जोशी बी० ए० ... ... १
,, पं० चंडिका प्रसाद मणि हेड मास्टर काशी ... १
,, श्रीराम सिंह वल्लभ और हरदेव सिंह देव ... १
नवल किशोर प्रेस लखनऊ १
श्रीयुत तेजूमल मुरलीधर, करनल... ... ... १
श्रीयुत महादेव भट्ट १
श्रीमती नागरी प्रचारणी सभा, आरा १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत	पं० देवी दत्त	१
,,	पं शिवनाथ शर्म्मा	१
	जनरल पबलिशिङ्ग कम्पनी मेरठ	१
श्रीयुत	पं० प्रयाग नारायण मिश्र	१
,,	पं० रामकुवेर शर्म्मा	१
,,	मूल चन्द किशनदास कापडिया	१
,,	विनय कुमार सार्कार	१
	जैन हितैषी कार्यालय बम्बई	१
	श्रीजैन तत्व प्रकाशिनी सभा, इटावा	१
श्रीयुत	पं० गोकुल चन्द्र शर्म्मा	१
,,	श्रीराजेन्द्र नाथ मित्र	१
,,	शोभाराम उपनाम छविराम	१
	इन्डियन प्रेस, प्रयाग	१
,,	पं० सन्तराम वेदरत्न	१
,,	श्री अन्नदा प्रसाद भट्टाचार्य, लखनऊ	१
,,	लुणी दारात्मज नारायण वर्म्मा	१
,,	रामकृष्ण शर्म्मा	१
,,	बाबू सांवलदास खन्ना वर्मणः	१
श्रीयुत	पं रामकृष्ण शास्त्री	१
,,	पं० रामनाथ शास्त्री	१
	गृह लक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद	१
	जैन्नोनति कारिणी सभा अजमेर	१
श्रीयुत	पं० भीम सेन शर्म्मा	१
,,	मदन मोहन सेठ	१
,,	ठाकुर राजेन्द्र सिंह	१
,,	ठाकुर विहारीलाल सौदागर	१
,,	राधेलाल अग्रवाल, पीलीभीत	१
श्रीमान	राय साहब आत्मा राम, पटियाला	१
श्रीयुत	पं० श्रीधर पाठक प्रयाग	१
	धार्मिक यंत्रालय प्रयाग	१

इन पुस्तक दाताओं को अनेक धन्यवाद देता हूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त मन्तव्य के अनुसार निम्न लिखित पत्र सम्मेलन कार्यालय में आने लगे हैं--

भारत मित्र	कानपुर गज़ट
श्रीवेंकटेश्वर समाचार	सरस्वती
सद्धर्म प्रचारक	मनोरंजन
बिहार बन्धु	मिथिला मिहिर
जयाजी प्रताप	नारद
गृहलक्ष्मी	शिक्षा
अभ्युदय	बिहारी
मर्यादा	चैतन्य चन्द्रिका
सुधानिधि	गौड़ हितकारी
स्वदेश बान्धव	सनाढ्य
राजपूत	रवानी क्षत्रिय समाचार
भास्कर	जासूस
रसिकमित्र	हिन्दी वैद्यकल्पतरु
भारतोदय	कन्या मनोरंजन
क्षत्रिय समाचार	चित्रमय जगत
जैनहितैषी	नवनीत
आर्यमित्र	औदुम्बर
प्रताप	शारदा
जीवन	

इन पत्रों के स्वामियों और सम्पादकों को मैं धन्यवाद देता हूं और आशा है कि अन्यपत्र संचालकगण भी इनका अनुकरण करेंगे।

सम्मेलन पत्रिका।

हर्ष की बात है कि सम्मेलन की ओर हिन्दी रसिकों का ध्यान दिन दिन अधिकतर आकृष्ट हो रहा है और वे सम्मेलन के कार्यों तथा उसकी स्थायी समिति के विचारों को विस्तृत रूप से जानने के लिये उत्सुक देख पड़ते हैं। समाचार पत्रों में यद्यपि सम्मेलन के कार्यों के विवरण यथा समय भेजे जाते हैं, और वे पूर्ण अथवा संक्षिप्त रूप में प्रकाशित हुआ करते हैं, तथापि इतने से सर्वसाधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रण का प्रबोध नहीं होता। अतः इस अभाव को दूर करने के लिये पंडित श्याम बिहारी मिश्र तथा और भी कई सज्जनों ने सम्मेलन की ओर से एक छोटी सी मुखपत्रिका प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया और स्थायी समिति के गत जेष्ठ कृष्ण ५ संवत १९७० (ता० ५—५—१३) के अधिवेशन में सर्वसम्मति से उक्त प्रस्ताव को कार्य में परिणत करने के लिये एक समिति बनाई जिसके संयोजक बाबू गिरजाकुमार घोष और सभ्य पंडित द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी पं० लक्ष्मीनारायण नागर, पं० रामजीलाल शर्म्मा तथा बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन नियत किये गये।

इन महाशयों के उद्यम से गत विजयादशमी के दिन से सम्मेलन पत्रिका नाम की एक मासिक पत्रिका का प्रकाश होने लगा है। जिसका सम्पादन कार्य बाबू गिरजाकुमार घोष को सौंपा गया है। मैं पहले निवेदन कर चुका हूं कि सम्मेलन के विचारों तथा कार्यों का हिन्दी रसिकों में सर्व व्यापी प्रचार करने के उद्देश्य सेही इस पत्रिका का जन्म हुआ है। इस लिये यह आवश्यक है कि जहां जहां हिन्दी लिखी, पढ़ी अथवा बोली जाती है उन सब स्थानों में इस पत्रिका का प्रचार हो। यद्यपि इस पत्रिका को प्रकाशित हुए अभी थोड़े ही दिन हुये हैं, और इसमें अन्यान्य मासिक पत्रिकाओं की भांति मनोरंजक चित्र अथवा बड़े बड़े लेखों का संग्रह नहीं रहता तो भी मुझे यह देख कर हर्ष होता है, कि इसकी ग्राहक संख्या की दिन दिन आशानुरूप वृद्धि हो रही है। हिन्दी के पत्र पत्रिकाओं की साधारण प्रारम्भिक अवस्था की दृष्टि से सम्मेलन पत्रिका की सामयिक स्थिति बहुत अच्छी है और इसके लिये मैं अपने हिन्दी प्रेमी ग्राहकों को धन्यवाद देता हूं। किन्तु जिस बड़े उद्देश्य के प्रचार के लिये इस पत्रिका का जन्म हुआ है उसकी सफलता के लिये इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि इसका प्रचार समस्त हिन्दी भाषा प्रान्त में हो जाय। यह बात तभी हो सकती है जब आप लोगों में से प्रत्येक सज्जन स्वयं इसको अपनावें तथा और मित्रों से भी इसके ग्राहक बनने का अनुरोध करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयव्यय का व्योरा ।

सम्मेलन कार्यालय में गत २१ दिसम्बर १९१२ से ५ दिसम्बर १९१३ तक जो आय और व्यय हुआ है उसका व्योरा इस प्रकार है ।

आय

११३९-)।।।	पिछले वर्ष की बचत
१३७७।।।≡)।	हिन्दी पैसा फंड
६०)	सभा सम्बन्ध कराने की फ़ीस
६२=)	फार्म वकालतनामा इत्यादि की बिक्री
२३१२≡)।।	स्थाई कोष
४८।-)।।।	व्याज
१६।।)	(नागरी प्रचारिणी सभा काशी की) रिपोर्ट बिक्री
३३९।)।।।	उपदेशकों के लिए सहायता
१८५।।=)।।½	द्वितीय सम्मेलन की स्वागत कारिणी सभा से प्राप्त हुआ
५५४१≡।।½	कुल आय

व्यय

१०।।)	फ़ार्म वकालतनामा इत्यादि
४६९-)।।	कार्यालय ख़र्च
४२२।।≡)	हिन्दी लेखकों का वेतन—
	२०१≡) स्थानीय (१)
	८३।।) हाथरस (२)
	४५) गोरखपुर (३)
	३५) बुलन्दशहर (४)
	४८) मिर्ज़ापुर (५)
	१०) लखीमपुर (६)
	४२२।।≡)
१२६।=)।	छपाई काग़ज़
६०-)।।	स्टाम्प और तार
७४१।≡)।।	उपदेशकों का खर्च
४=)	पुस्तकालय सम्बन्धी ख़र्च
२९।।।-)	सामान
१७।-)	तृतीय सम्मेलन सम्बन्धी ख़र्च
२२।।-)	फुटकर व्यय
२३)	सम्मेलन पत्रिका के व्यय के लिये दिया गया
१९२७)।।।	कुल व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६१४=)|||½	बचत
८४३||≡)||½	इलाहाबाद बैंक चलताखाता
४१।)	सेविंग बैंक
२५२०)	फिक्स डिपाज़िट
१४||-)||	पं० जीवानन्द शर्म्मा के पास
१९४||-)|||	नक़द हाथ में इसमें |||=) की चेक बुक है
३६१४=)|||½	

५५४१≡)\|\|½ कुल जोड़   ५५४१≡)\|\|½ कुल जोड़

इस ब्योरे से स्पष्ट है कि स्थायी कोष और नागरी प्रचारिणी सभा काशी की रक़म को छोड़ कर स्थायी समिति के हाथ में इस समय केवल १२८५।≡)।½ व्यय के निमित्त है। अब अगले वर्ष के व्यय का जो अनुमान पत्र स्थायी समिति ने बनाया है उसे आपके सामने उपस्थित करता हूं* उससे आपको विदित होगा कि स्थायी समिति को ५९३५) रुपये की आवश्यकता होगी। इस कमी को पूरा करना आपही लोगों के हाथ में है। आशा है आप लोग इसकी पूर्ति की ओर अवश्य ध्यान देंगे।

* यह अनुमान पत्र मार्गशीर्षके अङ्क में प्रकाशित किया जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ सम्मेलन (भागलपुर) में नियत की हुई वर्ण-विचार समिति की रिपोर्ट।

श्रीयुत मंत्री, स्थायीसमिति हिंदी साहित्य सम्मेलन भालगपुर।
महाशय,

चतुर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विषय निर्धारिणी समिति के आज्ञानुसार हम लोगों ने हिन्दी वर्णमाला के सम्बन्ध में अनेक प्रश्नों पर विचार किया। हम लोग अपना दृढ़विश्वास प्रगट करते हैं कि इस सम्बन्ध में शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं है। और न हड़बड़ाहट में कोई ऐसी बात ही निश्चित करलेनी चाहिए जिसका प्रभाव हमारे भविष्य साहित्य जीवन पर उलटा पड़े। जहां हम अपनी वर्ण माला को सब प्रकार से अपने कार्य्य के उपयुक्त देखना चाहते हैं वहीं हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस पूर्णता की ओट में हम कहीं उसकी सुगमता, सरलता और मनोहरता को नष्ट न कर बैठें। हमारी वर्णमाला का प्रधान गुण यह है कि इसकी प्रत्येक ध्वनि हमारे सब कामों के लिये अलम् है, और उसके प्रत्येक चिन्ह अर्थात् अक्षर का वही नाम भी है जो उन ध्वानियों का है। इस प्रश्न पर विचार करने के लिये हमें अपनी वर्णमाला की ध्वनि पूर्णता, उच्चारण निश्चितता, सरलता, सुन्दरता और शीघ्र लेखन शक्ति का ध्यान रखना चाहिये।

ध्वनि पूर्णता के सम्बन्ध में दो भिन्न २ विचार हैं। कुछ महाशयों का तो यह कथन है कि हमारी भाषा और बोली के लिये जितनी ध्वानियों की आवश्यकता है उतनी ही ग्रहण की जांय इसके विरुद्ध कुछ महाशय यह कहते हैं कि संसार की जितनी भाषायें हैं उन सब की ध्वनियों के लिये संकेत हों। ये लोग कहते हैं कि इस उद्देश में सफलता प्राप्त करने के लिये कुछ थोड़े से चिन्हों के मान लेने से हमारा काम चल जायगा और हमारी लिपि ऐसी सर्वांग पूर्ण हो जायगी कि उस की समता संसार की कोई दूसरी लिपि न कर सकेगी। प्रथम पक्षवाले कहते हैं कि यह कार्य्य असम्भव है और इस आदर्श को मानने में हम एक बड़े सिद्धान्त को भूलते हैं जो इस बात को स्पष्ट कहता है कि प्रत्येक भाषा की ध्वानियों के लिये उसकी विशेष लिपि ही उपयुक्त है और उसका उच्चारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन संकेतों के आधार पर वे ही ठीक ठीक कर सकते हैं जिनकी वह मातृ भाषा है। हम लोगों में पण्डित शुकदेव बिहारी मिश्र को छोड़ कर अन्य लोग इस सिद्धान्त को मानते और इसी के अनुकूल कार्य्य करना उचित समझते हैं; तथा दूसरे सिद्धान्त के अनुसार कार्य्य करने में शिक्षा प्रचार में बाधा की आशंका करते हैं। मिश्रजी देव नागरी वर्ण माला में नये चिन्हों और संकेतो का समावेश कर उसे यदि संसार की सब भाषाओं की नहीं तो कम से कम समस्त भारतीय भाषाओं की ध्वनियों के उपयुक्त बनाना चाहते हैं। इसके लिये उनके अनुसार केवल दो चिन्हों के बढ़ाने से देवनागरी अक्षर में भारत की प्रचलित समस्त भाषाएं शुद्ध रूप में लिखी जा सकेगीं।

उच्चारण निश्चितता के सम्बन्ध में हम लोगों में कोई मत भेद नहीं है। हम लोग एक मत से इस बात को मानते हैं कि हमारी वर्णमाला में यह प्रधान गुण वर्त्तमान है कि प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण निश्चित है और उस का चिन्ह भी उसी नाम से अँकित है अर्थात् "अ" ध्वनि के लिये जो चिन्ह हमारी वर्णमाला में निर्धारित है वह भी "अ" ही नाम से अँकित है। इस गुण को सदा बनाये रखना ही हमारा सिद्धान्त होना चाहिये इस में किञ्चित् भी फेर फार अनावश्यक, अनुचित और हानिकारक है, क्योंकि, हमारी वर्ण मात्रा की सरलता भी इसी उच्चारण निश्चितता पर निर्भर है।

पांचवां गुण जो हमारी वर्णमाला में होना चाहिये वह शीघ्र लेखन शक्ति है। स्पष्टता और शीघ्र लेखन शक्ति इन दोनों का आपस में विरोध है, जहां एक में पूर्णता है वहां दूसरे का अभाव है। पर समय का प्रभाव इस बात के पक्ष में है कि जहां तक सम्भव हो शीघ्र लेखन शक्ति का सम्पादन किया जाय। हम लोगों के विचार में यह उचित है, पर साथ ही हम स्पष्टता को सर्वथा नाश करके इस गुण के सम्पादन करने के पक्षपाती नहीं है।

इन पांचों बातों को सामने रखकर हम लोग अपना विचार नीचे लिखते हैं। इन विचारों को हम दो भागों में विभक्त करेंगे, एक का सम्बन्ध ध्वनि से और दूसरे का रूप से होगा। पहले ध्वनि के सम्बन्ध में निवेदन किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) स्वर वर्णों में हमारी लिपि में "ॠ" "ऌ" "ॡ" की कोई आवश्यकता नहीं है। ये अक्षर वर्णमाला में से निकाल दिये जांय। कुछ महाशयों की यह सम्मति है कि "ऋ" की भी आवश्यकता नहीं है इस का काम साधारणतया "र" से चल सकता है। इस विषय पर विचार होना चाहिये यद्यपि हम लोगों में से अधिकांश ह्रस्व 'ऋ, को अपनी वर्णमाला में सम्मिलित रखने के पक्षपाती हैं।

(२) "ए" "ऐ" "ओ" "औ" अक्षरों के दो उच्चारण कहीं पूर्ण और कहीं अर्द्ध हमारी भाषा में और विशेष कर उसके पद्य में होते हैं। पण्डित शुकदेव बिहारी मिश्र की यह सम्मति है कि जहां पूर्ण उच्चारण हो वहां तो वर्त्तमान रूप बने रहें, पर जहां आधा उच्चारण हो वहां इन्हीं रूपों में कुछ साधारण परिवर्त्तन करके उच्चारण स्पष्ट कर दिया जाय, जैसे "[illegible]" आदि। हम लोगों की अधिकांश सम्मति इसके विरुद्ध है हम नये चिन्ह नहीं बनाना चाहते जो रूप हैं वही वर्त्तमान रहें। केवल हिन्दी के विद्वान् विचार पूर्वक इन भिन्न २ उच्चारणों के नियम निर्धारित कर दें। बालकों के लिये यह अलम् होगा कि वे इन अक्षरों की साधारण ध्वनियों को जान लें। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले इन नियमों का अध्ययन कर इस सूक्ष्मता को हृदयंगम करें।

(३) हिन्दी में चन्द्र विन्दु और पूर्ण विन्दु के प्रयोग में बड़ा गड़बड़ है इनके लिये नियम निर्धारित होने चाहियें।

(४) हम लोगों के विचार में हिन्दी लिखने में परसवर्ण के नियम का पालन होना अनावश्यक है हमारा उद्देश्य लेखन रीति को सुगम करने का है, केवल जहां दो पञ्चम वर्ण एक साथ आवें वहां अनुस्वार से काम न लियाजाय वर्गों में पञ्चम वर्णों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग हो। इस विचार से "ङ" "ञ" की हमारी वर्णमाला में आवश्यकता नहीं रह जाती पर वर्ग विभाग में उलट फेर करने के हम पक्षपाती नहीं हैं अतएव हमारी सम्मति में इन ध्वनियों के चिन्ह वर्त्तमान रहें पर इनके सम्बन्ध में परसवर्ण के नियम का पालन अनावश्यक हो।

(५) कुछ महाशयों का मत है कि विदेशीय भाषाओं के जो शब्द हमारी हिन्दी में आगये हैं और जिनका प्रयोग साधारणतः होता है वे अपने शुद्ध रूप में लिखे जांय। ऐसा करना मानो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात को स्पष्ट स्वीकार करना है कि हमारी भाषा में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह अन्य भाषा के शब्दों को लेकर उन्हें अपनी टकशाल में ढाल कर अपना बना ले। किसी प्रौढ़ भाषा में यह नहीं देखा जाता है कि वह दूसरी भाषाओं के शब्दों को लेकर उन्हें अपने मुख्य रंग में रंजित न कर लें, हमारी भाषा में यह सामर्थ्य होते हुए भी ये चाहते हैं कि हिन्दी में विदेशीय शब्दों के रूप ज्यों के त्यों बने रहें, वे कभी भी हमारे में न मिल सकें। हम लोग इस विचार के पक्षपाती नहीं, हम अपनी भाषा को पूर्ण सामर्थ्यवती बनाना चाहते हैं अतएव नीचे ऊपर चिन्हों को देकर न हम अपनी वर्णमाला को जटिल बनाना चाहते हैं और न अपनी भाषा की आत्मीय करण शक्ति को नष्ट किया चाहते हैं? हमारी भाषा में तद्भव शब्दों की विशेष संख्या इस शक्ति का प्रमाण है इसे बनाये रखना और इसकी वृद्धि करना हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिये। इस सिद्धान्त के अनुसार हम नीचे ऊपर बिन्दी या और कोई संकेत देने के पक्षपाती नहीं है। यह विषय विचारणीय है।

(६) "ड़" "ढ़" चिन्हों के उच्चारण हमारी भाषा में वर्त्तमान हैं अतएव इन्हें यथा स्थित रखना चाहिये।

अब अपनी वर्णमाला के रूपों पर हम अपने विचार प्रगट करते हैं। यद्यपि हम लोग यह स्वीकार करने के लिये प्रस्तुत हैं कि हमारी वर्णमाला के लिखने का जो ढंग प्रचलित है उसमें आवश्यक से कुछ अधिक समय लग जाता है पर ध्यान रहे कि शीघ्रता के लिये हम उसकी स्पष्टता को नष्ट करने पर उद्यत नहीं हैं। हम उसकी स्पष्टता को स्थिर रखते हुए जहां तक शीघ्रता प्राप्त हो सके उसे मानने के लिये हम लोग तय्यार हैं हमारी सम्मति में अक्षरों के ऊपर जो लकीर खींची जाती हैं लिखने में उसका प्रयोग उठा दिया जाय इस से लगभग तिहाई समय की बचत अवश्य हो जायगी और हमारी समझ में यह अलम् है। इस से अधिक शीघ्रता प्राप्त करने में लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक आशंका है। यदि यह मान लिया जाय तो हम लोग निम्न लिखित अक्षरों के रूप में परिवर्त्तन करने की सम्मति देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षर		परिवर्तित रूप
अ	... ...	अ
ख	... ...	
ध	....	
ण	....	
भ	... ...	

ये विचार हम लोग साधारणतः उपस्थित करते हैं। हम लोगों की सम्मति में यह उचित होगा कि निम्न लिखित महाशयों की एक समिति बनादी जाय जो इन प्रश्नों पर विशेष रूप से विचार कर आगामी आषाढ़ के पूर्व अपनी रिपोर्ट सम्मेलन समिति के पास भेज दे और उसपर आगामी सम्मेलन में विचार हो।

इस समिति को अधिकार हो कि वह अपने में आठ तक अन्य महाशयों को सम्मिलित करके और जिनसे आवश्यक तथा उचित समझे उनसे सम्मति भी ले।

पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा
बा० श्रीश्चन्द्र वसु
बा० श्यामसुन्दरदास
पं० बाबूराव पराड़कर
बा० जगमोहन वर्म्मा
पं० शुकदेव विहारी मिश्र
पं० श्रीकृष्ण जोशी

भवदीय

पांच कौड़ि बंद्योपाध्याय, शुकदेव विहारी मिश्र, बाबूराव विष्णु पराड़कर, श्यामसुन्दर दास। भागलपुर ८ दिसम्बर १९१३

हिन्दी भाषा में विदेशी शब्द।

हिन्दी भाषा संस्कृत की सन्तति है। किन्तु फिर भी संगति के फल से इसमें बिदेशी भाषाओं के शब्द आगये हैं। विशेष कर फारसी और अंग्रेज़ी शब्दों से पूरी तरह से अलग रहना सम्भव नहीं। इन भाषाओं का हिन्दी से ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया है कि बहुत स्थानों पर उन्हीं शब्दों का प्रयोग उचित होता है। हिन्दी ने भी अन्य जीवित भाषाओं के समान बहुत से शब्द और भाषाओं के ऐसे अपना लिए हैं कि उनकी गणना अब ठेठ हिन्दी में की जा सकती है। बहुत से प्रचलित शब्द ऐसे हैं जो बँगला से हिन्दी में आगये हैं। ये शब्द संस्कृत के नहीं हैं, पूरे विदेशी हैं। अंग्रेज़ों के भारतवर्ष में आने के पहले ही से पोर्त्तुगीज़ों ने यहां अड्डा जमाया था। पहिले वे भारत के पश्चिमी किनारों पर गोवा आदि स्थानों में जमे। फिर वाणिज्य विस्तार करते हुए बंगाल में फैले। हुगली के पास पोर्त्तुगीज़ों का एक बहुत बड़ा बन्दर था। उससे भी बड़ा बन्दर समुद्र तट पर चट्टगांव में उन लोगों ने बनाया था। इस प्रकार कई वर्ष तक पोर्त्तुगीज़ संघर्ष से बङ्गभाषा में बहुत से ऐसे शब्द भर गये हैं जो निछक्के पोर्त्तुगीज़ हैं, और उनमें से बहुत से शब्द बंगाल से चल कर धीरे धीरे हिन्दी में आगये हैं ऐसे ही कुछ शब्दों का नमूना हम यहां पर देते हैं—

पोर्त्तुगीज़—	बंगला—	हिन्दी—
Aia	आया,	आया (मेमों की दासी)
Ananaz	आनारस	अनानास
Alcatra	आलकात्रा	अलकतरा
Almario	आलमारी	अलमारी
Alfinite	आलपीन	अलपीन
Couve	कोपी	गोभी
Catatua	काकातुआ	काकातुआ
Çaju	काजू (काजू बादाम)	काजू
Canastra	कानेस्तारा	कनिस्तर
Carambola	कामराङ्गा	कमरख
Cris	किरिच	किरिच
Sagu	सागू	सागूदाना या साबूदाना
Saban	साबान	साबुन
Saia	साया	शाया*

* "आया नाचे शाया पहिरके, नाचे बोतलखाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Arsenico सेके (विष) संखिया
इत्यादि ।†

जो खरबूज़ा हम लोगों के घर घर खाया जाता है, इसको पहिले पहिल बाबर बादशाह ने अपने देश से लेकर आगरे के यमुना तट पर बोया था। सन्तरा, नारंगी, अमरूद, अनानास, इत्यादि बहुतेरे फल, और सूर्यमुखी, गेंदा इत्यादि कई फूल सब परदेशी हैं, और पोर्त्तुगीज़ों ही ने इनको हिन्दुस्तानी बना दिया। चाय, तमाकू, आलू, इत्यादि जो अब बहुतों के प्राणाधार हो रहे हैं सब परदेशी हैं।

हमारी भाषा में ऐसे बहुत से साधारण बोल चाल अथवा वैज्ञानिक विषयों के शब्द हैं जो उन भाषाओं के द्वारा आये हैं जिनके भाषियों से हमारा कभी सम्बन्ध रहा है वा अब है और जो हमारी भाषा में बहुत दिनों के व्यवहार से रलमिल गये हैं। इस प्रकार से सर्वत्र सबही जीवित भाषाओं में नये शब्दों का अन्य भाषाओं से आवश्यकता के अनुसार प्रवेश हुआ करता है। नये विचारों वा पदार्थों के लिये यह प्रायः उपयुक्त होता है कि अन्य भाषाओं के बने बनाए प्रचलित शब्द उच्चारण और ध्वनि में अपनी भाषा के अनुसार बनाये जाकर अपना लिए जायं। ऐसे शब्दों के मिश्रण को रोकना मानो लाठी से पानी हटाना है। ऐसा यत्न अप्राकृतिक होगा और सफल नहीं हो सकता। हमारा तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि अनुपयुक्त शब्दों के व्यवहार से भाषा का रूप और सौन्दर्य नष्ट किया जाय। हमारी भाषा के भण्डार के लिये और नवीन शब्दों की सृष्टि के लिए हमें अधिकतर संस्कृत धातुओं का ही सहारा लेना होगा किन्तु जो अन्य भाषाओं के प्रचलित सरल शब्द उच्चारण और ध्वनि में हमारी भाषा के अनुकूल हैं और हमारी भाषा में चलगये हैं वा नये होते हुए भी हमारी आवश्यकता पूरी करते हैं उन को रखना हमारे विचार में सर्वथा हितकर है। नये शब्दों के अन्य भाषा से लेने वा बनाने में एक और बात का हमें विशेष ध्यान रखना चाहिये अर्थात् यह कि

† यह शब्दावली हमने बँगला साहित्य-परिषद्-पत्रिका से ली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक संभव हो हमारी भाषा के शब्द ऐसे हों जिन्हें बंगला, गुजराती, मराठी इत्यादि भाषाओं के बोलने वाले भी समझ सकें।

प्रचार का कार्य।

हिन्दी प्रचारार्थ मेरा दौरा।

पञ्जाब में हिन्दी प्रचार का काम करने के बाद मुझे कई एक बार मातृभाषा की सेवार्थ भिन्न भिन्न प्रान्तों में जाना पड़ा है। सम्मेलन पत्रिका में उसका समाचार सिलसिलेवार प्रकाश होना आवश्यक है। अतएव मैं २६ सेपटेम्बर १९१३ से लेकर २३ मार्च १९१४ तक का व्यौरा अपने हिन्दी प्रेमी बन्धुओं के सन्मुख धरता हूं।

भरतपुर—(२७ सेप्टेम्बर से ३० सेपटेम्बर तक) भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के वार्षिकोत्सव पर हिन्दी भाषा सम्बन्धी मेरे कई एक व्याख्यान हुए। भरतपुर के हिन्दी हितैषी सज्जनों में से श्रीयुत पंडित जगन्नाथदासजी अधिकारी विशेषरूप से उल्लेख के योग्य हैं। आपके ही उद्योग से इस उत्सव में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। मातृभाषा का मुख उज्ज्वल हुआ, उसकी शुभकीर्ति चारों ओर फैल गई। राज्य अधिकारियों ने यथा शक्ति इस कार्य्य में सहायता दी। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि भरतपुर राज्य में शीघ्र ही हिन्दी का झण्डा फहराने लगे।

कोटा—भरतपुर से चल कर मैं कोटा पहुंचा। यहां भी तीन चार दिन खूब व्याख्यान हुये। हिदी का गौरव समझाया गया। एक हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की गई। इस पवित्र कार्य्य में मुन्शी हीरालालजी जालौरी, पंडित कुन्दन लालजी तथा डाकृर गुरुदत्तजी आर्य्य ने बड़ी सहायता दी। मैं इन महाशयों तथा अन्य प्रेमियों का बड़ा कृतज्ञ हूं।

चित्तौड़—कोटा से मुझे रतलाम जाना था पर वहां से कोई निमंत्रणपत्र न आने के कारण मैं चित्तौड़ चला गया। चित्तौड़ में एक विद्याप्रचारिणी सभा है जो हिन्दी द्वारा शिक्षा का प्रचार कर रही है। इस सभा के उत्साही नव युवकों ने मेरे व्याख्यानों का बहुत अच्छा प्रबंध किया। यहां पहले एक दिन व्याख्यान देकर मैं उदयपुर चला गया। वहां से होकर मैं फिर दुबारा यहां आया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो व्याख्यान 'हिन्दी साहित्य' और 'शिक्षा' पर दिये। इस सभा ने अपना सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलन से करा लिया।

उदयपुर—'विजयदशमी' के अवसर पर मैं उदयपुर में था। यहां लगातार पांच व्याख्यान हुए। सर्वसाधारण का उत्साह दर्शनीय था। खूब प्रचार हुआ। हज़ारों की भीड़ रही। उदयपुर में इतना काम होगा, इतनी आशा मुझे न थी। पर प्रभु की लीला अपरम्पार है। उसकी इच्छा है कि भारत का कल्याण हो। वकील वंशीलालजी तथा श्री-अमृतलालजी ने बड़ी सहायता दी।

अजमेर—अजमेर में केवल दो ही व्याख्यान हुये। अधिक काम न हो सका क्योंकि मुझे 'खेरी' जाना था। अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में मैं राजपूताने से लौट आया। केवल एक महीना ही राजपूताने के अर्पण कर सका पर एक महीने में क्या होता है।

खेरी—अजमेर से कानपुर होकर मैं लखीमपुर खेरी पहुंचा। यहां भी 'शिक्षा' और 'हिन्दी' पर व्याख्यान दिये। ये व्याख्यान आर्य्यसमाज लखीमपुर के वार्षिकोत्सव पर हुए। लखीमपुर की दशा शोचनीय है। यहां हिन्दी भक्तों की कमी है। देश भक्तों का तो अभाव ही समझिये। केवलदो एक सज्जनों के सिवाय अन्य शिक्षित देशबन्धु मातृभूमि की सेवा से उप-राम रहते हैं। ईश्वर करे कि लखीमपुर वालों की यह अकर्मण्यता शीघ्र दूर हो।

हरदोई—लखीमपुर से चलकर घूमता घामता मैं हरदोई गोशाला के वार्षिकोत्सव पर पहुंचा। यह उत्सव गोपाष्टमी के अव-सर पर होता है। यहां के सरस्वती क्लब की ओर से मेरा एक व्याख्यान 'हिन्दी का सन्देश' इस विषय पर हुआ। हरदोई में हिन्दी प्रेमियों की संख्या शीघ्र बढ़ रही है। नवयुवक मातृभाषा से प्रेम करने लगे हैं।

बक्सर—हरदोई से लौटकर मैं कुछ दिन कानपुर रहा। वहां से अपनी 'सत्यग्रन्थमाला' को प्रयाग उठा लाया। इस झंजट में दो सप्ताह लग गये। प्रयाग से चतुर्थ हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-सम्मेलन (भागलपुर) की स्वागत कारिणी सभा के सहायनार्थ भागलपुर गया। वहां मेरे दो सप्ताह लग गये। इसके बाद प्रयाग, कलकत्ता आदि घूम कर मैं गया नागरी प्रचारिणी सभा के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुआ। वहां से चलकर घूमता घामता मैं बक्सर पहुंचा। बक्सर में 'हिन्दी भाषा का महत्व' 'शिक्षा का आदर्श' आदि विषयों पर मेरे व्याख्यान हुए। दूर दूर के गांवों के लोग व्याख्यान सुनने आया करते थे। बक्सर की दशा देखकर चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। नवयुवकों को मातृभाषा की सेवा की लगन लग गई है। नगर के गरायमान्य सभी व्याख्यानों में आते रहे। मुसलमान भी हृदय से सहानुभूति कर बड़ी संख्या में व्याख्यानोंमें सम्मिलित हुए।

मुज़फ़्फ़रपुर—बक्सर से चलकर बांकीपुर पहुंचा। यहां की नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से एक व्याख्यान हाईस्कूल बिल्डिङ्ग में हुआ। मुज़फ़्फ़रवाले बहुत दिनों से बुला रहे थे। वहां पहुंचा। पांच दिन तक व्याख्यान हुए। नगरी प्रचारिणी सभा की नींव दृढ़ हुई। यहां के अच्छे अच्छे धनिकों ने भी धर्मकार्य में भाग लिया। खूब काम हुआ। मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। श्री पुरुषोत्तम नरायण जी नन्दे, श्री जगदीश नरायण जी नन्दे, श्री युद्धविक्रम सिंह जी, श्री वैद्यराय सिंह जी आदि सज्जन नागरी प्रचारिणी सभा मुज़फ़्फ़रपुर के प्राण हैं। इनके द्वारा मुज़फ़्फ़रपुर में बड़ा काम हो रहा है।

धेंनुगवां—मुज़फ़्फरपुर से मैं धेनुगवां नागरी हितैषिणी सभा के वार्षिकोत्सव पर पहुंचा। यहां के राजकुमार रुद्रनाथसिंह जी हिन्दी के अनन्यभक्त है। आपके उद्योग से तीन चार दिन सरयू निकट वर्त्ती ग्रामीण भाइयों को मातृभाषा के सुललित पद्य सुनने में आये। मेरे तीन व्यख्यान हुए। गांवों के लोगों का उत्साह उनका प्रेम, उनका हिन्दी सेवा में पैसा २ दान देना-ये सब ऐसे दृश्य थे कि मैं गद्गद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगया। भावी भारत का चित्र मेरी आंखों के सामने फिरने लगा। दैवी शब्द "भारत का दुःख शीघ्र दूर होगा" मेरे कानों में पड़े।

बितिया—बसन्त पञ्चमी के अवसर पर मैं बितिया पहुंचा। यहां के सेठ हज़ारीमल जी हिन्दी के बड़े भक्त हैं। उन्हीं के उद्योग से यहां मेरे शिक्षा तथा साहित्य सम्बन्धी व्याख्यान हुए। यहां के ईसाई देशबन्धु भी व्याख्यानों में सम्मिलित हुए। हिन्दी का सन्देशा सुनकर लोग बड़े प्रसन्न हुए। खूब भीड़ होती थी। यहां हिन्दी के दो तीन पुस्तकालय हैं। अच्छा काम होरहा है।

मुज़फ़्फ़रपुर—बितिया से लौट कर मैं फिर यहां आया। इस बार मुज़फ्फरपुर नागरी प्रचारिणी सभा का वार्षिकोत्सव था। लोगों का उत्साह देख कर चित्त प्रसन्न हुआ। धर्मशाला का सहन खूब सजाया गया। 'हिन्दी साहित्य' ईश्वर प्राप्ति' 'नागरी प्रचारिणी सभाओं के कर्तव्य' आदि विषयों पर मेरे व्याख्यान हुए। भीड़ बहुत होती थी। अन्त के दिन 'विश्वास घातकता का घोर दण्ड' नामक मेरा नाटक भी खेला गया। उससे सभा को करीब २००) दो सौ रुपये का लाभ हुआ। बहुत सज्जन सम्मेलन पत्रिका के ग्राहक हुये।

अलीगढ़—मुज़फ़्फ़र पुर से चल कर हरदोई आदि स्थानों में घूमता घामता मैं २२ फ़रवरी को अलीगढ़ पहुंचा। यहां ज़िला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन था। श्रीराधाचरणजी गोस्वामी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। पंडित माधव शुक्ल जी प्रयाग से तथा पण्डित सत्यनारायणजी धांधूपुरा आगरा से पधारे थे। अलीगढ़ निवासियों का यह कार्य्य मेरे बड़ा पसन्द आया। यदि प्रत्येक ज़िले में ऐसे साहित्य सम्मेलन हों तो बहुत शीघ्र हिन्दी का प्रचार हो जाय। मेरे चार व्याख्यान हुये। दो उत्सव पर और दो उत्सव के बाद। खूब प्रचार हुआ। अलीगढ़ वालों की सेवा कर मेरा चित्त भरा नहीं, क्योंकि शहर बड़ा है। एक कारण यह भी था कि प्रदर्शिणी होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण लोग बहुत बड़ी संख्या में व्याख्यान सुनने न आ सके। लेकिन तो भी मातृभाषा का सन्देश सुनाया गया।

सत्यदेव परिव्राजक
मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

मिर्ज़ापुर में हिन्दी।

गत बसन्त पञ्चमी के दिन मिर्ज़ापुर में बाबू मिश्रीलाल जी ने एक नया हिन्दी पुस्तकालय स्थापित किया। इस पुस्तकालय को खोलने के लिये उन्होंने प्रयाग से हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पंडित बालकृष्ण भट्ट को निमंत्रित किया था। सम्मेलन के प्रधान मंत्री बाबू पुरुषोत्तमदास भी उत्सव में सम्मिलित हुए थे। इन दोनों सज्जनों के हिन्दी समयोचित व्याख्यान हिन्दी पुस्तकालय के बिषय में हुए। बाबू मिश्री लाल जी को इस प्रशंसनीय कार्य के लिये बधाई है। बाबू महादेव प्रसाद सेठ के विशेष परामर्श से यह काम हुआ है। इससे इन्हें भी धन्यबाद है। काम आरम्भ तो हो गया अब उसको ठीक रीति से चलाने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। मिर्ज़ापुर में यह दूसरा हिन्दी का पुस्तकालय है। पहिला पुस्तकालय जिस का नाम "सरस्वती-भवन" है दो वर्ष हुए बाबू बसन्त लाल अग्रवाल जी की विशेष सहायता और पंडित बदरी नाथ वैद्य के उद्योग से स्थापित हुआ था। वह गङ्गा के तट पर बहुत अच्छे स्थान पर है और उसका कार्य भी अच्छी तरह चल रहा है।

उसी बसन्त पञ्चमी के दिन हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पंडित बदरीनारायण चौधरी के स्थान पर "नागरी प्रचार" के सम्बन्ध में बिचार करने के लिये एक सभा हुई। नगर के मुख्य मुख्य वकील उपस्थित थे। सम्मेलन के प्रधान मंत्री ने अदालतों में नागरी प्रचार की ओर उपस्थित सज्जनों का ध्यान आकर्षित किया। एक सभा स्थापित हुई। बाबू भगवानदास जायसवाल मंत्री नियत हुए। यह निश्चय हुआ कि एक लेखक अदालत के काम के लिये रक्खा जाय।

गत वर्ष बाबू बसन्त लाल अग्रवाल ने दो वर्ष तक २००) वार्षिक सम्मेलन को मिर्ज़ापुर की अदालतों में हिन्दी प्रचार के निमित्त देने का बचन दिया था। बसन्त पञ्चमी के दिन प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मिर्ज़ापुर जाने के अवसर पर बाबू बसन्त लाल जी ने एक वर्ष का चन्दा २००) रुपया दे दिया। उन्हें इस सहायता के लिये धन्यबाद है।

हिन्दी-संसार।

हमें यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि अलीगढ़ में गत २२ और २३ फ़रवरी को ज़िला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन श्रीमान पं० राधाचरण जी गोस्वामी के सभापतित्व में अच्छी सफलता से हुआ। इसमें स्वामी सत्यदेव, पं० सत्यनारायण, पं० केदारनाथ भट्ट, पं० घनश्याम शर्म्मा, पं० माधव प्रसाद शुक्ल आदि सज्जन बाहरसे सम्मिलित हुए थे। सभापति ने एक पाण्डित्य और मर्म पूर्ण व्याख्यान दिया। पं० माधव प्रसाद शुक्ल ने खड़ी बोली के पक्षमें एक वक्तृता दी और पं० सत्यनारायण ने ब्रज भाषाके महत्व पर एक सुन्दर कविता पढ़ी। स्वामी सत्यदेव के ओजस्वी और मनोहर व्याख्यानों का सर्वसाधारण पर अच्छा प्रभाव पड़ा। डाक्टर मनोहर लाल ने प्रारम्भिक शिक्षा के सम्बन्ध में एक बड़ी भाव पूर्ण वक्तृता दी। नागरी प्रचार वाले प्रस्ताव के सम्बंध में आशा की जाती है कि अलीगढ़ वाले अदालतों में काम करने के लिये नागरी का लेखक रखने में विलम्ब नहीं करेंगे। अलीगढ़ गज़ट उर्दू के साथ हिन्दी में भी प्रकाशित किया जाय इसके लिये भी यत्न करना निश्चय हुआ। हम बड़े प्रसन्न होंगे यदि अलीगढ़ के समान अन्य ज़िलों में भी ज़िला सम्मेलन हुआ करे।

* * *

हिन्दी प्रेमियों को यह सुनकर बहुत प्रसन्नता होगी कि अजमेर मारवाड़ा में चीफ़ कमिश्नर साहब की आज्ञा से अदालतों में उर्दू के साथ साथ हिन्दी में भी काम करने की आज्ञा हो गई है।

प्रेषित पत्र।

(अहमदाबाद में हिन्दी)

गत ६ फरवरी १९१४ को गुजरात साहित्य सभा की ओर से अहमदाबाद के प्रेमा भाई हाल में "हिन्दी वैद्यकल्प तरु" के सहकारी सम्पादक पंडित माधव शर्म्मा का "हिन्दी साहित्य" पर एक प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। श्रोताओं की उपस्थिति अच्छी थी। पंडित जी ने प्रथम हिन्दी को अनेक युक्तियों व प्रमाणों से राष्ट्र भाषा सिद्ध किया। साथ ही हिन्दी साहित्य की उत्पत्ति व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान दशा का उत्तमता से दिगदर्शन कराया। अंत में गुजराती साहित्य सेवियों से हिन्दी के साथ सहानुभूति रखकर उसको राष्ट्र भाषा बनाने के देशोपकारी कार्य में सहायता देने की प्रार्थना की।

सभापति का आसन ट्रेनिंग कालेज के वाइस प्रिंसीपल श्रीयुत जयकृष्ण दास प्राण जीवन दास बी. ए. सर्राफ़ ने सुशोभित किया था।

महावीर प्रसाद गौड़, अहमदाबाद।

पंचम हिन्दी-साहित्य सम्मेलन।

निम्न लिखित सज्जनों ने स्वागत कारिणी समिति को सहायता देने का वचन दिया है—

५००) श्रीमान् राजा इन्द्र विक्रम सिंह इटौंजा
१२५) पंडित गणेश विहारी मिश्र
१२१) मेसर्स जगदम्बा नारायण सेट ब्रादर्स
१०१) डाक्टर पुरुषोत्तमदास कक्कड़
१००) ठाकुर जगन्नाथ बक्स सिंह रहवां राय बरेली
३०६) पंडित शिवनाथ शर्म्मा, पंडित राम नाथ शास्त्री गोपाल लाल खत्री बाबू मुरलीधर टंडन, लाला हर प्रसाद उर्फ कोकामल, ला. कुंदनलाल } प्रत्येक ५१)
१००) पं० गोकर्णनाथ मिश्र एम. ए. पं० चन्द्र भाल बाजपेई करदहा } प्रत्येक ५०)
५०) पं० शिवराम जानी, बा० पुत्तन लाल " २५)
८४) बाबू श्यामसुन्दर दास बी. ए., पं० श्यामलाल वैद्य पं० क्षमापति बाजपेई वैद्य, बाबू श्रीगोविन्द जी २१)
६६) पं० राम चन्द्र त्रिपाठी, पं० तारा शंकर मिश्र बी. ए. बाबू रघुनाथ प्रसाद पं० कृष्ण बिहारी मिश्र बी. ए. पं० राम दुलारे बाजपेई, लाला लक्ष्मीनारायण प्रत्येक ११)
९) पं० राधे राव त्रिपाठी
२१) पं० शिव सुन्दर बाजपेई पं० प्रयाग नारायण मिश्र बाबू पुरुषोत्तम दास वर्म्मा प्रत्येक ७)
८०) पं० बाल मुकुन्द बाजपेई, पं० राधे नारायण बैद्य पं० बिहारी लाल गुजराती पं० अनन्तराम बाजपेई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar